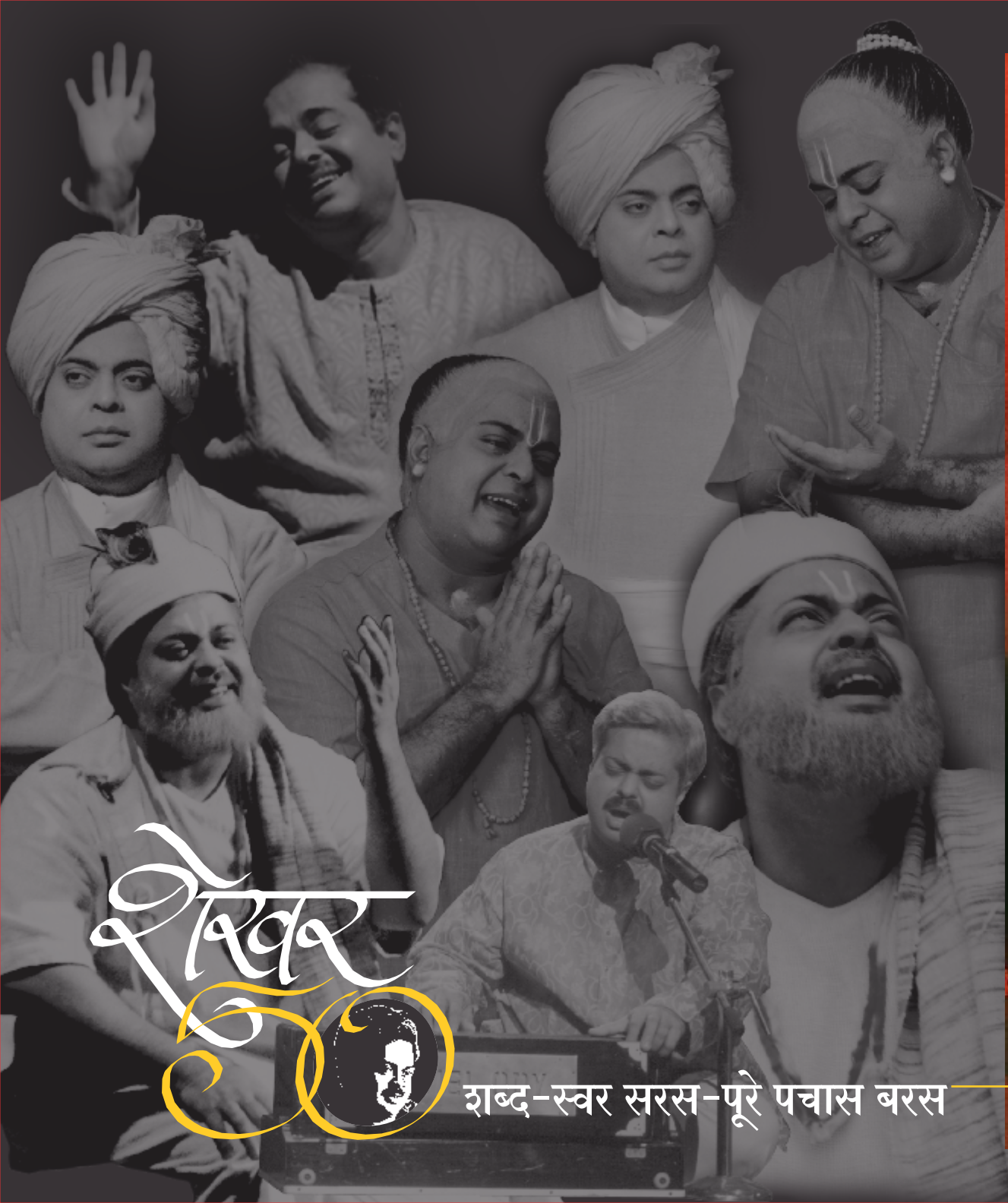

शेखर ७०

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

INDEX

Sant Shri Morari Bapu	10
Swami Adhyatmananda	12
Pt. Ravi Shankar	14
Basant Kumar Birla	
Sarla Birla	16
Lalkrishna Adwani	18
Pushpa Bharti	20
Somnath Chatterjee	24
Dr. Raman Singh	26
Dinesh Trivedi	28
Jyuthika Roy	30
Jagjit Singh	32
Pt. Hariprasad Chaurasia	34
Abid Surti	36
Vishwanath Sachdev	38
Gulzar	40
Shweta Sen	42
Saurabh Sen	46
Rasbihari-Vibha Desai	48
Pt. Shivkumar Sharma	50
Ustad Zakir Hussain	52
Atul Tiwari	54
Rajendra Gupta	56
Tushar Bhatia	58
Dr Chandraprakash Dwivedi	60
Sudheer Selot	62
Anuradha Paudwal	64
Gunwant Madhavlal Vyas	66
Maya Govind	68
Pt. Arvind Parikh	70
Purushottam Upadhyay	72
Pt. Rajan Sajan Mishra	74
Dinesh Thakur	76
Pt. Ajay Pohankar	78
Anup Jalota	80
Pt. Ronu Majumdar	82
Pt. Ajoy Chakrabarty	84
Dr. N. Rajam	86
Nitin Mukesh	88
Kavita Krishnamurti	90
Udit Narayan	92
Roopkumar Rathod	94
Sonu Nigam	96
Sunali Rathod	98
Ila Arun	100
Durgaprasad Mujumdar	102
Surendra Sharma	104
Narhari Patel	106
Devki Pandit	108
Charan Sharma	110
Dr. Pradeep Sen	112
Neelanjana Sen	114
Supratim Sen	116
Manoj Joshi	118
Salim Arif	120
Javed Siddiqui	122
Kamal Kelkar	124
Dr. Satish Vyas	126
Ashok Bindal	128
Girish Pankaj	130
Rajesh Ganodwale	132
Pt. Nayan Ghosh	134
Subhash Kabra	136
Shurjo Bhattacharya	138
Prof. R.C. Mehta	140
Dhanashri Pandit	142
Pt. Abhijit Banerjee	144
Neena-Rajendra Mehta	146
Ashit Desai	148
Ashok Banthia	150
Padmakar Mishra	152
Ankit Trivedi	154
Yagya Sharma	156
Suryabala	157
Sameer Mandol	158
Madhusudan Agrawal	160
Kashiprasad Kheria	162
Indira Walter	164
Sangeeta Shankar	166
Jaswant Singh	168
Supriya Jhunjhunwala	170
Chhaya Ganguli	172
Om Katare	174
Alok Pathak	176
Seema Pathak	178
Mradula Bansal	180
Shobha Deepak Singh	182
Devendra Mantri	184
Harish Nayak	186
Dr. Kinnari Bakshi	188
Dr. Kalind Bakshi	190
Ketki Parikh	192
Reva Sethi	
Bobby Sethi	194
Navgopal Roy	196
Dr. V. Balarama Murty	198
Dr. D.K. Ghosh	200
Kuldeep Singh	202
Ravindra Jain	204
Dr. K. Janaswami	206

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

SHEKHAR SEN

201/1 Wildwood Park, Yari Road
Versova, Mumbai - 400 061 India
Tel : +91 22 26369091, 40169085
e-mail : shekharsen50@gmail.com

Designed & Published by

adraag
www.adraag.com

Published in : 2011

MELODY

बाबा

बाबा के जाने के बाद
बोलने लगा
उनका चश्मा, बाजा,
इंक पेन और कोट

यहाँ तक कि बोलते हुए लगने लगे
उनके जूते, चप्पल भी

पिता के हँसते-मुस्कुराते हुए
और यदा-कदा कठोर चेहरे पर
हम जो कभी न पढ़ सके
उस थकान की एक-एक लकीर
अब साफ़ झलक रही है
फ़्रेम जड़ी उनकी तस्वीर में
अपने मौन में भी
गाते हुए सुनाई देते हैं बाबा

बाबा के होते हुए
सुविधा थी नास्तिक होने की
उनके होते
ईश्वर की प्रार्थना नहीं थी ज़रूरी

माँ

इससे पहले
कि हम संभालते उसे
उसने संभाला हमें

भरकर हमको अपनी बाहों में
कहा था उसने
मेरे होते हुए रोते क्यों हो?

और जो थी पृथ्वी
अब हमारे लिए
वह बन गई आकाश भी

माँ थी तो लोरी थी
शगुन थे, गीत थे,
गाना था, उत्सव थे
मंदिर था, मोक्ष था
माँ के होते हुए मुमकिन था
शहंशाह होना
उसके आँचल से बड़ा
दुनिया का कोई
साम्राज्य नहीं था

आलाप....

शेखर भाई महान क़िरदारों को निभाते हुए कुछ कुछ वैसे ही हो चले हैं। निष्पाप, निश्छल, निर्विकारी और सहृदय। उनकी शख़्सियत में एक संत और दरवेश की ख़ुशबू महकती रहती है। मैं उनके संपर्क में अस्सी के दशक में आया था। पहली मुलाकात में यूँ लगा जैसे ये बड़ा भाई कहीं गया हुआ था; आज बरसों बाद आ मिला है। उनकी ख़ुशमिज़ाज तबियत और किसी काम को पूरे मन से करने का जुनून ही उनकी क़ामयाबी का फ़ॉर्मूला है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था पूरा विश्व एक कुटुंब है, शेखरदा को देखता हूँ तो कहने का जी चाहता है कि पूरे विश्व में इनका कुटुंब है।

निराभिमानी शेखरदा ने अनायास ही उनके पचासवें जन्मदिन पर प्रकाशित होने वाले इस भाव-संचयन का ज़िम्मा मुझे सौंप दिया। मालूम नहीं कैसे उनके मन में यह विश्वास पनपा कि यह काम देश के सर्वाधिक साधन-संपन्न और उनके अपने गृहनगर मुंबई से 500 मील परे इन्दौर में हो सकता है। इस बात का रूहानी राज़ यह हो सकता है कि शेखरदा मुझ जैसे अकिंचन व्यक्ति को इस पुण्य प्रकल्प का श्रेय देना चाहते हों। इस संचयन में मेरा कोई करिश्मा नहीं, सिवाय इसके कि मैंने शेखरदा के आत्मीयजनों के शुभ-भावों को संकलित करने का बहुत छोटा सा काम किया है जो रामजी के सेतुबंध में सहभाग करने वाली गिलहरी से भी लघु है। पर बड़प्पन शायद इसी को कहते हैं। शेखर भाई आपका यह स्नेहसिक्त अनुग्रह जीवन की एक अविस्मरणीय घटना है।

समयबद्ध अनुष्ठान होने से हो सकता है इसमें कुछ त्रुटियाँ आपकी पारखी नज़रों में आए; उसे मेरी विवशता जानकर क्षमा कीजियेगा। गुणीजनों के आत्मीय संदेशों में समाई गंध को आप तक पहुँचाने में मेरी उंगलियाँ भी सुरभित हो उठी हैं। इसे भी शेखर सेन का अर्जित पुण्य ही समझा जाए; प्रार्थना यही।

श्रद्धावनत
संजय पटेल
sanjaypatel1961@gmail.com
097525-26881

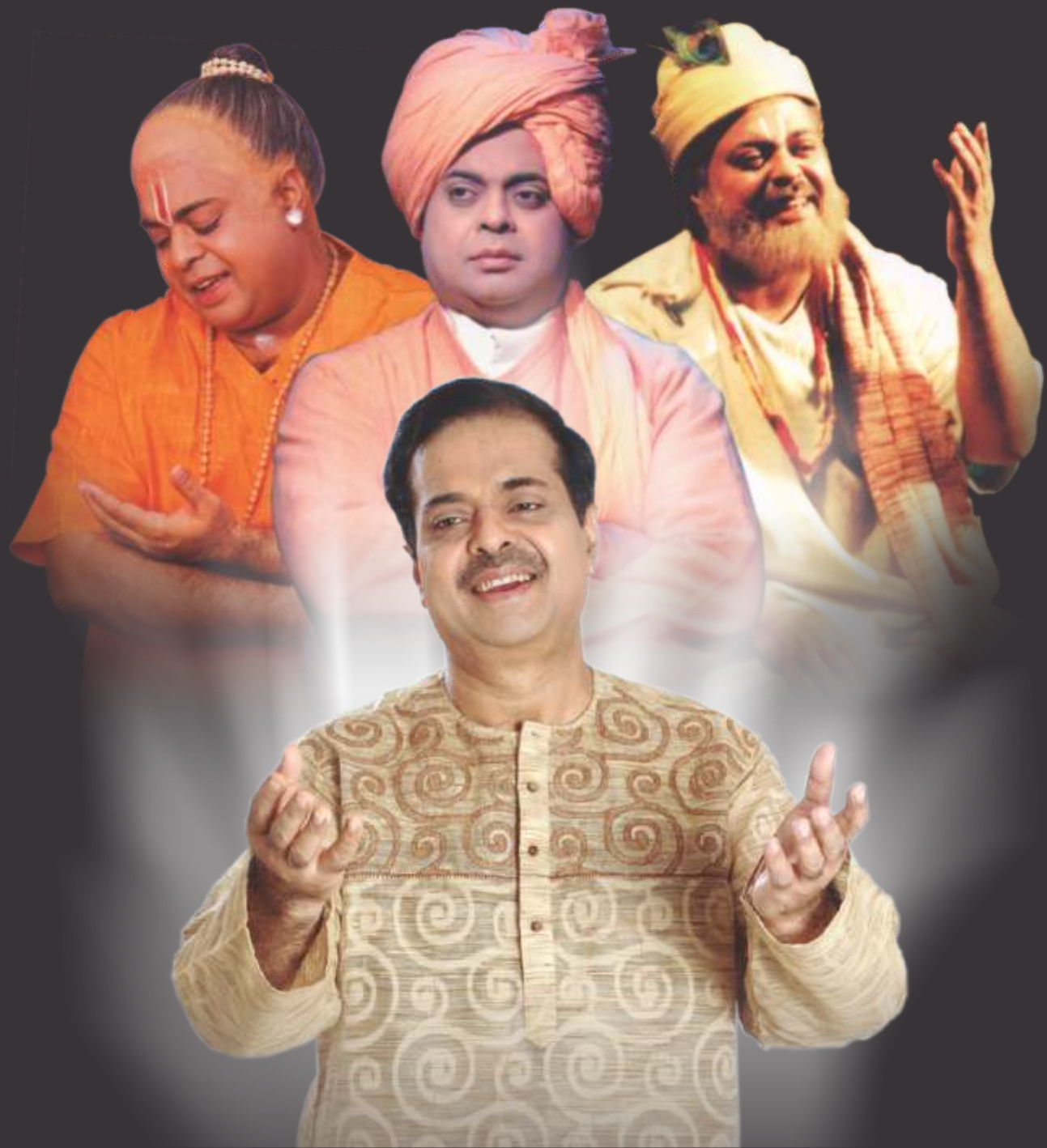

शेखर उवाच....

सबसे पहले अपने माता-पिता और समस्त गुरुजनों के चरणों की वंदना करता हूँ।

पचास की पायदान पर आकर... अभिभूत हूँ इसलिए कि इससे अनंत स्मृतियों के द्वार खुल गए हैं, चिंतित हूँ इसलिए कि इस भाव संचयन के निमित्त मिली एकाधिक महान व्यक्तित्वों की शुभकामनाओं को बांचने के बाद लगता है कि जितना किया है उसके बाद कितना कुछ करना शेष है। आयोजकों, श्रोताओं और दर्शकों के अनंत स्नेह की वर्षा से भीगा यह मन कृतज्ञ है सभी के प्रति।

मित्रों से मिले अपार स्नेह, जीवन के हर उतार-चढ़ाव में पत्नी श्वेता से मिला संबल और पुत्र सौरभ के होने से मिला आनंद जीवन की अमूल्य संपदा है। यदि शेखर सेन सफलता का दायित्व भरा कलश लेकर इस संसार में अडिग खड़ा हुआ है तो उसका श्रेय ऐसी अगणित डोरियों को है जिन्हें न जाने कितने हाथों ने थाम रखा है लेकिन इन हाथों के पीछे छुपे चेहरे सबको नज़र नहीं आते। पर मुझे ये एक-एक चेहरा साफ़ शफ़्फ़ाक़ नज़र आता है। भगवान मेरी आँखों को खुला रखे और पैर ज़मीन पर टिके रहने दे।

मेरे आत्मीय भाई संजय पटेल और उनकी टीम एडराग के मनोज राठौर, सुमंत गोले, एस. अन्सारी और एस.एस. राजपूत को इस संचयन को साकार करने के लिए अशेष आभार। ख्यात चित्रकार श्री समीर मंडल की तूलिका से आवरण पर दमक रहे मेरे चेहरे के लिए उन्हें कोटिशः प्रणाम।

आशीष बनाए रखियेगा... वही अनमोल है।

Sant Shri Morari Bapu

॥ राम ॥

आप अपने जीवन की यात्रा का पचास वर्ष पूरा कर रहे हैं। तब मेरी बहुत ही प्रसन्नता। आपने अपनी विधा और कला के द्वारा ख़ुद आनंद पाकर ख़ुदाई को आनंद वितरित किया है, ऐसा मेरा मानना है और मैं उसका साक्षी भी हूँ।

जब आप अपनी कई प्रकार की विधाओं से मंच पर अपने आपको प्रस्तुत करते हैं तब लगता है कि परकाया प्रवेश हो गया है। वैसे आप 50 साल पूरा कर रहे हैं, आपकी जीवन यात्रा और कला यात्रा बहुत आगे बढ़ेगी और लगता है आप कभी थकित नहीं होओगे क्योंकि मेरा मानना है - कला और विद्या किसी को बूढ़ा नहीं होने देती।

हम सबको लम्बे समय तक आपका लाभ सदैव मिलता रहे ऐसी विनती भी। पुनः एक बार मेरी प्रसन्नता और प्रभु प्रार्थना।

राम सुमिरन के साथ।

पूज्य मोरारी बापू
मानस-मर्मज्ञ एवं राष्ट्रीय संत

Swami Adhyatmananda

।। शतं जीव शरदः ।।

भारतीय संस्कृति और संस्कार का संगम त्रिवेणी के तट पर प्रयाग की पवित्र भूमि पर समय समय पर होता ही रहता है। ऐसे एक पुण्यकाल में जब गंगा और यमुना की धाराएं अपने निम्नस्तरीय पट प्रदेश में आवाहित रही, दिव्य जीवन संघ, शिवानंद आश्रम के दिवंगत परमाध्यक्ष और हमारे पूज्यवर प्रभुस्वरूप श्री गुरुचरणारविंद के शुभाशीष से हमें प्रयाग के महाकुम्भ में शिशिर, हेमंत और बसंत के सायुज्य में कल्पवास करने का सौजन्य उपलब्ध हुआ था।

ढाई दशक व्यतीत हो गये। किंतु आज भी वह दृश्य मेरे नयन पटलों पर ऐसे तादृश हो रहा है कि जैसे यह आज सुबह ही की बात क्यों न हो!

इलाहाबाद में त्रिवेणी के तट पर झूंसी विस्तार में हमारी कुंभ की छावनी में हार्मोनियम लेकर उस भक्त कलाकार का हमारे डेरे में आगमन हुआ था। उनकी एक ही प्रार्थना थी, उन्हे आश्रम के परिसर में भजन गाने दिया जाये।

आजकल प्रातःकाल एक रुपये में संगीत शिक्षा प्राप्त करके सायंकाल दस रुपये में बिक्री करने वाले कलाकारों ... संगीतकारों का बाजार लगाया जा सकता है, तब उन सबसे परे, अलग-थलग एक विनम्र, शीलवान, अल्पवक्ता, सुशील, लज्जा पटावृत से आभूषित और कंठ माधुर्य के धनी आदरणीय श्री शेखर सेन का प्रथम दर्शन ही हृदयंगम था। आप पवित्र चारित्र्य के मालिक हैं। और हैं अनेकानेक सद्गुणों के भण्डार। वर्ष व्यतीत होते रहे। हमारा पत्र व्यवहार से सम्बन्ध बना रहा। जब भी श्री गुरुदेव का मुम्बई में आगमन होता था, केवल एक मात्र फोन करते ही वह दौड़े चले आते थे।

कंठ के माधुर्य की गरिमा से भी गौरवान्वित तो है आपके हस्ताक्षर, भाषा का प्रभुत्व और शुद्ध उच्चारण की विशिष्ट क्षमता। शरीर भले ही बंगाल प्रदेश का हो, किन्तु परवरिश तो मध्यप्रदेश की रही। अपने बुज़ुर्गों से न केवल शालीनता, कुलीनता और ख़ानदानी विरासत पाई, किन्तु संगीत के स्वरों के शृंगार के कलानिधि के भी आप अधिकारी बने।

पहले जानेमाने कलाकार गायक-गायिकाओं के लिये स्वर संयोजन करते रहे, और फिर अपने कंठ से निःसृत भजन और श्री सरस्वती सेवा से सुश्रुत सारस्वत भी बने। जीवन यात्रा का दौर गायन वादन से अग्रसर होकर लेखन तथा एकपात्रीय अभिनय के उच्च स्तरीय सोपानों को सर करता ही चला गया। मुझे व्यक्तिगत रूप से आपके सर्वप्रथम एकपात्रीय मंचन तुलसीदास, कबीर और स्वामी विवेकानंद का रसास्वादन तथा सी.डी. विमोचन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हमारी कर्णावती नगरी (अहमदाबाद) तो अब आपके निवास और कला प्रस्तुतिकरण का एक आयाम ही हो चुका है, किन्तु प्रति वर्ष समुंदर पार निवासित हमारे भारतीय बन्धु-भगिनियों

को हमारी संस्कृति, संस्कार और शील का संदेश पहुँचाने का भगीरथ कार्य आप कर रहे हैं, वह स्तुत्य है।

आपके एकपात्रीय मंचन के अगणित प्रयोग विश्व के सभी भूखण्डों में प्रस्तुत हो चुके हैं, किंतु आपके जीवन-कवन का वैभव आपके एकपात्रीय अभिनय में प्रस्तुत कथावस्तु के माध्यम से ईश्वर शरणागति, राष्ट्र के प्रति निष्ठा आवाज़ तथा सेवा से ही समृद्धि, सरल और निष्कपट निष्पाप जीवन सार्थक्य; विषय प्रमुख रहे।

आज आप अपनी पवित्र जीवन यात्रा के पांच दशक पूरे कर रहे हैं। अर्ध शताब्दी की यात्रा अभी शेष है। शेष जीवन में आपका अभिनय, आपका लेखन कार्य, आपकी आवाज़ का माधुर्य आपको भारत गौरव के महत सिंहासन पर आरूढ़ करे, यही मंगल प्रार्थना।

आपके इस पावन जन्मोत्सव पर आपकी जन्मदात्रि माताजी और आपके दिव्य परिवार के प्रत्येक परिजन के प्रति मूक वंदना। शतं जीव शरदः। शांति

स्वामी अध्यात्मानंद

अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद

'तुलसी' कैसेट के विमोचन के अवसर पर स्वामी श्री अध्यात्मानंदजी, श्री हरिओमशरणजी व नंदिनीशरणजी

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Pt. Ravi Shankar

Dear Shekhar,

Some years ago my mind was blown away when I first saw you in your production of 'Kabeer' in Delhi!

The whole conception of your one-man show with your singing, your compositions, acting, plus all the details was unbelievable!

Shekhar, I admire you as a great creative artist.

With my love & blessing for your 50th birthday.

Bharatratna Pt. Ravi Shankar
Sitar Maestro

Basant Kumar Birla
Sarla Birla

प्रिय शेखरजी,

हमें हर्ष है कि आप 16 फ़रवरी 2011 को अपनी जीवन यात्रा के 50 वर्ष पूर्ण करने जा रहे हैं, उम्र का यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव अवश्य है, परंतु उपलब्धियों की दृष्टि से जितनी सफलता आपने प्राप्त की है वह प्रशंसनीय है और संख्या से कहीं अधिक सार्थक भी।

हमें स्मरण आता है - हमारी संस्था संगीत कला मंदिर में आपने सर्वप्रथम 1996 की जन्माष्टमी के अवसर पर 'भक्ति संगीत' का कार्यक्रम दिया। 'सगुण-निर्गुण' में मध्यकालीन भक्ति पदों और रचनाओं के गायन से श्रोताओं का मंत्रमुग्ध किया। भक्ति संगीत के प्रतिभाशाली युवक के अंतर में अभिनय का अंकुर भी गतिशील था, जिसका हमारे यहाँ प्रथम प्रदर्शन 'तुलसीदास' की संगीतात्मक एकल अभिनय प्रस्तुति में हुआ। आप विलक्षण लगे 'कबीर' की वैसी ही प्रस्तुति से और 'विवेकानंद' के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित करते हुए संतों के भी चहेते बने। साधारण मानव से संतों के हृदय तक की स्नेह यात्रा अनेकों वर्षों में भी पूर्ण नहीं होती, जिसे आपने पाँच दशक के लघु अंतराल में तय कर ली है।

भगवान आपको दीर्घायु प्रदान करे, साहित्य संगीत एवं कला के माध्यम से मानव मन को नीतिज्ञ और निर्मल कर सकने की आपकी योग्यता को अक्षुण्ण बनाए, ऐसी हम दोनों की परमात्मा से प्रार्थना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

बसन्त कुमार बिरला
सरला बिरला
कोलकाता

Lalkrishna Advani

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि 16 फ़रवरी 2011 को श्री शेखर सेन अपने जीवन के 50 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं तथा इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

श्री सेन एक सफल अभिनेता एवं संगीतकार हैं। मुझे उनके एकल नाटक कबीर, तुलसी, स्वामी विवेकानंद एवं साहब देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सभी अति उत्कृष्ट प्रस्तुतियाँ थीं। श्री सेन सचमुच एक असामान्य कलाकार हैं।

मैं श्री सेन को इस सुअवसर पर बधाई देता हूँ एवं उनके दीर्घ एवं सुखमय जीवन हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

लालकृष्ण आडवाणी
पूर्व उप-प्रधानमंत्री और
भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष

Pushpa Bharti

सन् 1953 में मैं प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में एम.ए. की छात्रा थी। पचास साठ लड़कों की क्लास में हम केवल आठ दस लड़कियाँ थीं, जो एक कोने में सिमटी सकुची बैठी रहती थीं। क्लास के बाहर एक बड़ा सा बरामदा था। वहाँ प्रायः प्रतिदिन ही एक पतला दुबला, लम्बा गोरा और अच्छी ख़ासी शक्ल सूरत वाला लड़का मंडराता रहता था। ग़ौर किया गया कि वह हमारे साथ पढ़ने वाली सुधा नाम की एक नाज़ुक सी बहुत ही ख़ूबसूरत लड़की को तांका झाँका करता है। खुसफुसाहटों में सुना कि दुष्यंत कुमार त्यागी नाम के इस लड़के से बच के रहना, बड़ा दिलफैंक है। कोई उसे मजनू कहता कोई शोहदा।

यह भी सुना कि कमलेश्वर, मार्कंडेय और दुष्यंत नाम के दोस्तों की तिकड़ी हमसे एक साल सीनियर है। इनमें से कमलेश्वर नाम का लड़का तो साहित्य जगत में प्रतिष्ठित लाल सलामवाले लोगों के इर्दगिर्द घुसने की कोशिश में लगा रहता है, मार्कंडेय कंधे पर किताबों से भरा झोला लटकाए हाथ में एक न एक साहित्यिक पत्रिका को इस तरह पकड़ कर चलता है कि कवर पृष्ठ पर लिखा नाम लोग पढ़ लें और उससे प्रभावित हों और तीसरा यह दुष्यंत मस्तमौला शायराना तबियत का छोकरा है और हमेशा क्लास बंक करके आवारागर्दी करता रहता है।

बात आई गई हो गई। धीरे-धीरे हम सबने उस छोकरे पर ध्यान देना छोड़ दिया, लेकिन दो तीन बरस बाद ही भारतीजी द्वारा सम्पादित 'निकष' नाम की पत्रिका में उसकी एक कविता पढ़ी, 'सूर्य का स्वागत' तो लगा ही नहीं, ऐसी कविता लिखने वाला व्यक्ति वैसा हो ही नहीं सकता जैसा हमें लगा था। बाद में उसकी और भी कई कविताएँ पढ़ीं और पाया कि चारों ओर व्याप्त निरर्थकता और एक विचित्र से ठहराव को जितनी शिद्दत से दुष्यंत की कविताएँ महसूस करवाती हैं वह मामूली बात नही है। केवल महसूस ही नहीं करवाती उस सबको बदल डालने की पुरज़ोर प्रेरणा भी देती है। 'हो गई है पीर पर्वत सी - पिघलनी चाहिए। इस हिमालय से कोई गंगा निकनी चाहिए।

दुष्यंत को पढ़ना अच्छा लगता था लेकिन 1984 में एक दिन जब कमलेश्वर भाई के निमंत्रण पर हम लोग विलेपार्ले के भाईदास सभागृह में 'दुष्यंत ने कहा था' नाम का एक प्रोग्राम देखने गए तो उस दिन तो एक चमत्कार ही हो गया। दुष्यंत के शब्दों को जब संगीत के सुरों में पिरोया गया तो साहित्य और संगीत की उस नदी में तो मैं ऐसा डूबी कि बिहारी के दोहे के अर्थ पूरी तरह समझ में आ गए।

'तंत्री नाद, कवित्त रस, सरस राग रति रंग।
अनबुड़े बूड़े, तरे, जे बूड़े सब अंग...

और मुझे यों डूबा देने वाला का मझोले क़द का गदबदा सा बड़ी-बड़ी आँखो वाला एक सुदर्शन युवक... शेखर सेन । एक नया और अनजाना नाम, लेकिन उसके कंठ की जादुई कशिश कह रही थी, हाय! अभी तक इसे जाना क्यों नहीं था। ऐसा मीठा कंठ और भावों की ऐसी अद्भुत सम्प्रेषणीयता । बी.ए. तक संगीत को पाठ्यक्रम के एक विषय के रूप में पढ़ा था और जब मित्रों के बीच बात करूँ कि भीमसेन जोशी की अपेक्षा मुझे जसराज का गायन ज़्यादा अच्छा लगता है तो लोग यही कहें कि भले ही संगीत में ग्रेजुएशन किया है पर असल ज्ञान तुम्हें कतई नहीं, पर क्या करूँ मैं, कि ज्ञान की वह कसौटी मुझे स्वीकार ही नहीं रही जहाँ भावना की जगह व्याकरण को ज़्यादा महत्व दिया जाता है, शायद इसीलिए मुझे ज्ञानमार्गी साहित्य में वह नहीं मिलता जो भक्तिमार्गी साहित्य में मिलता है।

उस दिन शेखर दुष्यंत को गा रहे थे... एक के बाद एक भाव लहरी मन को भिगोती जा रही थी और धीरे-धीरे दुष्यंत की कविता बड़ी से बड़ी होती जा रही थी। दुष्यंत की कविता को एक विराट पहचान दे रहे शेखर सेन के सधे हुए मीठे सुर.... और लो जब शेखर ने गाया....

'तू किसी रेल-सी गुज़रती है,
मैं किसी पुल-सा थरथराता हूँ

तब तो मैं अचानक ही एक अतीन्द्रिय लोक में पहुँच गई। शेखर के स्वर पुल से थरथरा रहे थे और दुष्यंत के शब्द ज़िन्दा ज़ुबान बनकर बोल रहे थे और मेरी हृदय की धड़कनें उसी ताल में धड़क रही थी कि मन में कौंध गई भारतीजी की कनुप्रिया की पंक्तियाँ .....

'मंत्र पढ़े बाण से छूट गए तुम तो कनु,
शेष रही मैं केवल, कांपती प्रत्यंचा सी'

और अनजाने में ही मैं प्रत्यंचा सी थरथराती रही....फिर तो सब कुछ शून्य में विलीन हो गया... शेखर शेखर नहीं रह गए थे, स्वयं संगीत बन गए थे, सभागार एक विशाल समंदर में बदल गया था और मैं स्वरलहरियों पर आँखें मूँदे निश्चल पड़ी तैर रही थी.... तैर रही थी.... अनबूड़े बूड़े... तिरे जो बूड़े सब अंग।

समय तो अपनी गति से चलता ही रहता है, ऐसे भावबोध भी उस चक्की में पिस कर केवल एक अहसास मात्र बनकर यादों में सिमट जाते हैं। जीवन सामान्य गति से चल रहा था कि एक दिन भारतीजी ने बताया कि चाय नाश्ते की व्यवस्था कर लेना। घर पर संगीत की एक बैठक रखेंगे, शेखर को बुलाया है। हमारी मित्र मंडली बड़ी रसग्राही और कलाप्रिय रही है। शाम को सब जुटे और जी भरकर शेखर के संगीत का जादुई रसपान किया। उस दिन शेखर ने रहीम का एक छंद भी गाया था और भूषण का एक छप्पय भी गाकर सुनाया था। रहीम को गाना एक प्रशंसनीय प्रयास तो था ही, लेकिन भूषण को भी इस तरह गाकर पेश किया जा सकता है, इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी। शेखर चले गए, सब मित्र चले गए, उत्सव के बाद के अवसाद जैसा ख़ामोश छूट गया हमारा घर। मैं इधर-उधर बिखरे फैलाव को संभालने में लग गई। थोड़ी देर में देखा भारतीजी अपनी स्टडी में रखी किताबों में जहाँ मध्ययुगीन काव्य की पुस्तकें रखी हैं, उस शेल्फ़ के सामने खड़े कभी एक किताब को उठाते हैं, उलटते पलटते हैं, कुछ पढ़ते हैं फिर दूसरी उठा लेते हैं, इसी तरह बड़ी देर तक वे उन्हीं किताबों में उलझे रहे थे।

काफ़ी वक़्त गुज़र गया और एक दिन जब मैंने 14 सितम्बर 1985 तारीख़ को भारतीय विद्या भवन सभागार में शेखर को मध्ययुगीन काव्य की सांगीतिक प्रस्तुति करते देखा तो भारतीजी की उस दिन उन पुस्तकों को खंगालने वाली छवि दिमाग़ में घूमती रही, कहने की आवश्यकता नहीं कि कार्यक्रम अनूठा था उसके बाद तो चारो ओर संगीत और साहित्य के प्रेमियों की ज़ुबान पर एक ही नाम था शेखर सेन।

कुछ समय बाद पता चला कि भारतीजी के अनुरोध पर शेखर ने पाकिस्तान में लिखी जा रही हिंदी कविताओं को गाकर सुनाने का कार्यक्रम बनाया है। भारतीजी का कहना था कि बिलकुल अलग तरह की चीज़ होगी यह, और यदि कार्यक्रम का संचालन सही तरह से किया जाएगा तो ऐतिहासिक महत्व का और बेजोड़ बन जाएगा यह आयोजन। उनकी इच्छा थी कि संचालन मैं करूँ। उन दिनों रंगभवन में सुर सिंगार संसद के बड़े भव्य कार्यक्रम हुआ करते थे, अक्सर उनका संचालन पद्मा सचदेव करती थीं। संचालन का वही मानक मेरे ज़ेहन में था और मुझे लगा कि मैं उतना अच्छा नहीं कर पाऊँगी इसलिए मैंने मना कर दिया। मेरे इनकार पर वे बोले तो कुछ नहीं,पर बड़ी देर तक सूनी सी आँखों से शून्य में देखते रहे, थोड़ी देर टहलते रहते और फिर बोले 'पुष्पाजी, यह लड़का मुझे बहुत अच्छा लगता है। कितना शालीन आभिजात्य है इसके अन्दर। लगता है इसके माता-पिता ने इसे बड़े अच्छे संस्कार दिए हैं। विनम्र इतना कि मन मोह ले और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति इतना सजग कि नैकट्य महसूस होने लगे। संगीत के साथ-साथ साहित्य की भी गहरी समझ रखता है, शब्दों और भावनाओं की बारीकियाँ समझता है। ख़ूब पढ़ता है और पढ़े हुए को मन में धारता चलता है। 'और फिर जाने कैसे से डूबे डूबे स्वर में भारतीजी बोले थे 'आज आपसे एक बात बताऊँ मैंने जब भी अपने पुत्र की कल्पना की - मेरे मन में ऐसे ही बच्चे की चाहत होती थी जैसा शेखर है। काश ! यह मेरा बेटा होता। मैं इसे बहुत आगे बढ़ते देखना चाहता हूँ'।

यह तो मैं जानती थी कि अपने इंजीनियर बेटे किंशुक को वह बहुत प्यार करते हैं लेकिन चूँकि वह अमेरिका जाकर बस गया था और स्वदेश लौटना ही नहीं चाहता था; बचपन से अपने देश को बेइंतिहा प्यार करने वाले भारतीजी को उसके इस निर्णय ने भीतर से उदास कर दिया था। अब शेखर को पुत्रवत मानकर उनका पितृत्व संतुष्टि का अनुभव कर रहा था। शेखर के व्यक्तित्व ने उनके मन के वात्सल्य के कोने को पुत्र मोह से लबालब भर दिया है जानकर उस दिन चुपचाप सारी रात जागकर उन पाकिस्तानी कविताओं की कमेंट्री लिखकर एक सूत्र में बाँध दिया। दूसरे दिन भारतीजी को पढ़कर सुनाया तो उनकी आँखे चमक गईं। वह यह भी समझ गए कि अपने इनकार को मैंने स्वीकृति में क्यों बदल दिया है। बड़े कोमल ढंग से उन्होंने मेरे प्रति कृतज्ञता भी प्रकट की। मैंने कभी किसी से इस घटना का ज़िक्र नहीं किया और अपने मन से मानने लगी कि मेरी संताने तीन नहीं, चार हैं ! आज तक यह बात मैंने किसी को बताई नहीं थी - शेखर को भी नहीं।

मुझे याद है शेखर ने एक बार मुझसे कहा था 'मेरे घर में स्टडी टेबल के पास वाले रैक में आपकी ओर भारतीजी की पुस्तकें रखी हैं। उन किताबों को रखते समय मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मानो मैं आप दोनों का कमरा सजा रहा हूँ। आज तक जब भी उन्हें देखता हूँ मुझे लगता है यह कमरा आप दोनों का है। कभी हमारे साथ रहने आइये, विश्राम कीजिये वहाँ। तब भी मैंने उसे नहीं बताया था कि हमारा उससे जो नेह देह का नाता है वह आत्मिक है जिसमें सांसारिक लेन देन वाला व्यवहार नहीं चलता। तुम्हें केवल लगता ही नहीं, सचमुच वह हमारा ही है। हमारी आत्मा तो वहीं अपने बेटे के घर में बसती है। विश्राम हम वही पाते हैं।

पिछले बरस जून में जब मेरी पचहत्तरवीं वर्षगाँठ को 'चौपाल' में भव्यरूप से मनाने की योजना बन रही थी, तो मैंने विनम्रतापूर्वक अपनी असहमति व्यक्त करते हुए कहा था 'मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो मुझे इतने बड़े सम्मान का हक़दार बना दे। मैं क़तई इस योग्य नहीं हूँ। ' तो शेखर ने कहा था' आप हमारी माँ हैं और माँ की अकेडमिक क्वालिफ़िकेशन के सर्टिफिकेट नहीं देखे जाते। 'मेरी आँखे छलछला आईं थीं किन्तु उस दिन भी मैंने उसे नहीं बताया था कि कोख में धारण किये पुत्र किंशुक ने अपने जन्मदाता के वात्सल्य और माँ की ममता को वह तृप्ति कभी नहीं दी जो तुमने अपने अनजाने में ही दे दी है। और तुम्हारे इस देय को कोई सर्टिफ़िकेट देने की न मेरी हैसियत है, ना हिम्मत।

अभी कुछ ही दिन पहले शेखर ने फ़ोन पर बताया कि उसके पास हमारा एक चित्र है जिसमें शेखर का पुत्र सौरभ मेरी गोद में है और भारतीजी उसका अन्नप्राशन कर रहे हैं। शेखर का कहना था कि मैं जिस भावना के साथ सौरभ को देख रही हूँ वह भावमुद्रा देखते ही बनती है। तब भी मैंने शेखर को नहीं बताया कि वह मुद्रा कोई ओढ़ी हुई मुद्रा नहीं है, वह तो नितांत स्वाभाविक और सहज मुद्रा हैं। दादी अपने पौत्र को जिस दृष्टि से देखेगी उसमें ममता की पराकाष्ठा तो होगी ही।

कैसी बड़भागी हूँ मैं कि केवल बेटा ही नहीं, बहू भी हमें मनचाही मिली है। श्वेता जैसी आदर्श और सुयोग्य पुत्रवधु पाकर ऐसा लगता है कि लोक-परलोक संभल गए।

16 फ़रवरी 2011 को मेरा यह पुत्र पचास बरस का हो गया है। उस पचास को पचास से गुणा कर लीजिये। ईश्वर करे उस संख्या से भी पचास गुनी ज़्यादा उम्र हो शेखर के यश और कीर्ति की। उसके सारे सपने पूरे हों। मेरे आशीर्वाद हमेशा उसके साथ हैं।

पुष्पा भारती
विख्यात लेखिका

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Somnath Chatterjee

Dear Shekhar Ji,

Please accept my heartiest greetings on your 50th Birthday. Wish you many many happy returns of the Day.

Your contribution to the development of our Art and Culture is immense and the country expects further enrichment by you for many more years to come.

Somnath Chatterjee
Former Speaker, Loksabha

Dr. Raman Singh

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि छत्तीसगढ़ की माटी के सपूत श्री शेखर सेन 16 फ़रवरी 2011 को अपनी जीवन यात्रा के 50 वर्ष पूरे कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ को कला और संगीत के संस्कार प्रदान करने में सेन परिवार का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। श्री शेखर सेन की मैं इस बात के लिए सराहना करता हूँ कि उन्होंने संस्कारों में, धरोहर में मिली कला प्रतिभा को काफ़ी कठिन परिश्रम और लगन से निखारा है। नए प्रयोगों और स्वयं प्रदर्शन के लिए प्रस्तुत रहने की उनकी तत्परता से अपने समर्पण को सार्थक बनाया है। कला जगत में स्वयं का अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है साथ ही छत्तीसगढ़ को भी गौरवान्वित किया है।

इस अवसर पर स्नेहीजनों द्वारा प्रकाशित की जा रही स्मारिका अपने उद्देश्यों में सफल हो। श्री सेन अपनी कला यात्रा में नए शिखरों पर पहुँचे, इसके लिए मेरी शुभकामनाएँ तथा 50वीं सालगिरह की बधाइयाँ।

डॉ. रमनसिंह
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

Dinesh Trivedi

I have had the privilege to know Shri Shekhar Sen for quite a few years now and my public life has given me a lot of opportunities to meet up with many eminent personalities in various fields including the world of art and creativity. I can truly say that Shri Shekhar Sen is that jewel in the crown which shines out with his entire persona. As a matter of fact while I am writing this I cannot think of an appropriate adjective that would really describe Shri Shekhar Sen.

He is one of the very few artistes who merges himself totally with the character he depicts through plays, whether it is Sant Tulsidas, Kabir or Swami Vivekanand. When one watches Shri Sen portray these great personalities, one looses the sense of time and space and feels transported into their era! For one artiste to do all this right from singing to dialogue to acting, needs God gifted inborn talent and dedication.

Shri Shekhar Sen's plays are a great source of inspiration, especially for the younger generation. Above all, he is a great human being.

On this joyous occasion of his 50th birthday, I wish him many many more such years in the service of humanity.

God bless.

Dinesh Trivedi
Minister of State for Health & Family Welfare
Government of India

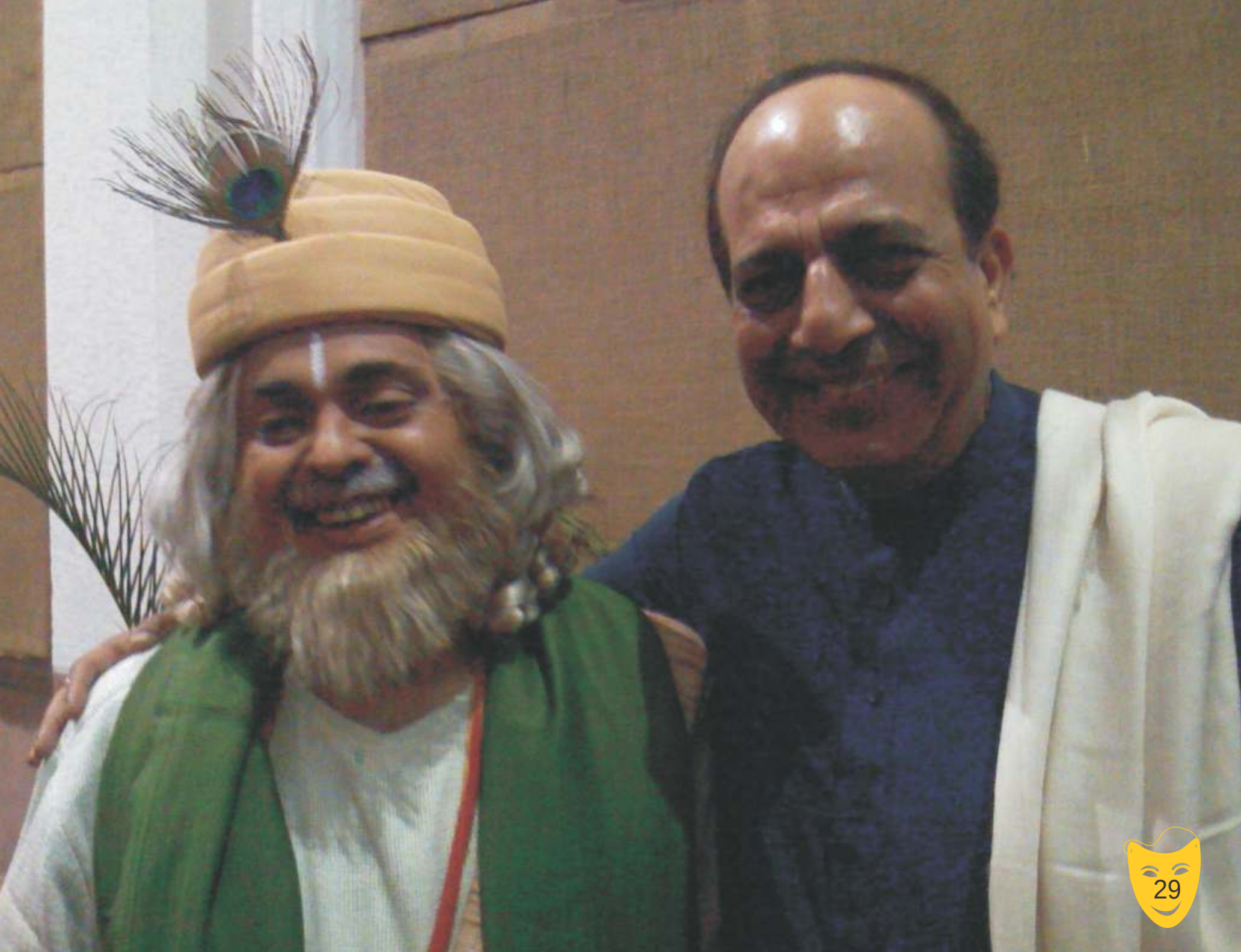

Jyuthika Roy

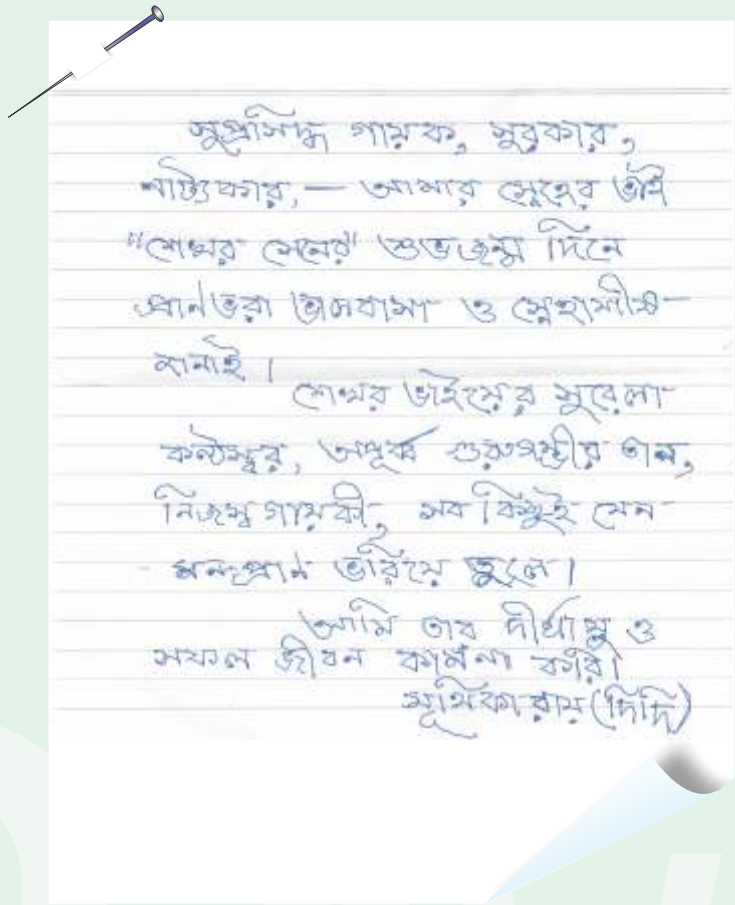

সুপ্রসিদ্ধ গায়ক, সুরকার,
নাট্যকার, — আমার স্নেহের ভাই
"শেখর সেনের" শুভজন্ম দিনে
প্রাণভরা ভালবাসা ও স্নেহাশীষ—
জানাই।
শেখর ভাইয়ের সুরেলা
কন্ঠস্বর, অপূর্ব গুরুগম্ভীর তান,
নিজস্ব গায়কী, সব কিছুই যেন
মনপ্রাণ ভরিয়ে তুলে।
আমি তার দীর্ঘায়ু ও
সফল জীবন কামনা করি।
যূথিকা রায় (দিদি)

आधुनिक मीरा और भक्ति संगीत शिरोमणी **विदूषी जुथिका रॉयजी** ने अत्यंत कृपापूर्वक अपना आशीर्वाद हाथों से लिखकर भेजा है। नब्बे पार की जुथिका दीदी का यह अनमोल पत्र इस संचयन का अमूल्य दस्तावेज़ है। अत: इसे जस का तस प्रकाशित कर यहाँ अनुवाद दे रहे हैं।

''सुप्रसिद्ध गायक, संगीतकार व नाट्यकार मेरे स्नेही भाई शेखर सेन के शुभ जन्मदिन पर सहृदय प्रेम और स्नेहाशीष। शेखर भाई का सुरीला कंठ, अपूर्व गुरुगम्भीर तान और अपनी निजस्व गायकी, सब कुछ मानो मन प्राण को भाव विभोर कर देता है मैं उनकी दीर्घायु व सफल जीवन की कामना करती हूँ।''

Ananda Sen
6.9.96

Jagjit Singh

My dear Shekhar Babu,

Many-many happy returns of the day. You will be 50 years young on Feb. 16th and hope to see you jumping on the stage for next fifty years. God bless you. Keep on doing the work which you are doing. Keep the same focus.

May God give you more talent and more knowledge.

Jagjit Singh
Renowned Ghazal Singer

शहंशाह-ए-ग़ज़ल जगजीतसिंह के साथ (रायपुर)

चौपाल पर ग़ज़ल की बात : शेखर-श्वेता और श्री दिनेश ठाकुर

Pt. Hariprasad Chaurasia

विश्वास ही नहीं हो रहा है कि आप 50 वर्ष के हो रहे हैं, आप मुझे एहसास करवा रहे हैं कि मैं कितने वर्ष का हो गया।

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मैंने आपको रायपुर में काफ़ी छोटी उम्र में देखा है, फिर मुंबई के आपके जीवन यात्रा के क्रमिक विकास का भी मैं साक्षी रहा हूँ, संगीत निर्देशक के रूप में, फिर टी सिरीज़ के लिए आपने मेरे एक शास्त्रीय वादन के अल्बम की रिकॉर्डिंग करवाई थी... संगीत व संस्कृति के प्रति गंभीरता, चिंतन व निष्ठा ने मुझे सदैव प्रभावित किया है।

विषयों पर आपकी गहरी पैठ व संगीत की बारीकियों को बख़ूबी समझने की क्षमता, मुझे लगता है आपको अपनी गुणी माँ डॉ. श्रीमती अनीता सेन जी से घुट्टी में मिली है, पर इस बात ने मुझे सदा सुखद आश्चर्य से भर दिया है आप न केवल अच्छे संगीतज्ञ हैं बल्कि न जाने कितनी और प्रतिभाएँ आपके अन्दर छुपी हैं।

एकपात्रीय नाटक कबीर की प्रस्तुति में आपको एक संपूर्ण अभिनेता व गायक के रूप में देखकर तो मैं भावविभोर हो गया था, मुझे अनुमान है सारे संसार में आपकी प्रतिभा को कितना प्रतिसाद मिला होगा, जिस तरह आप मंच पर चरित्र को जीते हैं, और दर्शकों तक जिस आसानी से भाव सम्प्रेषण होता है वो आप पर 'उसकी' असीम कृपा ही है।

आज के युग में जहाँ झटपट लोकप्रियता की होड़ है, रातों रात रियलिटी शो के सितारे बनने की दौड़ है और शोर-शराबे का बोलबाला है ऐसे माहौल में आपकी विलक्षण प्रस्तुतियाँ, जिस तरह एक सम्पूर्ण आनंद से मन को आह्लादित करती है, वो अनुभूति शब्दों के परे है।

जिस तरह आपको लोगों का स्नेह, आशीर्वाद मिल रहा है, उसको पाने के लिए आप सही अर्थों में सुपात्र हैं... मैं और मेरा परिवार आपके प्रशंसक हैं और प्रति वर्ष हमारे वृन्दावन गुरुकुल में जन्माष्टमी के अवसर पर आपके भजनों को सुनने के लिए लालायित भी रहते हैं।

ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि आपको अच्छी सेहत दे, दीर्घायु दे, आनंद दे और आप इसी तरह अपनी सांगीतिक यात्रा में अपनी अप्रतिम प्रतिभाओं से नयी ऊँचाइयाँ, नयी मंज़िलें पायें और नित नए कीर्तिमान स्थापित करें... और हाँ पचासवें जन्मदिवस पर आपको मेरा ढेर सारा आशीर्वाद।

स्वरसिक्त शुभकामनाओं के साथ।

पं. हरिप्रसाद चौरसिया
विश्वप्रसिद्ध बाँसुरी वादक

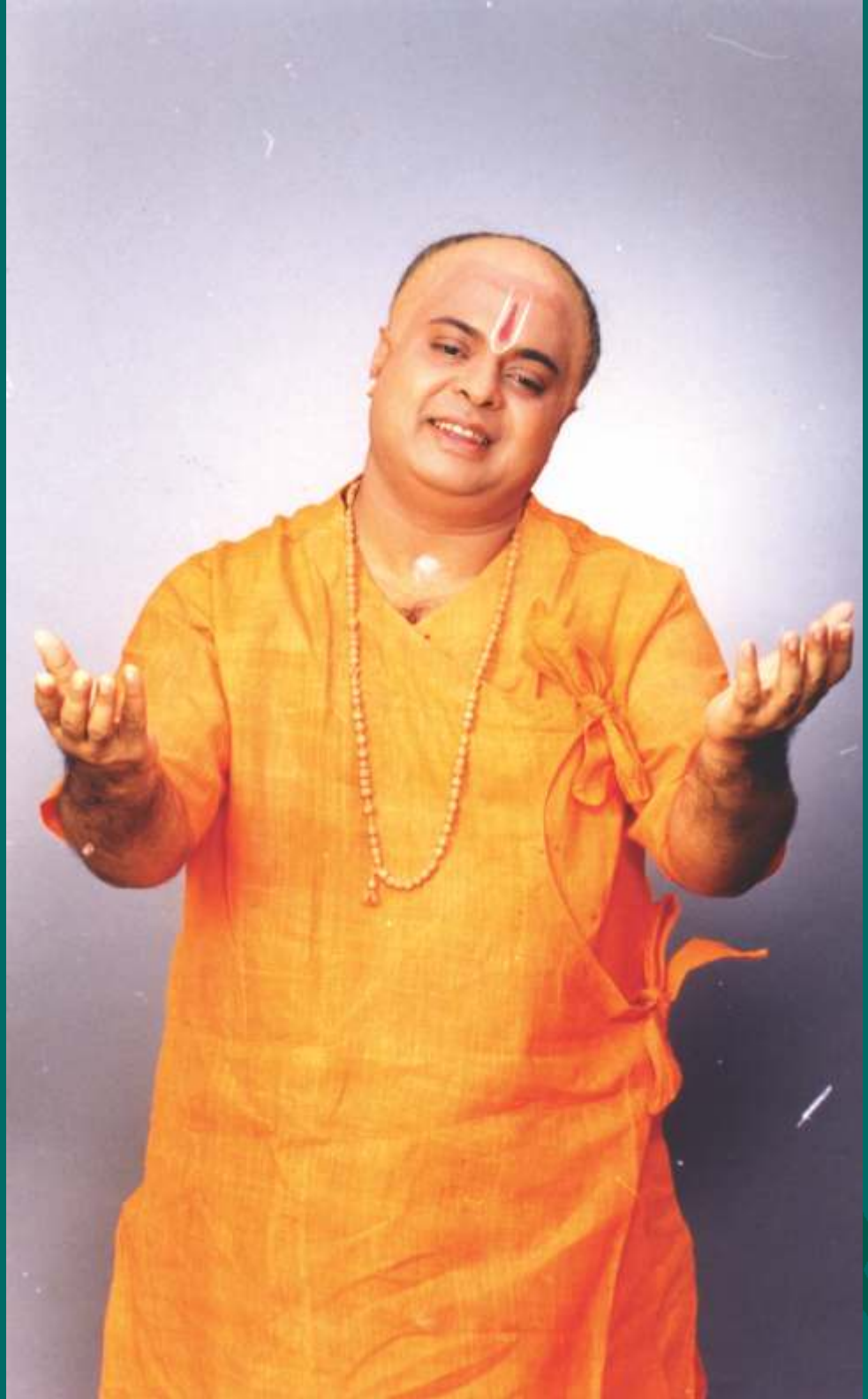

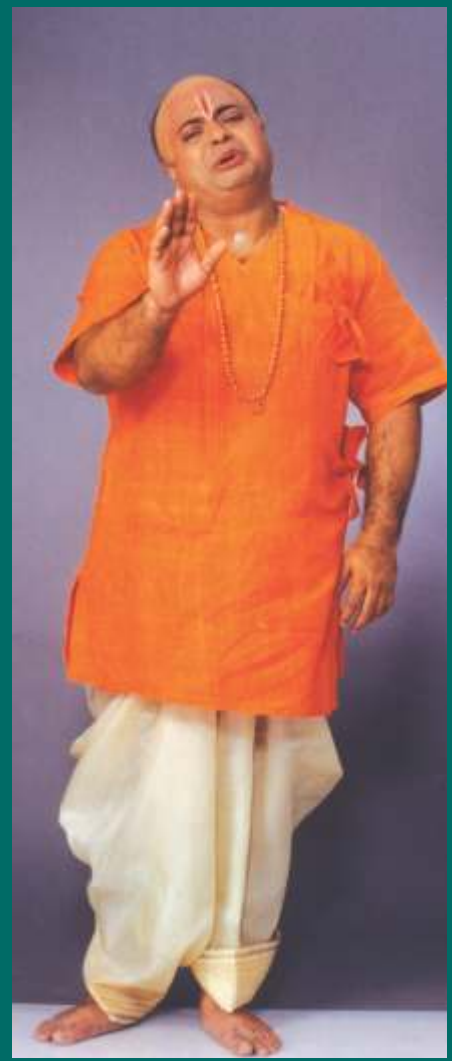

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Abid Surti

एक प्रतिभा अनोखी है
अनोखी इस माने में कि
वे सिर्फ़
एक अच्छे कलाकार ही नहीं
एक अच्छे कथावाचक ही नहीं
बेहतरीन इंसान भी है
जब मंच पर वे हँसते हैं
तो हम सब मुस्कुराते हैं
वे ग़मग़ीन होते हैं
तो हमारी आँखे नम हो जाती हैं
मानो हमारा रिमोट
उनके हाथ हो
वे जब चाहें हमें गुदगुदाए
वे जब चाहें हमें हँसाए
और एक बार तो वे ऐसे हँसे
ऐसे हँसे
कि हम सब रो दिए।
ग़ज़ब का कलाकार है वो
ग़ज़ब का किस्सागो है वो
मेरा मित्र शेखर सेन
ग़ज़ब का दार्शनिक भी है
मित्र तुझे सलाम
मित्र तेरे विचारों को सलाम
मित्र तेरी उड़ान को सलाम।

आबिद सुरती
नामचीन कार्टूनिस्ट एवं कहानीकार

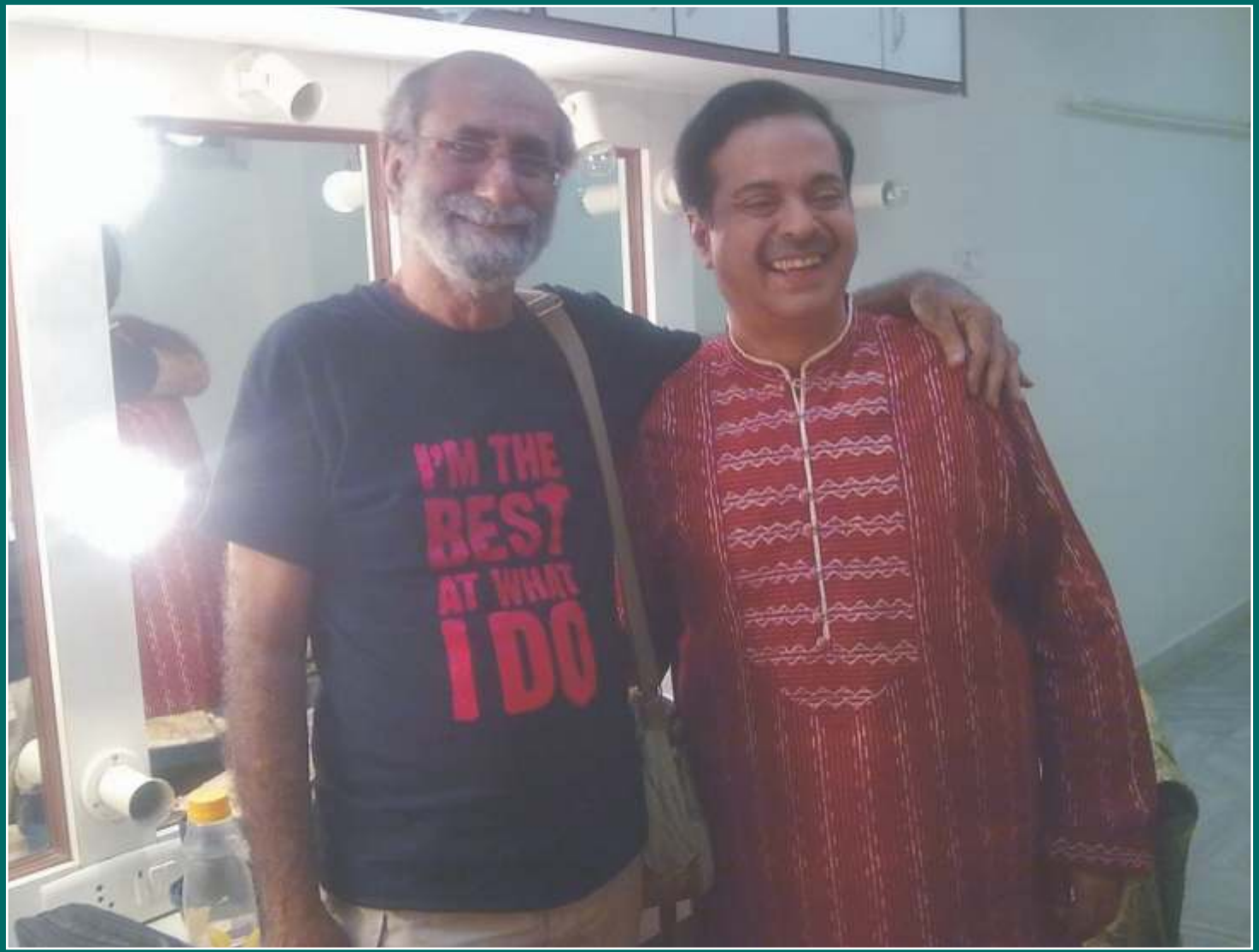
I'M THE
BEST
AT WHAT
I DO

Vishwanath Sachdev

और तपो, और निखरो....

तुलसी, कबीर, विवेकानंद, साहब... ये सब नाटकों के नाम हो सकते हैं, लेकिन सच बात तो यह है कि शेखर सेन इन सब पात्रों को जीता है। जब-जब शेखर को इस पात्रों की भूमिका निभाते हुए मंच पर देखा है, जीवंत अभिनय की एक मिसाल के साथ-साथ यह प्रश्न भी मन में आया है कि यही सब क्यों चुना शेखर ने अपने लिए? फिर बड़ी सहजता से उत्तर भी सामने आ जाता है - इनके अलावा और कर भी क्या सकता था शेखर ? सबसे अलग कुछ करने को एक चुनौती की तरह स्वीकारा था शेखर ने और इस आत्मविश्वास से भी लबरेज़ थे कि वे यह सब कर सकते हैं। चाहें तो इसे हम उनका हठ कह सकते हैं - बाल हठ की तरह निश्छल है उनका यह हठ। और उनके स्वभाव की इसी विशेषता ने मुझे अकसर चौंकाया भी है और रिझाया भी है। चौंकना तो स्वाभाविक था कि संगीत और रंगमंच की दुनिया में कुछ अलग करके दिखाने की ज़िद में एक कलाकार स्वयं को पूरी तरह एक समुद्र में डुबा देने को आतुर हो रहा है। कबीर या तुलसी को मंच पर साकार करने तक सीमित नहीं थी ज़िद यह थी कि इनके माध्यम से जीवन के सत्यों को आम दर्शक तक पहुँचाकर मानूँगा और शेखर ने यह ज़िद पूरी की। इसी बात ने रिझाया मुझको।

और फिर पता नहीं कब शेखर सेन सिर्फ़ शेखर बन गया - एक प्यारा दोस्त, एक प्यारा इनसान। इस दोस्त से सिर्फ़ प्यार किया जा सकता है और इन इनसान को सिर्फ़ सराहा जा सकता है। एक अर्से तक मैं शेखर का 'कबीर' नहीं देख पाया था - देखना चाहते हुए भी। शेखर पूरी तत्परता से हर शो से पहले सूचना भिजवा दिया करता था। मैं कांदीवली में रहता हूँ। एक दिन पास के उपनगर में कबीर का शो था। शेखर का फ़ोन आया, अब भी नहीं पहुँचेंगे तो मैं घर पर पहुँच जाऊँगा - नाटक दिखाने। मुझे नाटक दिखाकर शेखर को कुछ नहीं मिलना था। मिलना तो मुझे था बहुत कुछ। लेकिन शेखर जानते थे कि वे कुछ अलग कर रहे हैं और इस 'अलग' को समझने का अवसर उनके अपनों को मिलना चाहिए।

वैसे, शेखर स्वयं एक अलग-सा व्यक्तित्व है। आसानी से समझ नहीं आता, पर जब समझ आ जाता है तो बड़ा प्यारा लगता है वह व्यक्ति। उसकी महत्ता, उसकी सादगी, उसका कौशल, उसकी क्षमता... सब भाने लगते हैं। सुना है, पचास का हो रहा है शेखर। अभी तो शतक पूरा होने में पचास बाकी हैं। जब शतक पूरा होगा तो उससे कहूँगा, कभी रिवाज़ था सौ का भाव करके एक सौ पच्चीस गिनवाने का। मैं जानता हूँ, शेखर सेन के कृतित्व-व्यक्तित्व को उम्र की सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। कुछ व्यक्ति बड़ा होने के लिए ही जनमते हैं - और बड़ा, और बड़ा, और बड़ा...। इस बड़ा होने का मतलब होता है और तपना, और निखरना। आमीन।

विश्वनाथ
वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक, नवनीत

Gulzar

Gulzar

संतों की बानी अलग-अलग होती है पर तलाश और पीड़ा एक ही ! दिन और रात अलग बिरहा और मिलन अलग-अलग, मगर महबूब एक ही। मिलते-बिछड़ते उसी से हैं सब जिसका कोई आकार नहीं, चेहरा नहीं।

लेकिन शेखर ने उन संतों को एक चेहरा दे दिया है। मैं कबीर, तुलसीदास और विवेकानंद को एक ही चेहरे में देखता हूँ। मेरी तलाश भी वही है और मिलन भी वही - शेखर सेन !!

गुलज़ार
फ़िल्म निर्देशक और शायर

Shweta Sen

'सुनो - मेरे जन्मदिन के उपलक्ष्य पर एक स्मारिका छपने जा रही है, मेरे सभी क़रीबीजन एवं शुभाकांक्षी उसके लिए कुछ लिख रहे हैं तुम भी लिखो।

सवेरे कम्प्यूटर के सामने विराजे श्रीमानजी को गर्मागर्म चाय देने गई और बदले में ये गाज गिरी मुझ पर।

हाय-हाय ये कौनसा काम बता दिया। चाय दो, नाश्ते में क्या है ? खाना तैयार है क्या ? मेरा सूटकेस जमा दो, जैसे रोज़ की फ़रमाइशों के बाद इतना भारी काम। बरसों से जिनके साथ रोज़ गरजने से लेकर बरसने तक हर बात में हिस्सा लेती रही हूँ उनके बारे में बताने के लिए क़लम भी उठानी पड़ेगी, ऐसा तो मैंने कभी सोचा ही नहीं।

खैर - हाँ तो मेरे श्रीमानजी 16 फ़रवरी 2011 को पचास के हो रहे हैं। उँह... पचास के होंगे औरों के लिए। मेरे लिए तो सिर्फ़ 23 के हैं क्योंकि हमने साथ-साथ 23 जन्मदिन ही तो मनाये हैं। वही उमंग वही जुझारूपन, वही उत्साह जो एक 23 वर्ष के नौजवान में होता है।

1987 का साल हमारी ज़िंदगी में कहर बरपाता हुआ शुरू हुआ। पिताजी की आकस्मिक मृत्यु माँ के साथ हम तीनों भाई बहन हतप्रभ से रह गये। हर वक़्त शोक व अनजाने भय की एक सर्द चादर बिछी रहती थी हमारे बीच। इन्दौर के आगे एक क़स्बानुमा शहर में मेरी पोस्टिंग थी, सरकारी हाईस्कूल में अंग्रेज़ी शिक्षिका के पद पर।

गर्मी की छुट्टी लगने पर जब रात भर का सफ़र तय कर सुबह सुबह भोपाल अपने घर पहुँची तो पहली बार माँ के चेहरे पर प्रसन्नता की हल्की लहर सी दिखी। माँ झट चाय बनाने गई और जाते हुए म्युज़िक सिस्टम में एक कैसेट डाल गई। भजन बज उठा, कोई अनजानी सी आवाज़, घोर आश्चर्य ! हमारे घर में भजन का कैसेट... कहाँ से आया होगा ? सूरज देवता एक बार अपनी दिशा बदल सकते हैं, पर मेरे भाई ने भजन का कैसेट ख़रीदा होगा ? नामुमकिन !

इतने में माँ गर्मागर्म चाय की प्याली के साथ आईं तो छूटते ही हम दोनों बहनें सवाल दागने लगीं... 'ये कौन सा कैसेट है?' 'तुम्हें कहाँ से मिला?'... कौन गा रहा है?'

माँ ने पूछा, 'कैसा लग रहा है?' जवाब था, 'अच्छा तो है पर आवाज़ किसकी है समझ में नहीं आ रहा।' माँ ने मुस्कुराते हुए कहा, 'ये लड़का है जिसका रिश्ता आया है तुम्हारे लिए। इसके माता-पिता ख़ुद आये थे मुझसे मिलने। बहुत ही नेक, सज्जन और गुणी लोग हैं। रायपुर का परिवार है। माँ की आँखों में उम्मीद की किरण झिलमिला रही थी। मैं समझ गई कि वो मानसिक रूप से इस रिश्ते को स्वीकार कर चुकी हैं।

फिर भी मैंने मिमियाते हुए कहा... मुंबई में रहते हैं, कलाकार हैं। पता नहीं चरित्र कैसा होगा (फ़िल्मी पत्रिकाएँ ख़ूब अच्छे से पढ़ती थी)। माँ ने कहा, संस्कारी माता-पिता का बेटा कभी ग़लत नहीं हो सकता, अच्छा ही होगा।

ख़ैर, फिर एक-दूसरे को देखने की बारी आई। हमें एक कमरे में बिठा दिया गया। एक दूसरे से बात करने, समझने के लिए, इन्हें मुझमें क्या अच्छा लगा मालूम नहीं लेकिन इनकी साफ़गोई ने मुझे जीत लिया।

पहली बार में ही बिना लाग-लपेट के इन्होंने अपनी सारी ऐबें बता दीं। पंचों की राय से शादी का दिन भी तय हो गया।

शादी की तैयारियाँ ज़ोर-शोर से शुरू हो गईं। क्योंकि बीच में सिर्फ़ डेढ़ महीने का वक़्त था। उन तैयारियों में एक था मुझे इनके लायक गढ़ने का।

'ले लायब्रेरी से ये किताबे लाया हूँ, इनमें रसखान, घनानंद, बिहारी, सूरदास सब हैं... ये नाम कभी सुनी है तू ? इन्हें पढ़ अच्छे से। सुना है लड़का हिंदी साहित्य का प्रेमी है और इन्हीं विषयों पर काम करता है।' यह स्वर था काकाजी का, साथ में पुस्तकों का पुलिंदा।

बाप रे ! ये क्या मुसीबत। सच में इनमें से ज़्यादातर के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानती थी। पुस्तक खोलकर देखा तो यूँ लगा काला अक्षर भैंस बराबर! कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। शादी की उमंग धीरे-धीरे भाप बनकर उड़ने लगी। रोज़ सासू माँ गाड़ी भेजकर अपने पास बुलवा लेतीं। मुझे गाना सिखातीं, अपने और परिवार के बारे में बतातीं। बहुत अच्छा लगता था उनके सान्निध्य में। पर अपने बेटे के बारे में बात करते हुए भावविभोर होकर कहतीं, 'मेरा बेटा बहुत Intelligent है, सारगर्भित बातें करता है। वैसे तो बहुत हँसमुख है, हँसी-मज़ाक भी ख़ूब करता है, लेकिन बहुत Emotional भी है इसलिए उसके साथ ख़ूब संभलकर बात करना। जब-तब हँसी-मज़ाक नहीं करना। हल्की बातें तो बिलकुल नहीं।

लो, ये कैसा आदमी है भाई ! जिनके साथ चौबीसों घंटे पूरी ज़िंदगी रहना है उनसे संभलकर, नाप तौलकर कैसे बात करें, इनके रसगुल्ले सा नरम चेहरा अब कद्दू जैसा लगने लगा।

खैर, शादी तो होनी थी, हो गई। मैंने भी तय कर लिया कि अपने को ज़्यादा लफ़ड़े में पड़ना नहीं। माँ की कही बात गाँठ बाँध ली ... 'गूँगे का कोई शत्रु नहीं होता' जितना पूछा जाए उतनी ही बात करो।

थोड़े दिन बाद एकांत मिलने पर श्रीमानजी ने कहा, 'सुनो, तुम कुछ कहती क्यों नहीं?' मैंने कहा, 'मेरे पास कहने को कुछ है ही नहीं', 'ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे तो लगता है या तो तुम बड़ी बेवकूफ़ हो, या बहुत ही चालाक। ऐसे ही लोग ज़्यादा बात नहीं करते।'

अरे-रे, ये कैसा इल्ज़ाम। बस फिर क्या था, जो बोलना चालू हुआ तो अब मुझे कहते है, 'तुम बोलने लगती हो तो रुकने का नाम ही नहीं लेती हो।' इस तरह जीवन की राह पर हमारी गाड़ी दौड़ रही है। कभी रनवे की तरह सपाट तो कभी मुंबई की सड़कों सी गड्ढों पर उछलते कूदते, हर उतार-चढ़ाव का भरपूर आनंद लेते।

कई बार आवेश में आकर लोग मुझे कहते, आप शेखरजी की पूरक हैं। आपके सहयोग से वे आज इतने क़ामयाब हुए, तो मैं सोचती हूँ,.... मैंने क्या किया। मुझे मालूम है कि यदि मैं न भी होती तो भी वे वही होते जो आज हैं। शेखरजी अपने आप में पूर्ण हैं, उन्हें किसी पूरक की आवश्यकता नहीं। बस आप सब आशीर्वाद दें कि इसी तरह उनकी जीवन यात्रा सुखद ढंग से लम्बी हो। वैसे मैं जानती हूँ जीवन में ऊपर की ओर का रास्ता आसान नहीं होता है।

जीवेत शरदः शतम्।

श्वेता सेन
शेखर की जीवन सखी

Saurabh Sen

MY BABA - AS I SEE HIM

It is a saying that parents are the representative of god on the earth. I find the statement absolutely sensible.

Since childhood I find my baba's presence in every moment of my life. Though he is very busy yet he keeps an eye on my every activity. Unlike other parents he never pressurises me in studies. He expects me to become a good human being rather than to achieve a big position in any field. He is always against the rat race in the society.

Baba is always concerned about the entertainment part of my life whether a film show, eating out or touring abroad. I have covered half of the world with him and achieved many experiences.

My father is an excellent cook. Whenever he enters in the kitchen prepares good food for us.

Keep it up baba always like this.

HAPPY BIRTHDAY.

Saurabh Sen

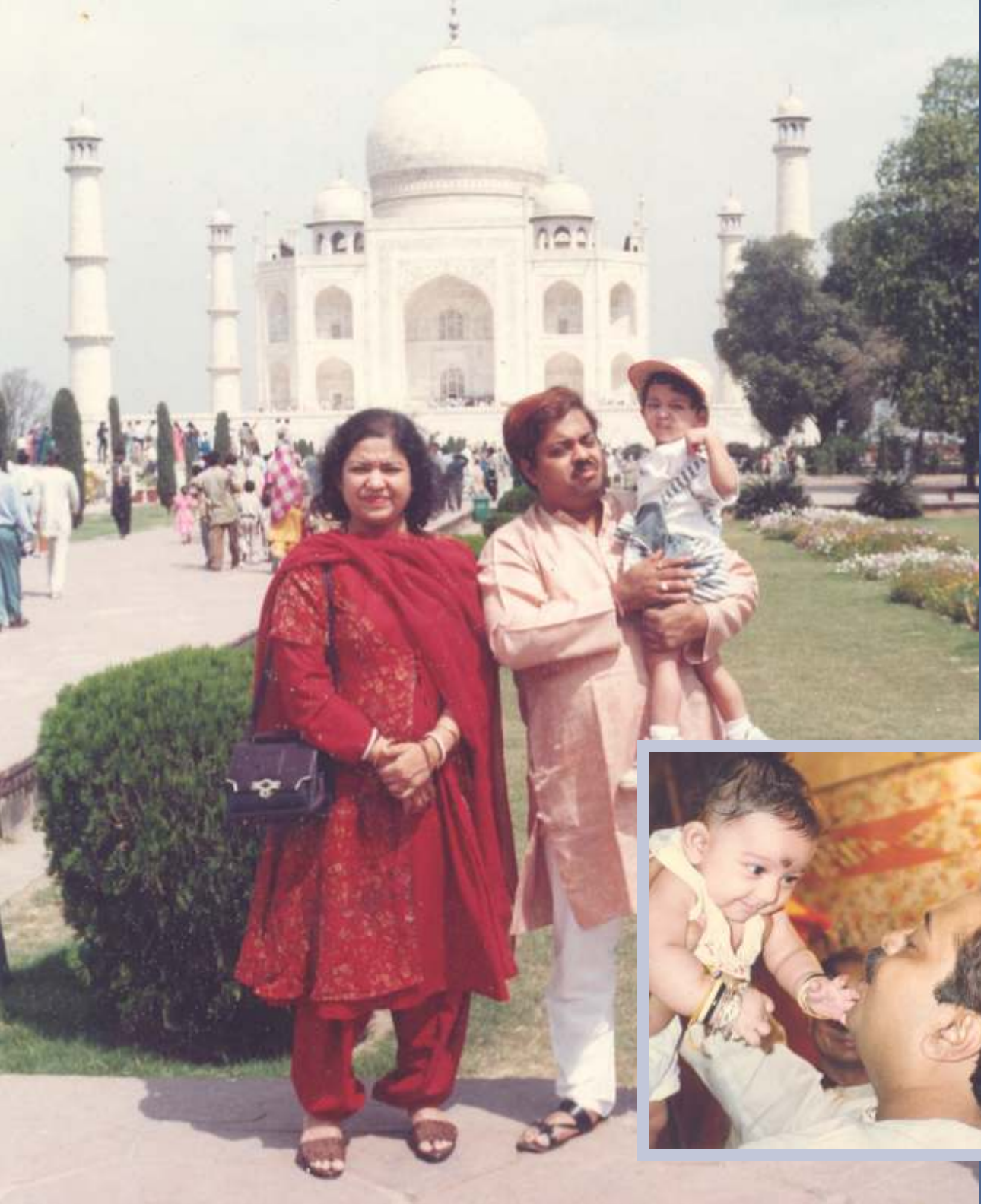

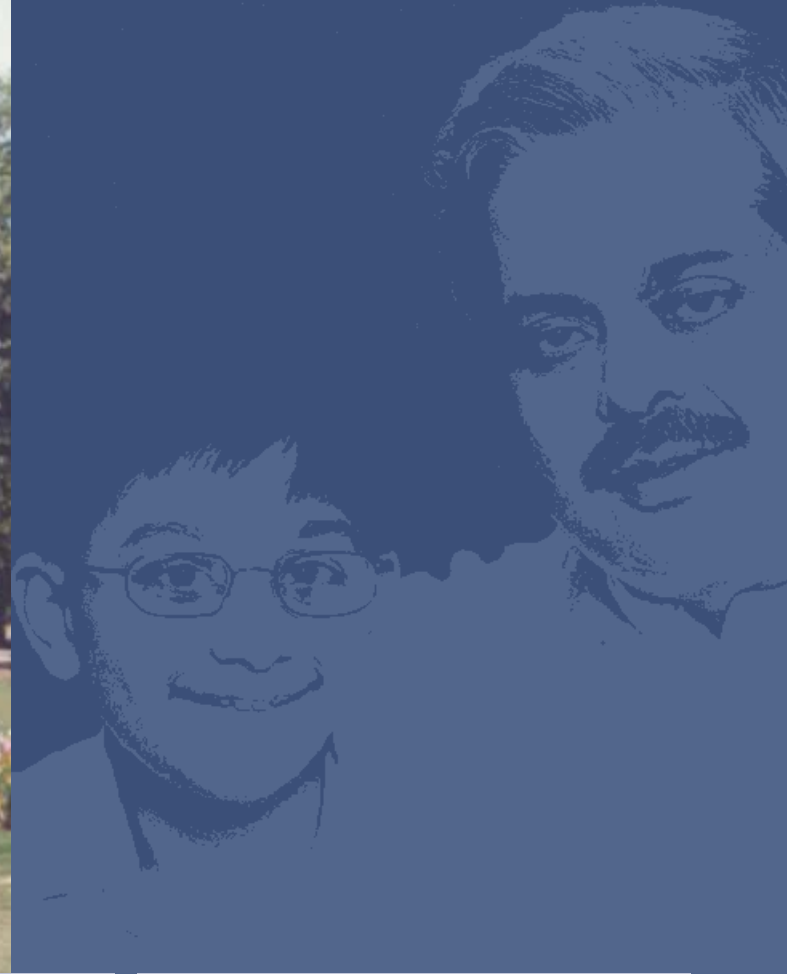

Rasbihari-Vibha Desai

एक अनुभूति - अविरल अश्रुधारा की......

- कुछ थोड़े ही वर्ष पूर्व, जब पहली बार उनको 'कबीर' रूप में देखा-सुना, 'अश्रुपुलकरोम' तीव्रानुभव इतना गहरा था कि कुछ क्षण रासभाई अपना ही अस्तित्व भूल बैठे थे। घर पहुँच कर उन्हें शीघ्र पत्र लिखने बिना रहा न गया। 'आपने हमें बहुत रुलाया, न जाने और कितना रुलाएँगे??'
- फिर तो परिचय-दोस्ती, प्रेम बढ़ते ही चले हैं, 'प्रतिक्षण वर्द्धमानम' की तरह।
- एकरात रासभाई यूँ ही घर के झूले पे 'बैठे ठाले' से थे। अचानक टेलीफ़ोन आया। मैं शेखर सेन बोल रहा हूँ, अमेरिका लॉस एंजिलिस से। कबीरदास का वह भजन सुनने के लिए बैचेन -बेताब हूँ। एक पंक्ति - स्थायी/क्रॉस अभी ही फ़ोन पर गाकर सुना दीजिये, प्लीज़।... वह पद था :

''काहे रि नलिनी तू कुम्हिलानी
तेरे ही नालि सरोवर पानी।''

कितना शिखर समान बड़प्पन। कितनी नितांत सरलता। एक छोटे सामान्य गायक से भजन-पंक्ति बंदिश सुनने के लिए परदेस से फ़ोन करते हैं। शेखरजी जैसे महामहिम कलाकार की अंदरूनी विनम्रता कहीं ओर मिलना बहुत कठिन है।

- Shekharji is a very rare specimen of a COMPLETE artiste to the core - a singer, a writer, a composer, an actor, a director, a visionary and above all a pure-transparent all-loving human being - all rolled-into one... उनके सभी सृजनों (productions like Kabeer, Tulsi, Vivekanand, others Rasbhai has yet to see) में एक ही केन्द्रीय हेतु दिखाई देता है : मानवीय निस्बत, human concern.

- ऐसी व्यक्ति चेतना का जिनसे सृजन-लालन-पालन-संस्करण हुआ वह पुण्यश्लोक पिता-माता अरुणकुमार-अनीताजी युगल को शतकोटि वंदन।

  ....जिन्होंने आ. शेखरजी की सुवर्ण जयंती आयोजित की है, वह सभी अभिनंदनाधिकारी-धन्यवादाधिकारी हैं। उन्हें हृदयपूर्वक प्रणाम।
- अब तो केवल 50 ही वर्ष बाक़ी हैं, 'शतायु' के लिए।

॥ शेखरः जीवेत् शरदः शतम् ॥

-हृदयात् ईश प्रार्थना है।

और, अन्यथा सोचें तो :

From the viewpoint of QUALITY of life, he has so meaningfully lived till this day (add life to years, not years to life' is a well known saying) he has already completed more than EQUIVALENT 100 years, now the remaining years actually lived in future, will be 100+ 'bonus' years!! Numerical age just does not matter for a genius called Shekhar Sen.

May the All Merciful Almighty Keep Shekharji - Shwetaji - Saurabh... and all in the Sen family.

-ETERNALLY BLESSED.

रासबिहारी देसाई
गुजरात के वरेण्य गायक

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Pt. Shivkumar Sharma

Shekhar Sen is a rare phenomenon in the field Music composition and theater. He is thoroughly trained classical vocalist, a gifted composer and extraordinary actor. He has created history by presenting such unforgettable one man acts like Swami Vivekanand, Kabir, Tulsidas and latest Saahab. I don’t think ever in the past, we have seen such a personality who is doing the role of different characters, himself composing the music and also singing live. It requires not only gift of composition but thorough training in music and ability to act but overall blessings of God to bring out all these different art forms, in such a beautiful manner by one single individual. Behind all this, is his greatest asset of being most unassuming and humble person.

I send my best wishes on his 50th Birthday. Wishing him a very long life full of creativity, good health and more such creation.

Kind regards.

Pt. Shivkumar Sharma
Santoor Maestro

Ustad Zakir Hussain

Shekhar Sen ji is one of those truly gifted artists who have taken on the challenge of reviving the works of Greats such as Kabir, Tulsidas and Swami Vivekanand, through his novel art. His performances are a perfect blend of his numerous talents.

His shows are mesmerizing due to the ease with which he blends different art forms to convey the much needed social message in our changing times today.

I wish him all the very best in all his creative endeavors and hope his art touches the hearts and souls of people worldwide.

Zakir Hussain

मुकुंद

Atul Tiwari

मित्रों,

शेखर जी की ख़बर सुनके बड़ा धक्का लगा, विश्वास ही नहीं हुआ कि उनके जैसे हँसते खेलते इंसान के साथ भी ऐसा हादसा हो सकता है। अभी पंद्रह दिन पहले ही तो पाकिस्तान जाने से ठीक पहले, उनसे मुलाकात हुई थी और हमेशा की तरह वो बातें कम कर रहे थे, जोक्स ज़्यादा सुना रहे थे। साथ ही बातों-बातों के बीच अपने सेल फ़ोन से (सॉरी ब्लैक बेरी से) और भी ताज़े चुटकुले भेजते जा रहे थे। उनके जैसे खिलंदड़, हंसोड़, बच्चों जैसे उत्साही इंसान के साथ भी ऐसा कुछ हो गुजरेगा मुझे तो यक़ीन ही नहीं हो पा रहा है, पर समय से कौन जीत पाया है।

मुझे शेखरजी से हुई अपनी पहली मुलाक़ात बिलकुल ऐसे याद है जैसे अभी कल ही की बात हो, लगभग 13 वर्ष पहले अशोक बांठियाजी के घर पहली बार शेखरजी को देखा था, बल्कि मिला था। देख तो उनको तुलसी के विज्ञापन में चुका ही था। भेंट होते ही उन्होंने फ़ौरन अपने तुलसी नाटक का ज़िक्र किया और देखने आने का आमंत्रण भी दिया। उन दिनों मैं भी मुंबई की रंगभूमि में सक्रिय था और एक सफल एकल नाटक कर चुका था। मैंने छूटते ही कहा कि आपके विज्ञापन तो देखे हैं पर उनको पढ़कर डर लगा क्योंकि आप ही लेखक, निर्देशक, निर्माता, संगीतकार और अभिनेता भी सब कुछ हैं और मेरा अनुभव ये कहता है कि इतने सारे काम एक साथ करने वाला या तो बहुत बड़ा दम्भी होता है या बहुत बड़ा जीनियस। क्योंकि जीनियस पाए जाने की संभावना, दम्भी पाए जाने के मुकाबले बहुत कम होती है, इसलिए ऐसे प्रयोगों से बचे रहने में ही सावधानी है।

शेखरजी ने बिना मेरी बात से चुटील होते हुए कहा, कम से कम एक चीज़ मैंने नहीं की है; लाइट्स, वो तापस दा ने की है, वही देखने आ जाइए। तापस सेन के नाम से मेरे निकलने के सारे रास्ते बंद हो चुके थे, मैंने अगले शो में आने का वायदा कर लिया। अगले शो में मैं आशुतोष राना और एकाध अन्य राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के मित्रों को लेकर भाईदास हॉल में 'तुलसी' देखने से ज़्यादा, इस कलाकार को परखने पहुँच गया।

नाटक कब शुरू हुआ और कब ख़त्म, मुझे पता ही नहीं चला। बस इतना पता था कि नाटक का हर पक्ष - लेखन, संगीत, निर्देशन और सबसे बढ़कर अभिनय और गायन अपना जादू छोड़ते जा रहे थे। तुलसी पर पहले भी मैंने नाटक देखे थे और पढ़े थे, पर ऐसा निरूपण, ऐसा शिल्प, ऐसा गठन, ऐसा प्रस्तुतिकरण और ऐसा गायन ? नाटक ख़त्म होते ही मैं मंत्रमुग्ध सा बैक स्टेज जा पहुँचा, बधाई देने के लिए जब मैं शेखर जी के सामने खड़ा था तो बड़ा शर्मिन्दा था। मुझे पता पड़ चुका था कि हम दोनों में कौन दम्भी था और कौन जीनियस।

अब तो इस जीनियस से मुलाकातें होने लगीं। इत्तेफ़ाक ये भी था कि हम दोनों पड़ोसी भी निकल आए थे जो यारी रोड की अगल-बग़ल की बिल्डिंगों में रहते थे और फिर एक और सुखद घटना हुई, 'चौपाल' का जन्म। अब तो मुलाकातें, बातें, काम, गप्प सड़ाके लगातार होने लगे और कब ये जीनियस इस दम्भी का दोस्त ही नहीं परिवार वाला बन गया, पता ही नहीं चला। फिर तो चाहे मेरी माँ का ऑपरेशन हो या शेखरजी के माता-पिता की

बीमारी, मेरी फ़िल्मों की स्क्रिप्ट्स हों या शेखरजी के नए नाट्य प्रयोग, पारिवारिक रगड़े-झगड़े हों या सांसारिक, सांस्कृतिक समस्याएँ, हर मसले पर मुझे मुंबई में एक ऐसा 'कॉन्फ़ीडान्ट' मिल गया था जिससे मैं मन खोलकर अपनी बात कर सकता था।

यहाँ ये भी कहना ज़रूरी है कि इन दो मित्रों की इस यारी में हमारी श्वेता भाभी का भी कंट्रीब्यूशन कम नहीं था। मेरे जैसे आवारा का किसी भी समय, किसी भी दिन, किसी भी मूड़ में, शेखरजी के घर आ धमक जाना और श्वेता भाभी का हरदम उसी मुस्कान और सहिष्णुता से मुझे स्वीकार कर लेना, आजकल मुंबई तो क्या छोटे शहरों में भी आम बात नहीं रह गई है। हम चौपाल वाले और विशेषतः मैं बड़ा भाग्यवान हूँ कि ऐसे एक दो नहीं, कई घर आज मेरा परिवार हैं। विषयांतर के लिए क्षमा करें, पर बात जब शेखरजी की हो तो चौपाल का ज़िक्र होना लाज़मी है। क्योंकि बीसियों म्युज़िकल अलबम्स, चार नाटकों के सैकड़ों प्रदर्शनों, दर्जनों पेंटिंगों, खासियों गीतों, कविताओं, संस्थाओं, उत्सवों के अलावा जिस विचित्र आन्दोलन को शेखरजी ने सजाया सँवारा और संवर्धित किया है उनमें तेरह साल से चली आ रही चौपाल बड़े महत्व का दर्ज़ा रखती है।

ख़ैर इस बार जनवरी में लम्बी यात्रा पर जाने से पहले एअरपोर्ट जाते समय भी शेखरजी से मिलते हुए निकला था। उनके उत्साह, उमंग, ऊर्जा का कुछ हिस्सा अपने साथ ले जाना चाहता था। पर क्या पता था कि लौटते-लौटते इतनी देर हो जाएगी और शेखरजी इतनी जल्दी हम सबको धोखा देकर, भरी जवानी में पचास

के हो जाएँगे। मुझे तो अभी भी विश्वास नहीं होता और लगता है कि ऐन समय शेखरजी खड़े होकर बोल पड़ेंगे - 'मित्रों, सन् 2011 शती वर्ष है... फ़ैज़ का, अज्ञेय का, शमशेर का, नागार्जुन का.. तो मैंने सोचा कि मैं भी शती न सही, अर्ध शती तो मना ही लूँ...

ख़ैर... अब जो भी हो विधि के विधान से कौन लड़ पाया है। सब एक न एक दिन पचास के हो ही जाते हैं और कुछ लोग तो ये सत्य स्वीकार कर भी लेते हैं और अब चूँकि ये घटना शेखरजी के साथ हो गई है तो बस इतना ही कहना चाहूँगा -

'अर्ध शती का जश्न मुबारक होवे तुमको शेखर।
बढ़ते जाओ चढ़ते जाओ, जीतो तुम नित नए शिखर।।

(एक शोक संदेश)

अतुल तिवारी
प्रसिद्ध लेखक, निर्देशक, अभिनेता

Rajendra Gupta

जहाँपनाह तुस्सी ग्रेट हो....तोहफ़ा कुबूल करो

तकरीबन 12-13 साल पहले उस दिन अशोक बाँठिया ने कहा... चलिये शाम को अगर फ्री हैं तो एक नाटक देखा जाए।

मैंने कहा ठीक है। जब पता लगा और भी 2-4 दोस्त आ रहे हैं तो लगा चलिये शाम अच्छी कटेगी।

भाईदास हॉल पहुँचे तो अशोक पास लिये खड़े थे। हालाँकि उन्हें बुख़ार था, फिर भी हम दोस्तों को नाटक दिखाने का न्यौता दिया था सो ड्यूटी तो निभानी ही थी।

ख़ैर... पता चला कि नाटक का नाम तुलसी है और करने वाले हैं कोई शेखर सेन... सोलो... म्युज़िकल... अच्छा।

एक तो भाईदास में (सबसे मँहगा हॉल) दूसरे सोलो हिंदी नाटक... चलो देखते हैं। कुछ अलग ही चक्कर लगता है ... सोलो प्रमोशन... सोलो मार्केटिंग... सोलो अचीवमेंट।

दरअसल मेरे जैसे एनएसडी से निकले तथाकथित नामचीन रंगकर्मी में तब तक सोलो परफ़ॉरमेंस को लेकर कोई ख़ास पाज़ीटिव क्यूरोसिटी नहीं थी, क्योंकि देखा, पढ़ा और समझा भी यही था कि रंगकर्म बेसिकली एक टीम वर्क है, उसके बिना कोई अच्छा काम हो सकता है ऐसा सोचना मेरे लिए ज़रा मुश्किल ही था।

ख़ैर नाटक शुरू हुआ... हालाँकि मेरे लिए वो कथा गायन ही था, मगर शेखर ने रामचरित मानस के गीतों को बीच-बीच में सामान्य संवादों से जोड़कर जो भी एक नाट्य कथा गायन प्रस्तुत किया था वो अभूतपूर्व था। शेखर की थीम और उसका गायन दोनों इतने प्रभावशाली थे कि पूरा भाईदास मंत्रमुग्ध होकर झूम रहा था।

हम सब उनके गाने की गूँज और दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट से अभिभूत, चुपचाप स्टेज पर पहुँचे तो शेखर सेन से पहली बार साक्षात हुआ। वे हाथ जोड़कर बहुत ही विनीत भाव से हम सबका अभिवादन कर रहे थे। मेरी बोलती बंद थी... एकदम बंद।

थोड़े दिन बाद ही उनका फ़ोन आता है कि शाम को अगर घर पर हों तो ज़रा मिलना है। बाक़ी दोस्त डॉ. चन्द्रप्रकाश, अतुल तिवारी और अशोक बाँठिया भी आएँगे। मैंने कहा आइये... बोले; लेकिन चाय नहीं पीयेंगे, ये ध्यान रखियेगा। मैं थोड़ा घबराया मगर कुछ कह नहीं पाया। एकदम नयी और किसी बड़े गायक से पहले मुलाकात थी... फिर उनके गायन का दबदबा भी दिमाग़ पर तारी था। मैंने वाकई पत्नी को चाय के लिए मना कर दिया और उस शाम शायद 10-15 मिनट के हम पाँचों के संसर्ग ने बिना चाय पीये ही चौपाल नाम के एक बच्चे को जन्म दे दिया।

चौपाल का बीज मूलरूप से कहीं न कहीं शेखर के नाटक से, उनके दिमाग़ के खोह में ही फूटा होगा जिसे बेशक कई दोस्तों ने सींचा, पाला और पोसा। ख़ासकर अतुल तिवारी और अशोक बिंदल ने।

शेखर ने एक तरफ़ अपने नाट्य कथा गायन और उसके थीम से एक नया इतिहास रचा तो दूसरी ओर हम दोस्तों को चौपाल दी। दोनों ही नायाब और अभूतपूर्व हैं। दोनों का वज़न लगातार बढ़ रहा है और आगे भी ऐसे ही बढ़ता रहे... 50वें से 100वें तक... इसी उम्मीद के साथ। बस...शेखर का वज़न पता नहीं क्यों लगातार घट रहा है।

राजेन्द्र गुप्ता
वरिष्ठ अभिनेता व निर्देशक

Tushar Bhatia

शेखर भाई से मेरा परिचय हुआ 1985 में। संघर्ष काल के वो दिन, इनके भी, मेरे भी ! तब शेखर सेन, कल्याण सेन नए-नए मुंबई आए थे अपना संगीत लिए। मैं एच.एम.वी. में म्युज़िक प्रोड्यूसर था। भजन और ग़ज़लों की रिकॉर्डिंग में आदरणीय लताजी, पं. भीमसेन जोशीजी, पुरुषोत्तमदास जलोटाजी, जगजीतसिंहजी, अनूप जलोटा जी इत्यादि के रिकॉर्डिंग हर रोज़ की बात थी। एक दिन हमारे बॉस श्री विजय किशोर दुबे जी ने सुबह-सुबह बताया कि एक नई कलाकार जोड़ी को ऑडिशन के लिए बुलाया गया है। एच.एम.वी. में ऑडिशन एक रूटीन मामला था और ज़्यादातर वो त्रासदायक अनुभव ही सिद्ध होता था। पर उस दिन जब ऑडिशन शुरू हुआ तो लगा कि ये मामला ही कुछ अलग था। पहली रचना से ही सब प्रभावित हुए थे। कुछ ज़्यादा सुनने की ज़रूरत नहीं थी, शेखर भाई ने हारमोनियम लिया और भक्ति रचनाएँ पेश कीं। कल्याण भाई तबले पर... सुरीला, लयदार, मध्यकालीन भक्ति रचनाओं का भावपूर्ण प्रस्तुतिकरण हम सभी को भा गया - उनका विनम्र व्यवहार तथा बंग भाषी होने के बावजूद हिंदी भाषी पर प्रभुत्व, मुग्ध कर रहा था। शेखर भाई में मुझे उस दिन सिर्फ़ एक संघर्ष करता हुआ कलाकार नहीं बल्कि इक संगीत साहित्य का साधक नज़र आया। 24 कैरेट खरा सोना। बस उसी दिन शेखर भाई के पहले भजन एल्बम 'समर्पण' की शुरूआत हुई, कुछ दिनों बाद 'सम्पूर्ण सुन्दर कांड' के संगीत का दायित्व उन्हें दिया गया, फिर उदित नारायण के 'भजन वाटिका' का संगीत निर्देशन।

इन सभी की रिहर्सल और रिकॉर्डिंग के दौरान मुलाकातें बढ़ती गईं और आत्मीयता भी। शेखर भाई के साथ संगीत साहित्य विषयक चर्चाएँ होती थीं। हमउम्र होने के कारण हमारे बीच से औपचारिकता का लोप हो गया था। हमारी चर्चाओं के विषय भी कैसे ? कबीर, सूरदास, रसखान, रविन्द्रनाथ, महादेवी, साथ ही भिन्न संगीतकारों की विशेषताएँ, सभी गायकों की छटाएँ। किसी भी गायक का गीत सुनाते वक़्त शेखर भाई की आवाज़ में जैसे उस गायक की शैली स्वयंभू प्रगट हो जाती थी। साथ ही अनगिनत कहानी-क़िस्से जिनका नाट्यात्मक प्रस्तुतिकरण देखकर-सुनकर हम हँस-हँस के लोटपोट हो जाते। आज तक दूसरे किसी की रिकॉर्डिंग के दौरान हँसी की ऐसी बौछारों का स्मरण नहीं होता।

एच.एम.वी. छोड़ने के कुछ अरसे बाद मुंबई यूनिवर्सिटी में ठुमरी पर आयोजित गोष्ठी में शेखर भाई के माता पिता डॉ. अनीता सेनजी और डॉ. अरुण कुमार सेनजी से मुलाकात हुई, बाद में वो मेरे घर भी आए, माताजी ने गुरुदेव टैगोर पर डॉक्टरेट की थी और ताल शास्त्र पर पिताजी ने, जो भातखंडे संगीत शोध संस्थान शुरू कर रहे थे और माताजी के गायन की तासीर वाह वाह, मंत्रमुग्ध हो गया था मैं। क्या उनकी ठुमरी की स्वरचित एक एक रचना, विशेषकर 'अष्टनायिका' से तो मुझे कंठस्थ हैं। क्या संदेह है कि शेखर भाई को ऐसे संस्कारों की घुट्टी मिली है । मैं कैसे भूल सकता हूँ एनसीपीए का हमारा वो कार्यक्रम, जहाँ आप सीधे हॉस्पिटल से आए थे परफ़ॉर्म करने, एक सच्चे कलाकार से ही हम ऐसी निष्ठा की अपेक्षा कर सकते हैं।

तीन साल पहले वृन्दावन यात्रा पर गया तो शेखर भाई के साथ बिताया समय याद आ गया। बृज साहित्य संगीत को लेकर हमारी मीठी-मीठी चर्चा, रचनाओं के चुनाव के खट्टे-मीठे झगड़े, पर जब मैं रसखान जी की समाधि पर पहुँचा तो आपका स्वर मन में गूँजने लगा 'काग के भाग कहा कहिये' 'ताहि अहीर की छोहरिया' मैंने उसी समय शेखर भाई को फ़ोन लगाया और कहा मैं रसखान जी की समाधि पर हूँ तो उनका उत्तर था, तुषार भाई मेरी ओर से दंडवत कीजियेगा।

पिछले 13 सालों से भारतीय संस्कृति की ख़ुशबू फैलाते आपके नाटकों तुलसी, कबीर, विवेकानंद और साहब को लोग देख रहे हैं, प्रभावित हो रहे हैं, मुग्ध हो रहे हैं पर मेरे जैसे शेखर भाई के पुराने मित्रों के आनंद की कल्पना करिए जिन्होंने इस पौधे को पेड़ बनते हुए देखा है। शेखर भाई से जब-जब मिलता हूँ मुझे अपने पिछले जन्म के अच्छे कर्मों पर विश्वास होने लगता है।

शेखर भाई, आपको पचास सालों की बधाई और आने वाले रचनात्मक समय की शुभकामनाएँ।

तुषार भाटिया
संगीतकार

Dr Chandraprakash Dwivedi

शेखर सेन,

याद है मुझे जब मैं शेखर से पहली बार मिला था। दो भाई शेखर और कल्याण, और जगह थी हमारे मित्र रमेश मेहता का घर। उन दिनो मैं चाणक्य धारावाहिक के लिए संगीतकार ढूँढ रहा था। उन दो भाइयों की विनम्रता और सादगी आज भी मुझे याद है। शायद शेखर ज़्यादा, क्योंकि उस दिन भी शेखर के हाथ वैसे ही जुड़े थे जैसे वे तुलसीदास का मंचन करते समय प्रयोग के दरमियान जोड़ते हैं, विनम्रता की मूर्ति जैसे... बात आई गई हो गई। मुझे याद नहीं पड़ता कि उसके बाद शेखर से मेरी कोई ख़ास मुलाकात कभी रही हो। एक दिन वर्षों बाद मुझे शेखर के 'तुलसीदास' देखने का निमंत्रण मिला। 'तुलसीदास' देखते समय कितनी बार भाव विभोर हुआ बताना मुश्किल है। वह किसका जादू था तुलसीदास या शेखर का - यह बताना आज भी कठिन है। प्रयोग ख़त्म होने के बाद मैं मंच पर शेखर से वर्षों बाद मिल रहा था। मेरे साथ हाथ जोड़े शेखर, तुलसीदास के वेश में खड़ा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस दिन मैंने अपने आपको शेखर के सामने बहुत छोटा पाया। प्रशंसा के शब्द नहीं थे मेरे पास और शेखर को उसकी ज़रूरत भी नहीं थी। घर लौटते समय रास्ते भर सोचता रहा कि शेखर ने वो कर दिखाया जो हम लोग करने की कल्पना कर रह जाते हैं और सच में उसी दिन मैंने तुलसीदास के साथ शेखर जैसे दोस्त को पाया, हथियार टेक दिए थे मैंने शेखर के सामने।

मेरे कई नाटककार मित्र चर्चा करते रह गए कि क्या शेखर अभिनेता है ? मैं हैरान कि देखने वाला शेखर में तुलसीदास देख रहा है और मेरे मित्र तुलसीदास में अभिनेता ढूंढ रहे हैं। अच्छा है अब तक किसी ने शेखर से अभिनेता होने का प्रमाणपत्र न माँगा, न दिया। जाने अनजाने शेखर ने भाव प्रयोग की एक ऐसी विधा को जन्म दे दिया था जिसके सर्जक भी वही थे और जिसके शिखर भी वही हैं। ख़ैर तुलसीदास देखने के बाद एक दिन शेखर का फ़ोन आया कि क्यों न हम लोग कुछ समय पर मिला करें और जब भी मिलें किसी दूसरे की निंदा न करें बल्कि कुछ रस पीयें, ग़लत न समझें - कला और साहित्य के रस से शेखर का आशय था। फिर क्या था हम सब के बड़े भाई राजेन्द्र गुप्ता के यहाँ एक दिन जमावड़ा लगा और 1998 से 'चौपाल' की शुरूआत हो गई, और यहीं से धीरे-धीरे शेखर हम सब पर छा गया। उसके बाद कबीर, फिर विवेकानंद और अब साहब।

रंगमंच और सिनेमा से जुड़े हम हम कई लोगों के लिए एक तुलसीदास चुनौती था और शेखर ने देखते ही देखते कई रचनात्मक हिमालय रच दिए, अब करो मेरा मुकाबला । और यह इतिहास शेखर ने आसानी से नहीं रचा था, गायन की प्रतिभा तो थी ही शेखर के पास, पर उसके साथ अचानक अभिनय और लेखन में कूद पड़ना किसी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं थी। इस सफलता के पीछे थी शेखर की साधना। लगभग हर दिन गायन के साथ-साथ अपने नाट्य प्रयोग का पूर्वाभ्यास किसी भी कलाकार के लिए बेहद थका देने वाली प्रक्रिया हो सकती है पर शेखर के लिए यही शब्दों और स्वरों की साधना थी। भावों और रस की गहराई में डूबना ही शेखर का आनंद था, ऐसे ही साधना के कई क्षणों में शेखर

से मैं या तो मिला हूँ या फ़ोन पर बात की है और मैं हैरान सा रह जाता हूँ कि एक दिन तुलसी, दूसरे दिन कबीर, तीसरे दिन विवेकानंद, पर प्रस्तुति में कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुलसी ने कबीर के संवाद बोले हों या कबीर ने विवेकानंद के। रंगमंच और सिनेमा से जुड़े लोग स्मृति के तारों को कसे रखने के पीछे की मेहनत को समझ सकते हैं। गायक, संगीतकार, लेखक, कवि, अभिनेता और एक अच्छा इंसान, इन सबको मिलाकर बनता है शेखर सेन। क्या अब भी कहना बाकी रह गया है कि बिरला है मेरा मित्र शेखर सेन।

भजन गायक, ग़ज़ल गायक, पड़ोसी देश पाकिस्तान की हिंदी कविता का गायक, से अपने पहचान बनाने वाले शेखर सेन को हिंदी प्रेमी और सहृदय कला रसिक अब तुलसी, कबीर या विवेकानंद के रूप में जानते हैं। बड़ी लम्बी और रोचक सृजन यात्रा रही है शेखर की और यह यात्रा अभी थमी नहीं है और न ही मुसाफ़िर थका है। अभी तो सिर्फ़ पचास बरस का हुआ है। जानता हूँ मैं शेखर की जड़ें गहरी होती जा रही हैं किसी बरग़द की तरह और सृजन का विस्तार होता जा रहा है। हल्का दिखने लगा है भारी शेखर इन दिनों, शायद ऋषि ऐसे ही बनते होंगे।

मैं बड़ा हूँ और शेखर छोटा सिर्फ़ उम्र में। मैं शेखर के पैर छूता हूँ और शेखर मेरे। हम दोनों का यही रिश्ता है। पचास वर्ष के शेखर, सावधान! वानप्रस्थ आ गया है, अब तुलसी, कबीर, विवेकानंद को जहाँ तक पहुँचा सको पहुँचने दो। अब आराम नहीं काम का समय आ गया है। कई रचनाएँ तुम्हारा दरवाज़ा खटखटा रही हैं भाई।

शुभस्ते पंथान।

डॉ. चन्द्रप्रकाश द्विवेदी
प्रख्यात अभिनेता, निर्देशक चाणक्य व पिंजर

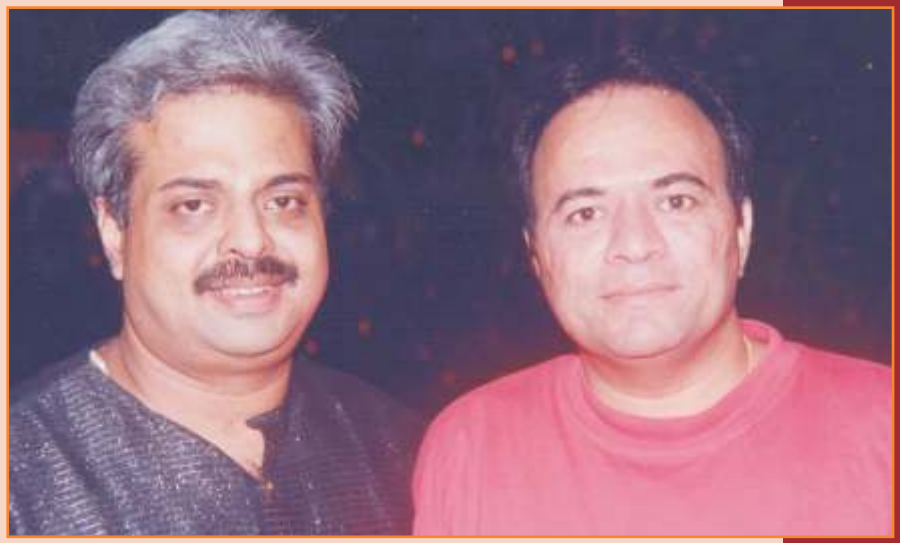

Sudheer Selot

सन् 1973 जुलाई का प्रथम सप्ताह, कमला देवी संगीत महाविद्यालय में मेरा पहला दिन, बारिश में पूरी तरह तर-बतर होकर पहुँचा, परिसर में आते ही माँ डॉ. श्रीमती अनिता सेनजी ने अन्दर बुलाया, अन्दर पहुँचकर देखा वे एक जोड़ी हॉफ़ पैंट और शर्ट तथा टॉवेल लेकर खड़ी थी। कपड़े शेखर के थे और मुझे छोटे हो रहे थे, अंततः शेखर के अग्रज के कपड़े मैंने पहने। इस तरह शेखर से पहले मेरा परिचय उसके कपड़ों से हुआ। उस समय उसके कपड़े तो मुझे नहीं हुए पर कुछ समय बाद ही शेखर मेरा हो गया।

संगीत विद्यालय में शाम की क्लासेज़ होती थी, मैं वहाँ गायन सीखने जाता था और कभी ये महाशय बाहर मिल जाते तो संगीत की कक्षा तो तीन तैरह हो जाती और क्रिकेट का सेशन पूरा हो जाता। सन् 1975 में बाबा डॉ. अरुण कुमार सेन सपरिवार गीत रामायण की प्रस्तुति हेतु इंग्लैंड प्रवास पर गए, इंग्लैंड का रंग इन साहब पर ऐसा चढ़ा कि मई जून की चिलचिलाती धूप में कभी-कभी ये काले रंग के सूट में दिख जाया करते थे।

कुल मिलाकर ये खिलंदड़े किशोर थे और इनकी शरारतों और शैतानियों का स्वाद इनके आसपास के लोगों को आज तक याद है। स्नातक कर ये मुंबई आ गए, संगीत तो घुट्टी में मिला ही था, मुंबई में संगीत की दुनिया में अपने पैर जमाने के लिये ये संघर्षरत थे। उस समय भी शेखर ने अपने आदर्शों से समझौता नहीं किया, संघर्ष के उस दौर में इसने एक अलग राह पर चलना शुरू किया और अपनी संस्कृति का परिचय लोगों से कराने का यत्न अपनी ओर से प्रारंभ किया। इस राह पर चलते पाश्च्यात वस्त्रों का त्याग, वार्तालाप में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग न हो ऐसी कोशिश, फ़िल्मों में पार्श्व संगीत देने के बजाय भजनों और अर्थपूर्ण गीतों के क्षेत्र में धीरे-धीरे अपने आपको स्थापित किया। संगीत साधक शेखर एक कर्मयोगी है और मुझे गर्व है कि उस पर मेरा एक दोस्त का अधिकार है। जब शेखर ने गोस्वामी तुलसीदास नाटक लिखा, मुझे आकर कहा मैंने नाटक लिखा है, मंचन कर रहा हूँ, तुम और आलोक इसके निर्माता हो, इस तरह 'शिल्पकार' का जन्म हुआ और मैं जबरन प्रोड्यूसर बना दिया गया। शेखर के व्यक्तित्व में एक बात है, वह है उसका आत्मविश्वास और कर्म के प्रति पूरी आस्था और लगन, इनकी क़लम से निकली कविता और कूची से जन्मी सुन्दर चित्रकारी इसके प्रमाण है। शेखर आज जिस स्थान पर है, वह स्थान उसका खुद का बनाया हुआ है।

ईश्वर उसकी आशा, विश्वास और आत्मबल को सदैव बढ़ाता जाए और उन्नति के पथ को आसान व अनुकरणीय बनाता जाए, इसकी शुभकामनाओं के साथ पचासवीं वर्षगाँठ पर बहुत-बहुत बधाई।

सुधीर सेलट
बाल मित्र एवं शिल्पकार के निदेशक

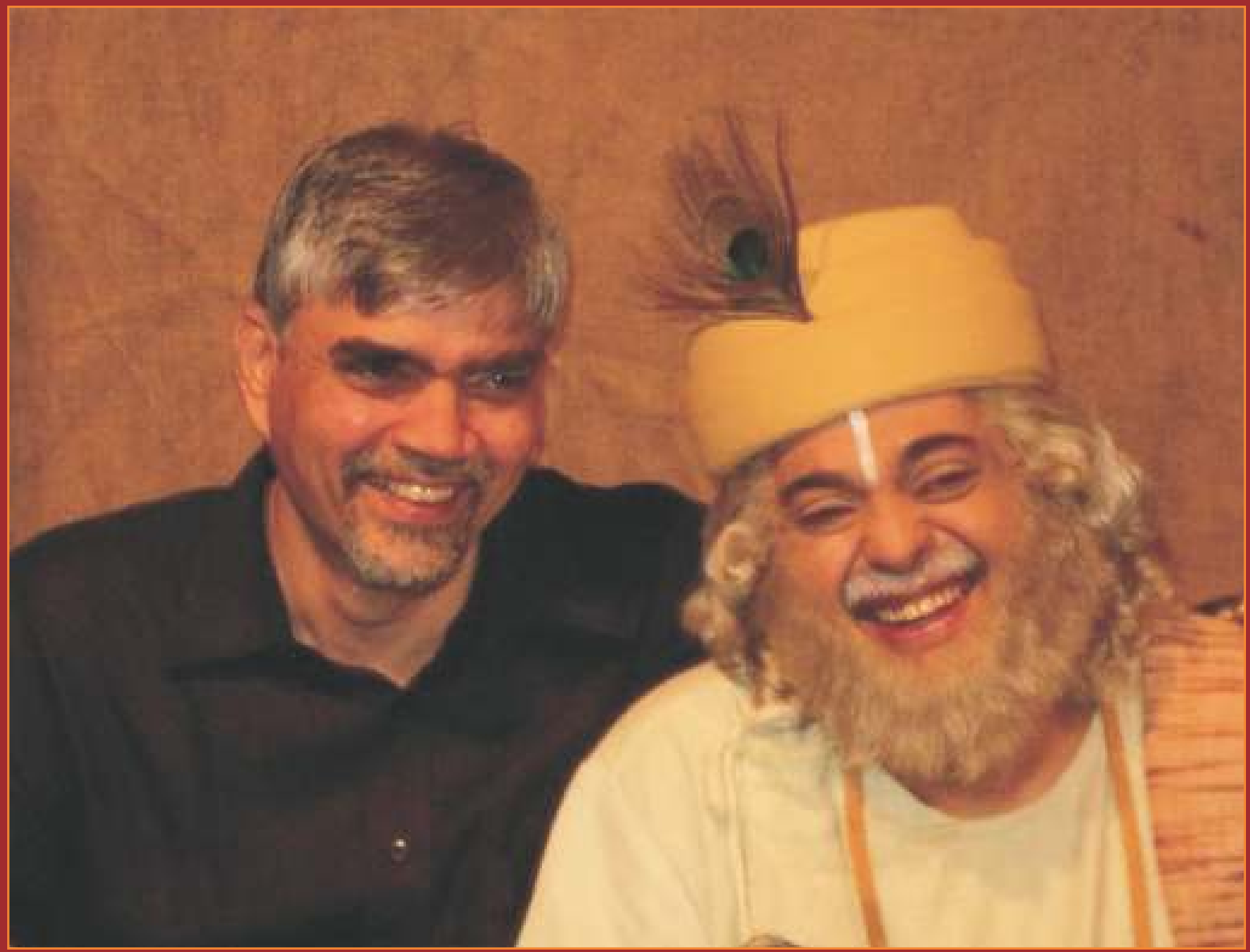

Anuradha Paudwal

The name Shekhar Sen to me is synonymous of a person, musician, artist, writer and scholar par excellence but a truly humble human being. He is a very dear family friend and my heart is filled with great warmth as I think of the wonderful musical times that we have shared. His work has been nothing but the best since the first time we met and worked together

In the mid eighties , I greatly desired to record something for Ma Kali / Devi but did not know what. It was divine intervention when I met Shekhar da with his then partner Kalyan in Indore as I had returned from the darshan of Mahakaal one of the most powerful shrines of Lord Shiva. Shekhar Da's insight helped me realise my first musical offering to Ma which was inspired by Her and in that sense She chose dada to help voice my feelings for Her through music. Durga Saptashati in Sanskrit and Hindi is to date one of the most powerful and beautiful scriptures recorded and have literally cured listeners of illnesses like depression and insomnia.

This was the beginning of an era ruled by devotional music and our association with T-Series. We recorded a hundred greatest religious works of our country like Bhagwad Geeta, Meera Bhajans, Tulsi Bhajan Amrut, Amrutvanis with scores by Shekhar da. The musical presentation was so apt that it seemed like the Gods were composing through him. We have worked on one such project called Shakti inspired by Shyama Sangeet traditional Bengali Kali Bhajans but in Hindi that also received immense love from music critics and simple devotees alike.

Fans and contemporaries are aware of dada's musical skills but little know that he is an exceptionally gifted writer, once again a reflection of his scholarly genius. In recent times he has penned and acted in wonderful one act one man plays based on lives of the greatest saints of India like Sant Kabir and scholar philosophers like Swami Vivekanand. He has pulled full houses with his superb music, excellent renditions and without over the top production and props which are the call of the

day. Infact as a fellow devotee of Dakshineshwar Kali watching his interpretation of Ramkrishna Paramhansa (Vivekanands guru) and his bhaav (emotions) for Ma Kali (the formers guiding source) reduces one to tears.

Such is Shekhar da's work that is rich in content and laced with so much emotion that it stays with you. Once again he is family and someone we are very proud of. My warmest wishes on his fiftieth birthday and hope he has a wonderful innings ahead. We need artists like him who only have the best to give the world.

Anuradha Paudwal
Noted Playback Singer

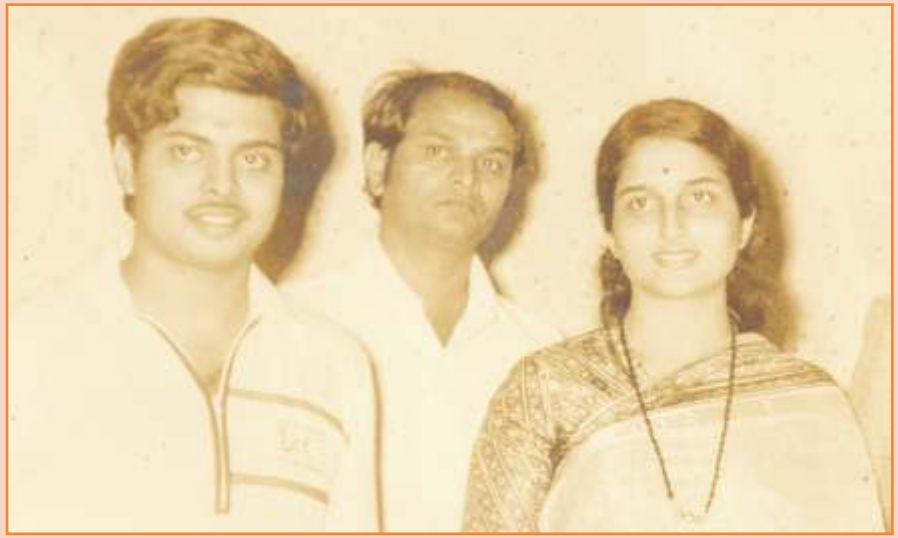

Gunwant Madhavlal Vyas

उम्र के साथ-साथ एक हद तक शरीर का क़द बढ़ना और उसी क़द के साथ 30-40-50 और आगे भी कई बरसों तक जीना आम बात है। किन्तु प्राकृतिक रूप से बढ़ी ऊँचाई से अपने क़द-पद-प्रतिष्ठा को बढ़ाना ख़ास बात है। शेखर पचास साल पूरे कर रहा है, लेकिन मैं लगातार देखता रहा हूँ कि उसने अपना क़द खुद अपनी कर्मठता और मनोयोग से पचास गुना से ज़्यादा बढ़ाया, और बढ़ाता ही जा रहा है। यह मेरे लिए बहुत ही आनन्द और आत्मीय सुख की बात है।

शेखर को एकदम बचपन से देखता चला आ रहा हूँ। बहुत चुलबुला, नटखट, शरारती, दादागिरी करने वाला और लापरवाह-सा वह बचपन में, लेकिन बेअदब नहीं था। सबको यथोचित आदर-सम्मान-प्यार देना उसके स्वभाव में था। दोस्तों में लोकप्रिय और बड़ों का प्रियभाजन था। गाने में उसके प्रतिभा दिखती थी, लेकिन यह भी लगता था कि लड़का मेहनत नहीं करता। दुर्गा महाविद्यालय में पढ़ रहा है, ऐसा सेन मा.सा. से पता लगा, मगर वहाँ तीन साल में कभी भी उसके दर्शन मुझे नहीं हुए। लेकिन कभी नहीं सुना, कि किसी क्लास में वह लुढ़क गया।

किशोरावस्था से ही वह नियम से दोस्तो को जोड़कर महफ़िल जमाता रहा था। दूसरों की रचनाएँ गाते-गाते उसकी अपनी 'उपज', उसकी अपनी सृजनात्मकता फूटने और नयी राह गढ़ने लगी थी। बाद में पिता-माता की अनुमति से दोनों भाई दूर 'परदेस' मुंबई कूच कर गये। मुम्बई पहुँचने वाले हज़ारो-हज़ार स्वप्नदर्शी युवाओं को जो संघर्ष करने पड़ते हैं, वे इन दोनों को भी करने पड़े। अन्ततः एक दो फ़िल्में मिलीं लेकिन वे डिब्बा बन्द ही रह गयीं। फिर, घोर कठिनाई भरे दिन। इन्हीं दिनों ने यह सीख भी दी कि संघर्ष से पार उतरना हो तो कुछ अलग सोचना करना चाहिए।

संगीतज्ञ कवि लेखक माता-पिता के संस्कार के कारण शेखर में साहित्य और लेखन की अभिरूचि बचपन से ही रही। पाठ्यक्रम की जगह 'पठनीय' को वह पसन्द करता था। साहित्य-कविता के मर्म में वह पैठ जाता था। तो, फ़िल्म और सुगम-संगीत से आगे काव्य-साहित्य को गेय रूप देना एक अच्छा रास्ता सिद्ध होता। सेन-बन्धुओं ने मध्ययुगीन सन्त साहित्य, पाकिस्तान की हिन्दी कविता, मीरा से महादेवी तक महिलाओं की रचनाएँ आदि के कार्यक्रम किये और उम्मीद से बढ़कर सफलता और यश कमाया। दुष्यन्त के तल्ख़ लफ़्ज़ों को 'सुरीला' बनाने का साहस भी किया। ऐसे जो भी जुगलबन्दी प्रयोग जन्मे, उनमें मेरा अपना ख़याल है कि शेखर की कल्पकता और मर्मज्ञता का योगदान मूलभूत रहा होगा।

'तुलसी' 'कबीर' 'विवेकानंद' में मुझे बचपन का अभिनेता शेखर एकदम परिपक्व प्रौढ़ दिखता है। बचपन से नकलें करने की उसकी विलक्षण क्षमता इस हद तक बढ़ी है, कि उसके ये सांगीतिक एकल नाट्य देखते महसूस करता हूँ कि तुलसी या कबीर या विवेकानंद ऐसे ही दिखते-बोलते होंगे। कई-कई पात्रों की काया में ऐसी सरलता से प्रवेश और मोचन - मन्त्रविद्ध करने वाला होता है। 'साहब' का बिल्कुल आम आदमी सारी नाटकीयता के बावजूद, शेखर को नाटक के पात्र से अलग दिखाता है।

उसकी संगीत प्रतिभा ! बेहतरीन सुगम गायक और कम्पोज़र। अब तो वह शास्त्रीय गायन और रचना भी वह वैसी ही कर रहा है। लगता है, नाटक बन्द कर गाने लगे, तो भी शेखर उतना ही यशस्वी सिद्ध होगा। बहुत ईमानदार-मेहनती है शेखर। रोज़ नियमपूर्वक अपने नाटकों के पूरे रिहर्सल और शास्त्रीय और सुगम गायन का अभ्यास वह करता है। जिससे जो अच्छा मिले, प्राप्त कर अपना कोष बढ़ाता है। क्षणशः कणश्चैव विद्यामर्यमुपार्जयेत्' सूक्ति उस पर लागू होती है। मेरी कुछ बंदिशें भी वह गाता है और ऐसी गाता है कि वे मेरे मुँह से बहुत फ़ीकी लगती हैं।

गाने को शेखर प्राणदामिनी-त्राणदायिनी-पापमोचनी विद्या मानता है, महज अर्थदात्री नहीं। उसके एक रायपुर प्रवास में जब संस्थागत घोर विपत्तियों से वह जूझरहा था, तब की एक घटना याद आ रही है। एक दिन फ़ोन किया - 'मास्साब ! आज अपन लोग पापमोचन के लिए बैठक कर लेते हैं। और कोई आये न आये, आप और मैं गायेंगे। भीषण बेसुरे हालातों में भी सुर तलाशना और ताल बैठाना उसका स्वभाव है। उसकी साहित्यिक पैठ और काव्य प्रतिभा से मैं अचंभित हूँ। 72 साल का मैं, संगीत के साथ ही साहित्य का भी विद्यार्थी रहा हूँ। मगर वह ऐसी बातें अक्सर कह जाता है, जो मैंने पढ़ी-जानी नहीं। उत्सवधर्मिता उसका आनुवांशिक गुण है। यहाँ उसने इतने बड़े-बड़े कार्यक्रम किये हैं, कि वह न करता तो ऐसे कलाकारों को रायपुर के लोग शायद ही देख सुन पाते। उसने रायपुर में हर कार्यक्रम एकदम दिये हुए समय पर शुरू करने की प्रथा का सूत्रपात किया है।

स्वभाव से विनम्र और उदार शेखर के अपनों का अति विशाल दायरा मैंने देखा है। यहाँ आता है तो सारी व्यस्तताओं के बावजूद अपने बुज़ुर्गों और दोस्तों से मिलने का समय निकालता हैं। जहाँ ज़रूरत दिखी, वहाँ यथाशक्ति मदद भी ख़ुद ही कर करता है।

कहा गया है -

'अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोवलम्॥

- जो हमेशा वृद्धजनों का अभिवादन-सम्मान तथा सेवा करता है, उसकी चार चीज़े - आयु, विद्या, बल, और यश और बल हमेशा बढ़ते रहती है।

मुझे अपार प्रसन्नता होती है यह देखकर, कि शेखर अपने गुणों से चातुर्दिक निरन्तर प्रगत है।

जीवन की अर्धशती पूर्ण करने पर, शेखर ! मेरी अनन्त शुभाशंसाएँ -

'स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्ते चिरायुरस्तु
उत्साह-शौर्य्य-धन-समृद्धिरस्तु!
ऐश्वर्यमस्त बलमस्तु रिपुक्षयोऽस्तु
वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु॥'

गुणवंत माधवलाल व्यास
पिताजी के गुरुभाई, संगीत गुरु एवं आचार्य
संप्रति : निदेशक, डॉ. अरूणकुमार सेन शोध संस्थान, रायपुर

Maya Govind

शेखर सेन मेरी दृष्टि में

इक शख़्स हमारे बीच में है
जो ऐसा है - या वैसा है
मैं भी सोचूँ वो कैसा है ?
वो किसी देवता जैसा है।

सीधा-साधा व्यक्तित्व लिये
जीवन ही जीवन दिखता है
संस्कृतियों का है इक समूह
परिवेष से भारत लगता है।

हँसमुख, विनम्र, गंभीर, मधुर
मुखड़े पर तेज़ भरे नैना
मित्रों का मित्र, सच्चा-चरित्र
उन्मुक्त हास्य, कोमल बैना।

है कण्ठ में स्वर, के सात उदधि
गायन जैसे गंगा धारा
रचनाएँ ज्ञान का निर्झर हैं
हो जाय मुदित मन, जग सारा।

अभिनय को इतना साध लिया
अभिनय अब अभिनय नहीं रहा
तुलसी कबीर साकार किये
कभी रूप विवेकानंद धरा

ऐसा विचित्र ये चित्रकार
हर चित्र में शेखर शिखर लगें
धुन स्वयं उभरती आती है
जब गीत शब्द बैचेन करें।

कान्हा की बाँसुरिया की तरह
शेखर मन चोरी कर लेता
है सामवेद सा दिव्य वेद
अंतर को पावन कर देता।

माँ और पिता दोनों ही गुरु,
गुरुओं ने ज्ञान प्रकाश दिया
आशीर्वादों की छाया में
हीरे को सहज तराश दिया।

सम्मान हृदय में भर, करता
गुणिजन, गुरुजन, सबका आदर
विदुषी, जीवन संगिनी मिली
जो स्वयं कला की है गागर।

सच्चे इंसान बहुत कम है
शेखर उनमें सर्वोत्तम है
संयम, श्रद्धा और भक्ति प्रेम
का राग, राग की सरगम है।

ये दिव्य रूप, ये दिव्य ज्ञान
ये दिव्य आत्मा का स्वरूप
बस यही सरलता, कला, सदा
तेरा दर्शाती रहे रूप।

कोई आह नहीं कोई दंभ नहीं
अधरों पर नपी तुली वाणी
अभिमान रहित आदर्शवान
उत्तम विचार, उत्तम ज्ञानी।

चुन-चुन कर शब्द भाव गढ़ लो।
शेखर का वर्णन बहुत कठिन
गुण कला कहाँ तक गिनवायें
बढ़ती जाती प्रतिपल प्रतिदिन।

अनुभव के वर्ष पचास हुए
प्रभु ने ये कृपा बरसाई है
माया गोविन्द आशीषों से
भरकर मंजूषा लाई है।

जीवन माना क्षण भंगुर है
पर कलाकार की कला अमर
तेरी कला का परचम लहराये
युग-युग तू जिये और तेरा हुनर।

ये ईश्वरीय उपहार
और वरदान की छाया बनी रहे
शेखर तेरे गीत छंद
अभिनय की माया बनी रहे।

माया गोविंद
मूर्धन्य गीतकार

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Pt. Arvind Parikh

Shekhar Sen perhaps could be renamed as “Shikhar” Sen because he has reached the shikhar or the pinnacle of the edifice of both music and theatre.

He is indeed a unique “phenomenon”, as it is on rare occasions that we experience deeply moving emotions that we feel when we witness his “one-man” shows, projecting vivid personifactions of greats of our glorious past.

The fact that he will complete 50 years of his eventful life on 16th February 2011 would indeed be a milestone of his fantastic artistic journey.

As a great admirer of Shekharji, I take this opportunity of conveying our sincere and heartfelt congratulations, as well as best wishes, for him to have a glorious future bringing joy to many of his fans and a sense of personal satisfaction to him, which every artiste experiences on achieving great heights in his endeavours, by the Grace of the Almighty.

Pt. Arvind Parikh
Sitar Maestro

Purushottam Upadhyay

रसिक बंधुओं,

किसी भी संत के पात्र को अभिनीत करना हो या गाना हो, हृदय को शुद्ध रखना पड़ता है, नहीं तो उसका असर नहीं होता। विवेकानंद, तुलसी, कबीर और साहब के एकपात्रीय प्रयोग में अभिनय क्षण मात्र को नीरस नहीं बने और आपको जकड़े रखे ये अद्‌भुत अनुभूति मैंने बार-बार महसूस की है। अगर कोई गाता हो और सुनकर मेरी अश्रुधारा बहने लगे ऐसा मेरे जीवन में केवल चार बार हुआ। पहली बार उस्ताद बड़े ग़ुलाम अली ख़ान साहब,दूसरी बार आ. दीदी लता मंगेशकर जी, तीसरी बार उस्ताद नज़ाकत अली सलामत अली और चौथी बार शेखर भाई ने तुलसी के पात्र में मुझे रुला दिया। कलाकार सरस्वती का रूप होता है, पूरा जीवन कला को समर्पित कर देना पड़ता है। मेरी स्वरबद्ध कई रचनाएँ दीदी लता मंगेशकर, रफ़ी साहब, बेग़म अख़्तर और कई लोगों ने गाई हैं। पर मुझे और श्रोताओं को भाई शेखर ने मेरी गायन की प्रतीति जो अपने गायन से कराई है, अद्‌भुत। लिखना बहुत कुछ है पर लम्बा न लिखते, समय ज़्यादा न लेते.... भाई शेखर को अगले सात जनम तक सात सुर मुबारक।

अस्तु।

पुरूषोत्तम उपाध्याय
वरिष्ठ गुजराती गायक एवं संगीतकार

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Pt. Rajan Sajan Mishra

शेखर भाई के पचासवीं वर्षगाँठ पर हमारी हार्दिक शुभकामना प्रेषित है।

इन पचास वर्षों में से संभवतः 30-35 वर्षों से हम लोगों में निरन्तर भ्राता प्रेम बरस रहा है और तब से अब तक हम एक दूसरे से निरन्तर संबंध बनाए हुए हैं जो ईश्वर की असीम कृपा से ही संभव है।

शेखर भाई एक अनूठे अभिनेता, संगीतकार, गायक, सखा और इंसान है जिन पर संपूर्ण देश को गर्व होना चाहिए। हमें तो अपने छोटे भाई शेखर पर अत्यंत गर्व है।

उनके पचासवीं वर्षगाँठ पर हमारी बहुत-बहुत प्रार्थना है कि ईश्वर उन्हें दीर्घायु करे जिससे उनकी कला का आनन्द सम्पूर्ण कला जगत को सैकड़ों वर्षों तक मिलता रहे।

राजन-साजन मिश्रा
हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की
वरिष्ठ गायक जोड़ी

Dinesh Thakur

शेखर सेन से मेरी पहली मुलाक़ात कुछ दस बारह बरस पहले हुई थी। उनके संगीत से मैं वाक़िफ़ था, उनके ऑडियो कैसेट सुन चुका था... हवा में तैरती एक तरल आवाज़, जो आपके मन-प्राण में उतर जाती है। संगीत का ये कठिन तपस्वी एक बहुत ही सरल-सहज इंसान है।

उन दिनों चौपाल की शुरूआत हुई थी और शेखर से मुलाकातें बढ़ने लगी, शेखर श्वेता, राजेन्द्र-वीणा, अशोक बिंदल, हंसमुक्ता, चन्द्रप्रकाश द्विवेदी, अतुल तिवारी और ... कुछ और दोस्त हर महीने मिलने लगे और शेखर नाम का ग्रन्थ धीरे-धीरे खुलने लगा, ये ग्रन्थ भी और ग्रंथों की तरह भारी भरकम था, कितने दुखों, कुंठाओं और संघर्षों के बावजूद उनके गीतों की तरह सरल और निश्छल।

शेखर एक जागृत कवि और लेखक भी है। उनके नाटक तुलसी, कबीर, विवेकानंद और साहब में उनकी ये प्रतिभा प्रदर्शन दर प्रदर्शन निखरती जा रही है। आज देश के हज़ारों लाखों लोग उनके अभिनय, संगीत, गायन और निर्देशन के दीवाने हैं। मैंने उनके सभी नाटक देखे हैं। लगन का पक्का है वो। उसने इस देश के रंगकर्म को एक नई विधा और दिशा दी है। उससे पहले शायद ही कभी ऐसे एकल प्रयोग हुए हों, पिछले दिनों शेखर ने अपने नाटकों को 600 प्रदर्शन पूरे किये हैं। स्वयं एक रंगकर्मी होने के नाते मैं जानता हूँ, कि ये एक बड़ा कीर्तिमान और योगदान है।

देखने में शेखर मंच पर अकेला होता है, पर उसके साथ हज़ार दर्शकों का स्नेह बराबर दिखाई देता है। शेखर सेन संगीत की एक सरल शिद्दत का नाम है, उनके गीत संगीत जन-जन के लिए होते हैं। उसे किसी भी महफ़िल में बैठा दीजिये बस फिर वहाँ कुछ भी, कोई भी सुनाई नहीं देता... महफ़िल को साथ ले चलने में वो उस्ताद हैं।

शेखर एक बहुत ही हसीन इंसान हैं, बढ़िया डिज़ाइनदार कुरते, मुँह में ख़ुशबूदार सुपारी, साथ में श्वेता..., शेखर अपने आप में एक माहौल है, इसके बावजूद वो बहुत ही विनम्र है, उसे अपने बड़प्पन का ज़रा भी एहसास नहीं है.. इस सब की वजह से हम दोस्तों को क़द भी ज़रा ज़रा बढ़ जाता है।

सुना है शेखर पचास बरस का हो गया है।

लगता है कि ये बाल सुलभ नटखट किशोर इतनी जल्दी पचास का कैसे हो गया।

शेखर जवान हो गया है।

समस्त शुभकामनाएँ।

दिनेश ठाकुर
जानेमाने नाट्य-निर्देशक और अभिनेता

Pt. Ajay Pohankar

मेरा नटखट छोटा भाई

जी हाँ, यह कहने का हक़ मुझे इसलिये है कि शेखर सेन मेरे छोटे भ्राता है। बचपन से ही हमारे पारिवारिक संबंध है। मेरी माँ डॉ. श्रीमती सुशीला पोहनकर और कल्याण-शेखर की माँ डॉ. श्रीमती अनीता सेन इन दोनों का स्नेह सगी बहनों से भी ज़्यादा था। अनीता मौसी मेरी माँ को ताई कहकर पुकारती थीं। हमारे जबलपुर के बंगले पर चाचाजी डॉ. अरुण कुमार सेन साहब और अनीता आँटी एवं कल्याण-शेखर दोनों भाई आया करते थे। शेखर तो बचपन से ही नटखट और शैतान था जो आज भी उसकी आँखों से झाँकता है। बचपन से मेरा भाई बुद्धिमान था।

सपूत के पाँव पालने में दिखाई देते हैं यह कहावत शेखर के लिये बहुत खरी उतरी।

बचपन से लोगों की नकल उतारना, अवलोकन के साथ ही शेखरजी का मन हमेशा कम्पोज़िशन करने में, गाने में लगा रहता था, इसकी वजह थी घर का वातावरण।

हमारे जबलपुर के बंगले पर कलाकारों का, साहित्यकारों का आना जाना लगा रहता था, उसी तरह रायपुर में सेन परिवार में भी यही माहौल था। शेखरजी के अवलोकन (ऑब्ज़रवेशन) करने की जिज्ञासा ने ही उन्हें आज इस मक़ाम पे लाया है। आज वे अत्यंत सफल, लोकप्रिय, कुशल दिग्दर्शक, संगीतकार, गायक व रंगकर्मी हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

कबीर, तुलसीदास जैसे महान संतों का उन्होंने अभ्यास किया है और उनके कई प्रयोग (शोज़) सफलतापूर्वक किये हैं। चाहे कबीर हो, तुलसीदास हो, विवेकानंद हो, साहब हो, इनके सारे शोज़ हाउसफुल रहते हैं।

इन्होंने अपने जीवन के 50 साल पूरे किये हैं। उनको ईश्वर अच्छी सेहत दे, ख़ूब नाम दे, शेखर को हमेशा हँसमुख रखे, मेरे भाई श्री शेखर सफलताओं के उच्चतम शिखर पर पहुँचे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

अजय पोहनकर
शास्त्रीय संगीत के वरिष्ठ गायक एवं पारिवारिक मित्र

सुशीला ताई पोहनकर से सीखते हुए

Anup Jalota

प्रिय शेखरजी,

आपने एक नई राह बनाई है।

राह कठिन है लेकिन आप मंज़िल तक पहुँच गए हैं। संवाद भी सधे रहें और स्वर भी न बिखरे, ये कला तो कोई आपसे सीखे। एक ही व्यक्ति में, कवि, गायक, संगीत निर्देशक, अभिनेता छुपा हो और सफलता भी क़दम चूमें.... ऐसे कलाकार बिरले ही होते हैं।

आप जैसे व्यक्तित्व को मित्र रूप में पाकर मैं धन्य हूँ।

आपका एक फ़ैन

अनूप जलोटा
सुविख्यात भजन गायक

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Pt. Ronu Majumdar

Shekhar Da is a genius in many aspects of Art. I know him for last 25 years and always found him in search of new art forms. His contributions are beyond any category or any form of music. He has a power of changing any human being's life or thinking.

I share a very loving relationship with him and Shekhar Da has always loved me as his younger brother.

I am so happy that he is in his Fiftieth year of his life, carrying all the glories along.

May God give him the strength and good health to serve the world for another Fifty years and much more with his phenomenal talent.

Ronu Majumdar
Noted Flautist

Pt. Ajoy Chakrabarty

My very best wishes and prayers for SHEKHAR SEN

Shekhar Sen is a fabulously iconic name shining like a polestar in today's musical firmament. God gave us some rare artistes dropped on earth but Shekhar I trust is one of the rarest of them a who's who in the contemporary musicopedia, an amazing bewilderment as to how he talks, sings and portrays the enactment of the personality he represents on stage in the same breath. Audience-cum-spectators get riotous in splitting their moments in relishing the intellect of his audio-visual chemistry.

Shekhar makes his audio-viewers believe seeing a perfect Kabir, Tulsidas or Swami Vivekananda moving alive on stage with the tradition of their ancient days and time. How easily he can sink down in oblivion throughout the length of the show is really a lesson for all who work for an art form in right earnest.

A few thousand songs are in his possession that he can perform with his honey sweet voice at any given point of time recalling from his memory without bothering for a note pad or a script for the dialogues.

Shekhar, as far as I could observe him, is a great human soul in the first place besides being an incredible thinker, singer and actor. He is well versed in Hindi, Awadhi, Sanskrit and in many other branches of Indian language. He was very well born in the family of his highly attained parents. Personally I had a long association with his parents when they used to live in Raipur of Madhya Pradesh. His father was a very good musician and a musicologist, and his mother was a very good Thumri singer. No wonder why a delectable mix of various “Rasas” like, Bhakti, Sringar, Prem, Batsalya plays so delicately in all renderings of Shekar Sen.

A recent statistics say his musical productions have reached certain milestones, but I pray to the almighty that his count takes flight to the scores of thousands, and Shekhar remains vibrant in his skills and health and treads the path that angels fear to go for a minimum of a century to come.

Pt. Ajoy Chakrabarty
Renowned Classical Vocalist

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Dr. N. Rajam

The moment I think of Shekhar Sen, the theatre personality and musician par excellence, the picture that comes to my mind is that of the young kid in shorts coming to receive me at the railway station whenever I used to go to Raipur for participating in the music festivals organized by his revered father Pt. Arun Kumar Sen. I have always seen him as an enthusiastic kid moving around musicians and the festival promises during the events.

It makes me very proud to see him grow from that stage to the stature of an outstanding artist in the fields of music and theatre. I have had occasions to witness his masterpieces "Kabeer" and "Saahab", and to put it in a nutshell, it was a stunning experience. I was immensely impressed by his extraordinary talent both as a musician and actor. His diction, command over language, depth of his presentation, deep research into the subject-matter of the play, his ready wit and humour and the deep values communicated to the viewers are all simply marvelous. Glued to the seat, watching him perform on the stage, one becomes oblivious of time. Only one who is into it would know what a difficult job it is to sing on the stage and immediately switch over to speaking. His performance totally grips the audience and it is indeed a great pleasure to watch him perform on the stage with complete involvement. What is particularly noteworthy is the fact that at a time when values and standards in the entertainment field is at a discount, Shekhar has succeeded in providing meaningful entertainment to viewers upholding high & deep values and standards of performance. He is indeed doing a yeoman service in the field of music & theatre by presenting shows aimed at uplifting mankind.

While thus being superb on stage, he is equally a master performer off stage too. A conversationalist par excellence, he makes his listeners laugh their sides out reaching to his instant and thought provoking jokes and puns. His sense of humour makes him the centre of attraction in whatever company he mingles with. It is a pleasure to be with him watching him spread happiness and joy all around. Is this not what every human being craves for ultimately!

Wishing Shekhar all the very best in life during his Golden Jubilee year and thereafter.

Dr. N. Rajam
Violin Maestro

13 दिसम्बर 2001 को लखनऊ से (उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रदत्त) ये पुरस्कार लेकर
14 दिसंबर 2001 लौटा, विमानतल से मुंबई घर आते हुए पिताजी के निधन का समाचार मिला

Nitin Mukesh

शेखर तुम पचास के हो रहे हो ? और मेरा मन मुझको 25 साल पहले ले जा रहा है। 1986, एच.एम.वी. में पं. नरेन्द्र शर्मा और वी.के. दुबे साहब ने मिलवाया था। 'मीट शेखर कल्याण, ये दोनों भाई सुन्दर कांड कम्पोज़ करेंगे', पहली बार मैंने देखा था तुमको। पहले मुझे लगा ये नए लड़के क्या न्याय कर सकेंगे सुन्दर काण्ड जैसे प्रोजेक्ट के साथ, पापा की तुलसी रामायण की अपार सफलता के बाद, मैं इस प्रोजेक्ट से उत्साहित भी था और अन्दर से कहीं थोड़ा चिंतित भी। फिर लगा ये मुझसे छोटा है जैसा चाहूँगा इनसे काम करवा लूँगा। पर जब रिकॉर्डिंग का काम शुरू हुआ तो हम सब अलग धरातल पर थे। शब्द और साहित्य की तुम्हारी समझ, रिकॉर्डिंग की प्रक्रिया में तुम्हारे धैर्य और सांगीतिक प्रतिभा ने धीरे-धीरे मुझे तुम्हारा क़ायल बना दिया।

महीनों तक चले सुन्दर काण्ड के लिए मैंने जितनी मेहनत और निष्ठा से गाया है, मुझे नहीं लगता कि मेरे किसी सफल फ़िल्मी गाने के लिए भी मैंने कभी इतनी मेहनत की हो। पर मुझसे ये करवा लेने का श्रेय मैं पूरी तरह से तुम्हारे स्नेहपूर्ण व्यवहार को दूँगा। मेरी रेंज का ध्यान रखना, उच्चारण के लिए सजग रहना, और कभी अगर मेरी आवाज़ में थकन दिखती तो तुम झट कहते नितिन दा ये चौपाई कल रिकॉर्ड करेंगे, शायद इसीलिए तुम मेरे सबसे प्रिय संगीतकार बन गए।

उसके बाद फिर 'नेहांजलि', 'नमन', 'सुन लो पावन राम कहानी' जैसे कितने सारे एल्बम हमारे साथ मैंने किये, फिर जब तुमने संगीत निर्देशन बंद करके नाटकों की प्रस्तुति शुरू की तो सच जानो उसके बाद से मैंने भी भजन की रिकॉर्डिंग नहीं की। तुम्हारे नाटक देखकर जहाँ मैं कई बार अश्रुपुरित नेत्रों से अभिभूत होता रहा, वहीं याद करता रहा वो समय, जब सुन्दर कांड की रिकॉर्डिंग के भोजन अवकाश में हम लोगों का मिमिक्री का सत्र चलता था, पर तब ये पता नहीं था कि तुम अपनी प्रतिभा को ऐसा आकार दे दोगे।

तुम्हारे अभिनय में, संगीत रचनाओं में और ख़ासकर तुम जब गाते हो तो तुम्हारे स्वरों में एक ईश्वरीय स्पर्श का अनुभव बार-बार किया है मैंने। तुम्हारा संघर्ष मैंने देखा है अपनी मेहनत से उन्नति के रास्ते पर तुमको आगे बढ़ता देखा है। सच बहुत मुश्किल है, तुमको अभिव्यक्त करना, शेखर तुम क्या हो ? श्रेष्ठ संगीतकार हो, श्रेष्ठ गायक हो, आशु कवि हो, निपुण लेखक हो या कुशल अभिनेता, एक अच्छे स्नेही, विनयी, उदार हृदय इंसान हो या शायद एक संपूर्ण कलाकार को जैसा होना चाहिए, तुम उसकी मिसाल हो। पर इस सब से ऊपर मुझे ये गर्व है कि तुम मेरे छोटे भाई हो और जिसे मैं सबसे क़रीब से जानता हूँ।

नितिन मुकेश
सुविख्यात पार्श्वगायक

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

K avita K rishnamurti

I met Shekhar Sen probably two decades ago. I was a playback singer, and he was introduced to me as a singer-composer with a very strong background of classical music and an astonishing mastery over Hindi. Subsequently on a few occasions we shared the same concert platform and I also sang a few of his compositions. I have great respect for his artistry, dedication and individuality. He has evolved into an artist who has found his true expression in his one man stage portrayals of Shree Tulsidas, Shree Kabeer (which I had the privilege of attending) He lives the role of the character he portrays and sings with great devotion and expression. This could be achieved only by someone who is passionate about his beliefs, dedicates his life to years of research and has a complete command over his language. Shekhar Sen has all these marvelous qualities.

I wish him all the very best in life. He has many more milestones to conquer and I truly believe that his dedication and sincerity will lead him down the path of achievement and success.

Kavita Krishnamurti Subramaniam
Noted Playback Singer

शेखर 50
शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Udit Narayan

शेखर भाई,

मुंबई में आपसे मेरी पहली मुलाकात 1979 में सान्ताक्रुज़ के आपके घर पर हुई थी। मैं यह सोचकर गया था कि किसी गुणी गायक व संगीतकार से मिलने जा रहा हूँ। बहुत अच्छा लगा था आपसे मिलकर, आत्मीयता और अपनापन पाकर। आप और मैं दोनों उस समय मुंबई में नये-नये थे।

फिर ऐसा वक़्त भी आया, जब एच.एम.वी. के लिए आपने मेरी आवाज़ में 'भजन वाटिका' एल्बम कम्पोज़ किया। फिर उसके कुछ साल बाद ग़ज़ल का एक और एल्बम 'सावन की बदली' भी आपने स्वरबद्ध किया था। मेरे शुरूआती दिनों के कॅरियर को एक अच्छी सीढ़ी मिली थी।

पिछले 32 सालों से आपके साथ मेरा वही प्रेमभाव, वही स्नेह बना हुआ है। फिर जब तुलसी, कबीर, विवेकानंद और साहब जैसे नाटकों की सफलता से आपको प्रसिद्धि मिली और लोग मुझे आकर कहते हैं कि कितने अच्छे गायक, संगीतकार और अभिनेता हैं शेखर सेन, तब मुझे गर्व होता है कि आप मेरे अपने हैं।

आपको पचासवें जन्मदिन की हार्दिक मुबारकबाद। शेखर भाई आप अच्छा काम कर रहे हैं, भारत की संस्कृति को पूरी दुनिया में फैला रहे हैं। आपके जैसे दोस्त पर मुझे नाज़ है, फ़ख्र है।

उदित नारायण
सुविख्यात पार्श्वगायक

Roopkumar Rathod

'असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

शेखरजी के गुणों का बख़ान करने बैठूँ तो शायद एक किताब भी कम पड़े। संक्षिप्त में कहा जाए तो सारे 'नवरसों' से भरा इनका संगीत और जीवन है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी शेखर जी को मैं शत्-शत् प्रणाम करता हूँ। आज के इस व्यस्त जीवन में प्राचीन संत कवियों को पुनर्जीवित करना और नयी पीढ़ी को उनसे परिचित करवाना, इसका श्रेय एकमात्र शेखरजी को जाता है। इस तरह की गंभीर प्रस्तुतियों के लिए गंभीर अध्ययन और संगीत में महारत चाहिए जो शेखरजी को विरासत में मिला है। INDIAN THEATRE में उनके एकपात्रीय नाटक किसी INTERNATIONAL BROADWAY से कम नहीं है। मेरी हर सुबह उनके भेजे जोक्स से होती है जिसमें उनको निपुणता हासिल है। मुझे फ़ख्र है कि वो मेरे मित्र हैं... मेरी शुभकामना सदैव उनके साथ रहेगी।

रूपकुमार राठौड
सुप्रसिद्ध गायक एवं संगीतकार

Sonu Nigam

शेखर सेनजी को जब सर्वप्रथम महाकवि तुलसीदासजी के स्वरूप में मंच पर प्रकट होते देखा तो सबसे पहला विचार जो उत्पन्न हुआ वो था ये कि क्या ये वही गायक व संगीतकार शेखर सेन हैं जो टी-सीरिज़ के ऑफ़िस में यदा-कदा मिलते रहते हैं। सीधे-सादे कुर्ते पायजामे में (पेंट शर्ट में तो कभी उनकी कल्पना भी नहीं की) होठों पर शुद्ध हिंदी के सुन्दर शब्द लिये, यहाँ वहाँ अपनी व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ बिखेरते हुए एक ऐसा व्यक्तित्व जिसके बारे में कभी सोचा भी नहीं जा सकता कि वह एक अभिनेता भी हो सकता है।

परन्तु उनका स्वरचित एकपात्रीय यह नाटक देखकर आँखों पर पड़े कई पर्दे खुल जाते हैं। कैसे, कैसे एक व्यक्ति जिसने सारी ज़िंदगी गायन व संगीत का रियाज़ किया हो, इतना दृढ़ अभिनय कर सकता है ? इतना बड़ा लम्बा आलेख लिखना (कल्पना मात्र ही कठिन है) फिर उसे अपनी आत्मा, अपनी नस-नस में, अपनी साँसों में, कुछ इस तरह बसाना कि भूलकर भी भूला ना जाए, फिर उपयुक्त दोहे को चुनना अपने संगीत में ढालना अपने आप में एक अघटित घटना है। आज की तेज़ रफ़्तार में भले ही पूरे 100 प्रतिशत लोग इस अभूतपूर्व प्रयास को थियेटर में जाकर न देख पाएँ परन्तु जो भाग्यशाली दर्शक देख पाएँगे, देख चुके हैं व देखते रहे हैं उनके लिए यह सम्पूर्ण जीवन में याद रहने वाली घटना है। शायद शेखरजी स्वयं नहीं जानते कि वे क्या कर बैठे हैं।

सोनू निगम
सुविख्यात पार्श्वगायक

पं जसराज और निदा फाजली जी के साथ

Sunali Rathod

हुजूमे बुलबुल हुआ चमन में किया जो गुल ने जमाल पैदा।
कमी नहीं क़द्रदाँ की अकबर करे तो कोई कमाल पैदा ।।

हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में शेखरजी ने कुछ ऐसा ही कमाल कर दिखाया है जिससे हर क़द्रदाँ वाह! कह उठता है। 1980-90 के दरमियान जब ग़ज़ल अपने उरूज़ पर थी तब भजन गायकी भी काफ़ी लोकप्रिय होने लगी। म्युज़िक इंडिया कंपनी की तरफ़ से मुझे कुछ भजनों का ध्वनि मुद्रण का प्रस्ताव मिला और चूँकि बचपन से मेरा रूझान संत कवियों के प्रति था, मैंने भी चाह की मैं मीरा, सूर, कबीर जैसे कवियों को गाऊँ। उसी वक़्त मेरी मुलाकात शेखरजी और उनके भाई कल्याणजी हुई और उन्हीं के संगीत निर्देशन में मैंने मेरा पहला भजन एल्बम 'भजन कलश' रिलीज़ किया जो संयोग से शेखर-कल्याण का भी पहला एल्बम हुआ। शेखरजी के साथ पहले दिन से ही बड़ी अच्छी दोस्ती हो गई। न ही सिर्फ़ बेहतरीन गायक और कम्पोज़र लेकिन वो एक बेहद मज़ाकिया क़िस्म के इंसान है। गंभीर बातों को सहजता से और हँसी में कह जाने की उनकी आदत थी। एक दिन मैं रिकॉर्डिंग के समय कुछ सुस्त हो रही थी, सुर भी नहीं लगा रहा था तो उन्होंने झट से तानपुरा मँगवाया और कहा कि अब तानपुरे के साथ गाइए, बस सारा मामला सुर में आ गया। मैंने कुछ नर्वस होकर पूछा कि क्या सुर ठीक लग रहा है ? तो कहने लगे अजी सुर में आवाज़ भीग रही है। वो इतने सुलझे हुए कलाकार हैं कि न ही सिर्फ़ स्वयं का गाना लेकिन दूसरे कलाकारों से भी कैसे अच्छा से अच्छा काम निकलवाना है ये वो बख़ूबी जानते हैं। मेरे जैसी नई गायिका से उन्होंने जो भजन रिकॉर्ड करवाए वो मैं आज तक सुनना पसंद करती हूँ, नहीं तो आम तौर पर गायक अपना पुराना काम पसंद नहीं करते। उन्हें ये लगता है कि कोई न कोई त्रुटि रह गई है। आज जब मैं अपनी संगीत यात्रा के पथ पर एक लम्बा अरसा गुज़ार चुकी हूँ तो फिर एक बार शेखरजी से अनुरोध है कि एक और सुरीला एल्बम हो जाए।

उनकी पचासवीं वर्षगाँठ पर उनको ढेर सारी बधाइयों और अनेक शुभकामनाओं के साथ ....

सोनाली राठौड़
प्रसिद्ध गायिका

Ila Arun

.... विचित्र किन्तु सत्य

लेखक, गायक, अभिनेता, निर्देशक सब कुछ एक साथ ? एक व्यक्ति द्वारा ? एक मंच पर ?

ग्वालियर घराने की शास्त्रीयता में दीक्षित शेखर ने कबीर, तुलसीदास जैसे कवियों पर अपनी अनोखी सांगीतिक नाट्य प्रस्तुति दी।

इनकी तुलसी और कबीर की अद्‌भुत प्रस्तुतियों ने एक इतिहास रचा है।

लोक और शास्त्रीय संगीत के इस अलौकिक मेल में सजी ये प्रस्तुतियाँ अपनी मिसाल खुद ही है।

शेखर सेन में माटी की गंध और शास्त्रीय संगीत की ऊँचाई व अभिनय के साथ है इसीलिए विचित्र व अद्‌भुत है।

इनकी पचासवीं जन्मतिथि पर अनेकानेक बधाई देती हूँ और चाहती हूँ कि ईश्वर उन्हें अगले सौ सालों तक इसी तरह रचनात्मक और सुरीला बनाए रखे।

इला अरुण
मूर्धन्य अभिनेत्री एवं गायिका

Kumar
Sanu

Durgaprasad Mujumdar

शेखरजी आप भी यार संकट में डाल देते हो, आपसे मैं कब मिला ? आपको तो याद नहीं होगा पर पहली बार मैं मिला था आपसे कलकत्ता एयरपोर्ट पर हरीओम शरणजी के साथ। फिर रोनू के परिचय कराने पर 1987 में ही आपकी सुंदर कांड की रिकॉर्डिंग में तबला बजाने आया था। सच कहूँ तो मेरे भाग्य का दरवाज़ा खुल गया था उसके बाद से। शेखरजी के साथ मैंने भारत, यूरोप और अमेरिका में सैकड़ों कार्यक्रम किये और उनके साथ मेरा रिश्ता केवल तबलावादक का न रहकर एक घनिष्ठ मित्र का हो गया था जो आज तक क़ायम है। फिर हमने भागीदारी में 'दिशा रिकॉर्डिंग स्टूडियो' भी साथ बनाया था।

एक घटना याद आ रही है, एक बार मैं और शेखरजी जर्मनी से बेल्जियम जा रहे थे यूरो रेल से, पाँच स्टेशनों पर ट्रेन बदलते हुए। आखरी ट्रेन बदलकर कोलोन स्टेशन पर मैं सिगरेट पीने उतरा, जर्मन भाषा में अनाउंसमेंट हुई, अपने राम मस्ती में... आँखों के सामने ट्रेन का ऑटोमैटिक दरवाज़ा बंद हो गया। मैं प्लेटफ़ॉर्म पर और शेखरजी ट्रेन में। दोनों के टिकट व पैसे मेरे पास और दोनों के पासपोर्ट शेखरजी के पास। टिकट चैक करने वाली जर्मन कंडक्टर ने दो तीन बार टिकट माँगी, शेखरजी मुझे पूरी ट्रेन में ढूँढ रहे थे, फिर किसी ने बताया OH! THAT SHORT INDIAN MAN? OH! HE MISSED THE TRAIN.

शेखरजी ने टिकट कंडक्टर को बताया कि मेरा साथी कोलोन स्टेशन पर रह गया है, टिकट उसके पास है और पासपोर्ट मेरे पास। उस जर्मन कंडक्टर ने कहा कि 'बिना टिकट आप पासपोर्ट के साथ यात्रा कर सकते हैं पर बिना पासपोर्ट आपके साथी का बेल्जियम में प्रवेश ग़ैरकानूनी होगा, बेहतर होगा कि आप जर्मनी के अंतिम स्टेशन 'आखेन (AACHEN) पर उतर जाओ'। जर्मन कंडक्टर ने शेखरजी को दो सूटकेस, हारमोनियम और तबले के बैग के साथ 'आखेन' में उतार दिया। शेखरजी ठण्ड में ठिठुरते हुए उस गाँवनुमा स्टेशन के स्टेशन मास्टर के पास गए, किसी तरह पूरी घटना समझाई तो उसने अंदाज़े से कोलोन के स्टेशन मास्टर को फ़ोन लगाया, उस समय मैं भी संयोग से कोलोन के स्टेशन मास्टर को अपनी समस्या बता रहा था, खैर दो घंटे बाद की ट्रेन से मुझे बिठाया गया। उधर शेखरजी अकेले 'आखेन' स्टेशन पर 4 बड़े सामान के साथ ठिठुर रहे थे, तभी एक अस्सी पार की बेल्जियन बुढ़िया लाठी टेकते हुए आई और उस स्टेशन के इकलौते बेंच पर शेखरजी के पास आकर बैठ गई। 'राम मिलाई जोड़ी-एक भटका एक बूढ़ी'। शेखरजी ने उससे अंग्रेज़ी में बात शुरू की, बूढ़ी अम्मा बेल्जियन में जवाब दे रही थी, शेखरजी ने सोचा ये जब अपनी भाषा में बात कर रही है तो मैं क्यूँ अंग्रेज़ी बोल रहा हूँ, बस शेखरजी ठेठ देसी भाषा में शुरू हो गए, 'अउर अम्मा जी का हालचाल है' अगले दो घंटों तक ये दोनों सांकेतिक भाषा का सहारा लेकर अपनी अपनी भाषा में बतियाते रहे।

ऐसे ही 1995 में मुंबई एयरपोर्ट पर मैं और शेखरजी अमेरिका से दो महीने की यात्रा कर लौट रहे थे, हमारे पास काफ़ी सामान था जो हम रेकॉर्डिंग स्टूडियो के लिए लेकर आए थे। हम

सीधे रेड चैनल से गए ताकि टैक्स भर सकें पर कस्टम अधिकारी मेरी कोई बात नहीं मान रहे थे, हमारे ओरिजनल बिल को झूठा ठहरा रहे थे। मैं पसीना पसीना हो रहा था, मैंने शेखरजी को बंगला में कहा आप कुछ करो, इन को सम्हालना मेरे बस का नहीं। शेखरजी ने अचानक एक कस्टम अधिकारी से कहा 'भाई साहब एक मिनट आपका हाथ देख सकता हूँ?' शेखरजी ने उसका हाथ लेकर रेखाएँ पढ़नी शुरू कीं फिर धीर गंभीर स्वर में कहा 'आपका प्रोमोशन कई सालों से रूका हुआ है, शनि की दशा चल रही है' बस ये सुनना था कि, कुरते पायजामे वाले तिलकधारी शेखरजी के पास सारे कस्टम अधिकारी जमा हो गए और ताज़े ज्योतिषी बने शेखरजी महाराज की कृपा से हमारा काम अधिकारिक रूप से हो गया। शेखरजी की अभिनय प्रतिभा का पहला साक्षात्कार मुझे तब हुआ था।

कितनी घटनाएँ याद आ रही हैं, अमेरिका में शेखरजी का सबको खाना बना के खिलाना, 'दुर्गा सप्तशती' की रेकॉर्डिंग में 28 मात्रा के ब्रह्मताल में आपकी कम्पोज़िशन, 2-2 महीने तक पैसे बचाने के लिए हम दोनों का 50 पेंनी (आधे डॉलर) की एक कप चाय बाँट कर पीना। सब याद करने बैठूँ तो उपन्यास ही हो जाए, बस ये दुआ है कि आप स्वस्थ रहें और आपके पचहत्तरवें जन्मदिन पर भी मैं संस्मरण लिख सकूँ।

दुर्गाप्रसाद मजुमदार
प्रसिद्ध तबला व पखावज वादक

Surendra Sharma

शिखर सेन....

शेखर को मैं तब से जानता हूँ जब ये एक भजन गायक थे और भजन भी उन काव्य ऋषियों के, जिन्हें दूर दूर तक किसी ने स्वर देने की कोशिश नहीं की। क्योंकि उन गायकों के पास भजन गाने की क्षमता तो थी पर उन शब्दों के मर्म तक पहुँचने का सामर्थ्य नहीं था। अब उदाहरण के लिए ललित किशोरी जी के उसी छंद को ले लें जो कृष्ण के नयनों पर है। उस छंद को जिस सहजता और तन्मयता से शेखर सेन ने निभाया है, उसे आज देश का कोई भी गायक नहीं गा सकता। भजनों के अलावा इन्होने कई साहित्य ऋषियों की अप्रतिम रचनाओं को भी अपने स्वर दिया। देश में जितने भी भजन गायक हैं वे जब शुरूआत करते हैं तो मन से गाते हैं... और सफल होते ही मुँह से गाने लगते हैं।

शेखर सेन उन लोगों में से हैं जिन्होंने अपनी सफलता को अपने क़दमों तले ही रखा, अपने सर नहीं चढ़ने दिया। कबीर की प्रस्तुति के पूर्व शेखर एक बार मेरे घर रुके और मेरे ही बेडरूम में बिना संगीत के उन्होंने कबीर की अद्‌भुत प्रस्तुति दी। दर्शकों में मैं, मेरी पत्नी, मेरी बेटी और मेरी माँ थीं। और शेखर की स्वर लहरी के साथ-साथ हम चारों की आँखों से जो अश्रुओं की रसधार बही, वो इस बात का सूचक थी कि कम से कम एक गायक तो हमारे दौर में ऐसा भी है जो एक साथ 3-3 पीढ़ियों को सम्मोहित करने की क्षमता रखता है। मैं उन सौभाग्यशाली लोगों में से हूँ जिसने इस रायपुर घराने की विलक्षण प्रतिभा के पिताश्री और माताश्री को श्रवण करने का सौभाग्य भी प्राप्त किया है।

लोग 100 साल की बेवजह की ज़िंदगी को ढोते रहते हैं और एक कलाकार महज़ 50 साल की उम्र में एक शताब्दी को जी लेता है। तब ये कहना पड़ता है कि ज़िंदगी कितनी जी, ये महत्वपूर्ण नहीं है, पर ज़िंदगी कैसे जी रहे हैं ये महत्वपूर्ण है। मैं शेखर सेन को शिखर पर पहुँचने वाली क्षमताओं वाला 'शिखर सेन' ही कहना चाहूँगा।

सुरेन्द्र शर्मा
सुप्रसिद्ध हास्य कवि

शेखर सेन... दुर्गा महाविद्यालय वार्षिकोत्सव में नाटक 'राम मिलाई जोड़ी' में (1977)

Narhari Patel

पाकें लेकिन थाकें नहीं शेखर सेन

शेखर सेन ने अपने माता-पिता और गुरुजनों से प्राप्त कला संस्कारों को अपने पुरुषार्थ से निरंतर विकसित किया। कला मंच पर मैंने एक से अनेक बार शेखर भाई को कबीर, तुलसी और विवेकानंद का स्वांग धरते देखा। जब भी आपकी प्रस्तुतियों को देखकर सभागार के बाहर आया तो लगा कि शेखर सेन से नहीं इन तमाम महापात्रों से भेंट हो गई। इन प्रस्तुतियों में शब्द, स्वर, ध्वनि और अभिनय का अद्‌भुत संयोग रचकर इस बेजोड़ कलाकार ने नायाब मिसाल क़ायम की है। हिन्दी पट्टी में ऐसे कम ही कला साधक हैं जो अभिनय और संगीत दोनों विधाओं में साधिकार काम कर रहे हैं। दरअसल शेखर सेन की कला में ऐसा नयापन, व्यंजना, आनंददायी और रस माधुर्य है जो शनैःशनैः दुर्लभ या लुप्त होता जा रहा है। शेखर सेन से जब भी रूबरू होने का मौक़ा मिला तो मुझे उनमें एक ईमानदार उपासक के दर्शन हुए। यही उपासना शेखर भाई के सुयश और प्रसिद्धि का कारण है।

शेखर सेन के 50वीं पायदान पर आने की बेला में कामना यही है कि वे दीर्घायु हों लेकिन थाके (थके) नहीं; पाके (परिपक्व) बने रहें।

अशेष मंगलकामनाएँ।

नरहरि पटेल
वरिष्ठ रंगकर्मी, कवि एवं प्रसारणकर्ता

Devki Pandit

शेखरजी से मेरी पहचान 'कबीर' के माध्यम से हुई ये कहते हुए मुझे बड़ा आनंद हो रहा है। एक यह भी सच है कि 'संत कबीर' की व्यक्तिरेखा, उनकी पहचान सजीव रूप से शेखर सेन जी के ही द्वारा हुई। संगीतकार गायक के रूप मे मैं उन्हें बहुत सालों से जानती थी, उनके संगीत को रचनाओं को मैंने हमेशा सराहा है। हर कलाकार की सही पहचान केवल उसकी अंगभूत कला ही होती है, स्वयं कलाकार भी यही चाहते हैं कि वह अपने काम से, कला से जाने जाएँ। कला एक माध्यम है जहाँ हम अपनी संवेदनाओं को, भावनाओं को, सौन्दर्यपूर्ण पद्धति से प्रस्तुत कर सकते हैं यही सौन्दर्यपूर्ण प्रस्तुतिकरण कलाकार को सिद्ध करता है, उसके अस्तित्व का प्रमाण देता है। करने वाले की कला होती है, शायद यही अंतर कलाकार और कलाप्रेमी होने में है। कलाप्रेमी को कलाकार बनने के लिए साधना, गुरु और ज्ञान, धीरज और श्रद्धा की आवश्यकता होती है। अपने कला गुणों को सँवारने में सारा जीवन भी कभी कम लगने लगता है।

शेखरजी को निःसंदेह अपने कलागुण धरोहर के रूप में मिले अपने माता-पिता से, किन्तु सम्पूर्ण कलाकार में परिवर्तित होने की हर साधक की मनीषा होती है। इसे पाने के लिए तपस्या साधना की आवश्यकता होती है। मैंने शेखरजी में एक सम्पूर्ण कलाकार को पाया जब मुझे कबीर का अनुभव प्राप्त हुआ।

संगीत चित्रकला नृत्य साहित्य, यह सारे कलाप्रकार अपने आप में स्वतंत्र अभ्यास और साधना के विषय हैं एक ही विषय में निपुणता प्राप्त करना बहुत मुश्किल और कठिन काम है। गुणीजनों ने अपनी प्रतिभाओं से इन सारे कला प्रकारों में अपना अनमोल योगदान दिया है। आश्चर्य की बात यह है कि शेखरजी न सिर्फ़ अच्छे संगीतकार गायक हैं, बल्कि साहित्य, संत साहित्य, काव्य, अभिनय, नाट्यकला इत्यादि सारे क्षेत्रों में निपुण हैं। भिन्न कला प्रकारों का पथ अलग होते हुए, अंतिम लक्ष्य एक है। वह कहीं जाकर एकदूसरे में घुल जाते हैं, अपनी भिन्नता खोकर एक हो जाते हैं, इसी 'एक' में आध्यात्मिकता का बीज है। शेखर सेनजी हमारी पीढ़ी के ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने भिन्न कला प्रकारों को समझकर, जानकर, एक नए कलाविष्कार को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है। केवल कबीर ही नहीं, विवेकानंद, तुलसी और साहब भी उनकी प्रतिभा का प्रमाण देते हैं। हर कलाविष्कार असाधारण होते हुए सहज, सुन्दर और मन को छूने वाला है। मैनें हर प्रयोग को बहुत बार अनुभव किया और हर बार कुछ नया पाया है। मेरे अन्दर छुपे स्वार्थी कलाकार को मन ही मन बड़ी ईर्ष्या होती है कि भगवान ने सारे गुण शेखरजी को ही क्यों दिए ? सच तो यह है कि देने वाला बहुत देता है पर हम ही जागरूक नहीं होते हैं। सफलता पाने से व्यक्ति में अहंकार घर करने लगता है, ख़ासकर कलाकार इस व्याधि से पीड़ित होते हैं

लेकिन जो सच्चे साधक तपस्वी, ज्ञानी गुणी कलाकार होते हैं उनका सबसे आकर्षण गुण उनकी विनम्रता होती है। शेखरजी और उनकी पत्नी श्वेताजी की नम्रता के रहते सारे कलाकारों को एवं कलाप्रेमियों को वो अपने परिवार का हिस्सा बना चुके हैं। सारे चौपाली जब मिलते हैं तो ऐसा लगता है कि एक परिवार त्यौहार मना रहा हो।

आज हम त्यौहार ही मना रहे हैं, शेखरजी और उनके दोस्त मिलकर। वजह तो बनती है उनके सालगिरह की... वैसे तो कलाकारों की उम्र नहीं होती, उनकी कला और सृजनशीलता उनको चिर यौवन का आशीष देती है। शेखर जी की सृजनशीलता नित नये आविष्कारों को जन्म दे और सौ सालों तक कलाप्रेमियों का मन लुभाते रहे, उनको परमानंद की अनुभूति दे यही प्रार्थना....

देवकी पंडित
शास्त्रीय व सुगम गायिका

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Charan Sharma

आज के युग में जहाँ कम्प्यूटर के कमाल होते हैं, सृजन होता है वहाँ शेखर जी में पाई जाने वाली बारीकियाँ उन्हें विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। शेखरजी ने अपनी अभिव्यक्ति की एक विशिष्ट शैली विकसित की है जो परम्परा और आधुनिकता को जोड़ती है पर जो अन्यतम है। उनकी मौलिकता को चुराना सहज नहीं है।

शेखर सेन को शब्दों की सीमाओं में बाँधना नामुमकिन है। कुर्ते व पजामें में शेखर सेन व उनके हाथ में हरदम रहने वाला पाउच जिसमें धन के अलावा सब कुछ होता है...ये रूप उनका अलग ही लगता है। सच कहूँ तो अच्छा नहीं लगता। कारण ये रूप देखने के पहले पहली बार कबीर के रूप में देख चुका था। पहचान होने पर ऐसा लगा पहले से पहचानता हूँ, घर पर कितनी ही बार गया, शेखरजी पिता, पति, गायक, कलाकार, अभिनेता और एक चित्रकार के रूप में और सखा के रूप मे खरे उतरते हैं। मेरे लिए तो वो विशेष हैं, क्योंकि वो रंगों से भी उतना ही प्यार करते हैं, जितना स्वरों से, जितना बेटे से व बीवी से... और मुझे भी....

मुंबई में रहते 40 वर्षों में पिछले कुछ वर्षों से शेखरजी से मुलाकात हुई, चौपाल में जो उनको स्नेह, कार्य करने की क्षमता व जो भी वो करते हैं बस दिल से करते हैं और बस दिल से बनाया उनका अचार भी चखा है, और रंगमंच पर देखे गये इस इन्सान को जिसमें इन्सानियत भरी है मेरा सलाम.....

चरन शर्मा

चित्रकार एवं शेखर के कलागुरु

Dr. Pradeep Sen

मेरा लघु भ्राता शेखर (गेदू),

शेखर के संग उसके बचपन की अनेक स्मृतियाँ जुड़ी हैं, सेन परिवार के छह भाइयों में मैं सबसे बड़ा और शेखर पाँचवा है। छुट्टियों में हमारे घर में (आरंग के) उसका पेड़ पे बंधे झूले पे झूलना, पीछे के बाग़ान से उसका सीताफल और आम चुराना ऐसे कई दृश्य आँखों के सामने तैर जाते हैं। रायपुर की शुरूआती याद जो आती है मन में, वो है उसका अपनी आया (राधाबाई) को परेशान करना, राधाबाई का मातृवत डाँट लगाना, और फिर सफ़ाई देते हुए शेखर की बहाने बनाने की कला देखते ही बनती थी। स्कूली और कॉलेज के जीवन में उसका क्लास से भागकर फ़िल्में देखना, पढ़ाई के अलावा बाक़ी सब चीज़ों (गाना, नाटक, नृत्य, वाद-विवाद प्रतियोगिता) में उसकी रूचि थी और अपनी बुद्धिमानी से वो हर परीक्षा पास तो कर ही लेता था। शेखर के जन्म से ही मैं उसके क्रमिक विकास का गवाह रहा हूँ, इतने सालों के बाद आज भी जब उसको गाते हुए देखता हूँ तो मेरे काकू (डॉ. अरुण कुमार सेन जी) की बेहद याद आती है, ऐसी ही खुली आवाज़ से गाते थे काकू भी।

शेखर को उसकी पचासवीं जन्मतिथि पर मेरे ढेरो आशीर्वाद और शुभकामना।

डॉ. प्रदीपकुमार सेन
शेखर के सबसे बड़े चचेरे भाई

संयुक्त सेन परिवार

Neelanjana Sen

मेरा नन्हा-मुन्ना गुड्डा भैया.....

हमारे दादाजी श्री कृतार्थ कमल सेन 1905 में ढाका के मेडिकल कॉलेज से पास होकर सुदूर मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ इलाके में बतौर सरकारी डॉक्टर कार्यरत हुए थे। वो इलाका उस समय अरण्य, आदिवासी और अन्धविश्वास से भरा हुआ था। शायद ढाका ज़िले के सोनारंग गाँव के विशाल संयुक्त परिवार में उन्हें अत्यंत मानसिक आघात मिला था इसीलिए वह वनवास। साथ में थी उनकी 11 वर्ष की बालिका पत्नी। दादाजी स्वयं अच्छे गायक थे। उन्होंने अपनी पत्नी स्वर्णलता को पढ़ा लिखा कर गृह कर्म निपुणा बनाया था... तो आश्चर्य क्या है कि कमोबेश प्रतिभा और मनीषा की सरिता हमारे परिवार में फल्गु की तरह रही ही, कहीं मौका पाकर सोता बनकर फूटा तो कहीं झरना। मेरे पिता प्रशांत कमल पर पूरे परिवार का भार 1944 में दादाजी के मृत्योपरांत आया। वे आजीवन शिक्षक रहे और अपने भाई-बहनों को सद्शिक्षा देकर कलेजे के टुकड़े सा पाला। मैं उनकी अकेली संतान हूँ और इस पीढ़ी की सबसे बड़ी।

काका डॉ. अरुण कुमार सेन और काकी अनीता सेन मेरे सबसे निकटजन रहे। काकी जब 1956 में ब्याह कर हमारे घर आयी, तो मुझे न केवल रूप और गुण से चमकती हुई एक छोटी माँ मिली बल्कि फ्रेंड, फ़िलॉसोफ़र एंड गाइड भी मिली। काकी ने मुझे दो भाई दिए.. कल्याण और शेखर। दोनों ही मुझे अतिप्रिय है।

शेखर के साथ मेरा मिलना बड़ा विचित्र रहा, पहली बार जब अनुभव किया तो देख नहीं पाई और जब पहली बार देखा तो छू नहीं पाई, चलिए सुन लीजिये मेरे इस नन्हे से भैया को मैंने पहली बार अनुभव किया था जब काकी स्कूल जाने के समय रोज़ मेरी चोटी डाला करत थी। मैं पीछे हटती जाती थी तो काकी की मीठी डाँट पड़ती थी, क्यूँ रे, अपने भाई को क्यों धक्का दे रही है ?

16 फ़रवरी 1961 में जब शेखर पैदा हुआ तब मैं 9वीं कक्षा में थी, काकी की चचेरी बहन कु. लीलावती जनस्वामी, जो हमारी संस्कृति की शिक्षिका थी, ने मुझे बुलाकर कहा, 'तुझे भाई हुआ है, जल्दी घर जा, 'घर'? मैं सीधी रिक्शे में बैठकर डी.के. हॉस्पिटल पहुँच गई कभी अकेली कही आती जाती नहीं थी। धुन में सवार पहुँच तो गई, सहम कर खड़ी खड़ी सोचने लगी - 'कहाँ दिखेगा भाई?' तभी एक परिचित औरत वहाँ दिखी, गंगा बाई जो शायद वहाँ आया थी। उसने पूछा, 'कस ओ टुरी, काबर कले चुप खड़े हस... अपन भैया ला नहीं देखबे का?' मैं उस कमरे में पहुँचा दी गई जहाँ श्रीमान शेखरजी के दर्शन हुए...। मेरी माँ ने उसे अपने गोद में रखा था पूरा चन्दामामा। मैं लपकी तो सब हा हा कर उठे। एई, एक तो बाहर से आकर छूना मना है, इंफ़ेक्शन का डर और सूतक की बात भी है। दूर से इस नन्हें चन्द्रमा को देखकर खिसियाकर लौटना पड़ा, पर काकी के आश्वासन के साथ... 'अरे तेरा भाई है, तेरे पास ही तो रहेगा'। तू मुनु को घर जाकर संभालना, हाँ?

इसके बाद जब काकी काकू, शेखर (मुनु हमारे पास ही उन दिनों अधिक रहा) को लेकर कला मंदिर चले गए तो मेरे भातृ वियोग में तपते हृदय को क्षणिक शांति तभी मिलती जब भाग-भाग कर स्कूल के टिफ़िन टाइम हो छुट्टी का दिन, मैं शेखर को गोद में लेने पहुँच जाती थी।

हम सभी भाई बहन बहुत चंचल और दुष्ट थे पर शेखरजी छुपे रूस्तम थे। उतना सा था! पर पता नहीं कैसे कितनी ही चीज़ भांप लेता था। कोई पारिवारिक बात हो, सामाजिक मसला हो, इसे पूरी कहानी पता होती है। इसका हृदय भावों से भरा था और रसधार बहती रहती थी। मेरा उसके प्रति लगाव देखकर ठाकू माँ (दादीमा) ने एक दिन कहा कि हाँ दोनों का चेहरा भी मिला है, देखो... नाक के नीचे 3 अंगुल जगह जो है।

मैंने शेखर से ये बात बताई तो पाँच बरस का बालक बोला, अच्छी बात है न दीदी, नेहरूजी के नाक के नीचे भी तो 3 अंगुल जगह है।

16 फ़रवरी 1967 मेरे विवाह के बाद मेरे जीवन का नया अध्याय खुला, पर हमेशा मायके आना जाना लगा रहा... शेखर को भी बड़ा होते देखती रही, सबसे निराला, सदैव हँसमुख-विनयी, मधुर-व्यवहार और समझ झरोखे बैठकर जग का मुजरा देखने वाली इसकी हीरे जैसी दमकती आँखे ! अल्प वय में इसने पढ़ाई लिखाई, संगीत, गृह कार्य सब सीख कर पारंगतता हासिल कर ली थी।

मेरे पिता ने एक बार कहा था 'शेखरेर मतो छेलेर काछे मोरे ओ सुख' (शेखर जैसे पुत्र के पास मरके भी सुख ही मिलता है) और विधि विधान देखो - उनका देहावसान भोपाल में शेखर की पत्नी श्वेता के समक्ष ही हुआ। एक बार की बात है, माँ, दोनों काकी, बाबूजी लोग तीन भाई, सारे बच्चों को रखकर (सभी लगभग बड़े हो गए थे) तिरूपति दर्शन को गए। रेलगाड़ी चल पड़ी तभी अचानक रेलगाड़ी के बाथरूम से श्रीमान शेखर नंगे पैर प्रगट हुए। मेरी तीनों माताएँ जो घर में छूटे बच्चों की पीड़ा में मन ही मन घुल रही थीं पर ऊपर से स्वाभाविक होने का स्वांग रच रही थीं आश्चर्य चकित तो अवश्य हुईं पर प्रसन्नता की कोई सीमा न रही।

बाबूजी के हड़काने पर जवाब दिया इसने : मैं भी तो श्रीनिवास (ननिहाल का दिया नाम) हूँ फिर मुझे छोड़कर आप लोग कैसे जा सकते हैं। श्रीनिवास बालाजी को देखने ?

घर में ख़बर भिजवाई गयी के महाशय खोये नहीं है बल्कि तीर्थ सलिल में गोता लगाने हमारे साथ ही हैं... शेखर की एक और अमूल्य भेंट ! उन दिनों काकू खैरागढ़ में वाइस चांसलर थे। मैं अपने बच्चों के साथ वहाँ घूमने गई। पतिदेव चार-पाँच दिन बाद हमें वापस लेकर

भिलाई आए, गाड़ी गेरेज में रखने लगे तो बिल्ली के बच्चे की म्याऊँ म्याऊँ सुनाई दी.. हैं ? मेरी बेटी धीरे से मेरी गोद में बिल्ली का बच्चा देकर बोली, शेखर मामा ने दिया तुम्हारे लिए... अपनी दीदी को ये उसका उपहार था, मुझे कुत्ते बिल्ली से बहुत प्यार था ये सिर्फ़ उसे ही क्यूँ याद रहा।

आज पचासवीं सालगिरह में शेखर को देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है, सांसारिक सुख भोग की सामग्री तो वो स्वयं ही अर्जित कर चुका है, रही बात प्रेम, प्रीति, स्नेह, आशीर्वाद, शुभकामना की... तो ये सब एक चौदह साल की दीदी ने कबसे उसके नाम कर दी है मेरी हर प्रार्थना में उपासना में मेरा गिदुवाली बिदुआली (मेरा बचपन का उसके लिए संबोधन) शेखर शामिल है।

सुन रहा है...!

मैं अगले जनम में तेरी बेटी बनकर जन्म लूँगी, देखना।

नीलांजना सेन
चचेरी अग्रजा, कवयित्री एवं अभिनेत्री

Supratim Sen

मेरे मामा... शेखर मामा...

बचपन से लेकर आज तक मेरे दिमाग़ पर टिकी है कुछ बातें...
सोच से परे सोचने से... भरी बातें।

मैं ख़्वाब देखता आया हूँ, ख़्वाब सजाना सिखलाती बाते...
मेरे आदर्श, मेरे मामा... शेखर मामा ...

बातों को सुर में पिरोकर, दुनिया को समझ कर, दुनिया को समझाया है
कभी कबीर, कभी तुलसी तो कभी विवेकानंद बनकर...

शेखर मामा और उनकी बातें, मेरे जीवन के पथप्रदर्शक रहे हैं...
देखते देखते इतना वक़्त गुज़र गया
कि लगता है कि बढ़कर... घड़ी की सुई रोक लें...

आपकी समझाई बातों से हम बन सकते हैं बेहतर सामाजिक पशु...
यही प्रार्थना है कि आप ऐसे ही राह दिखाते चलें...

सुप्रतिम सेन

कई साल बीते रिकार्डिंग में, साथियों के साथ

शेखर सेन का पहला भजन एलबम 'समपर्ण' रिलीज़

साहब के पहले शो के बाद पूरी टीम

Manoj Joshi

ओशो ने एक बार कहा था कि संत और कलाकार में केवल एक फ़र्क होता है। संत ईश्वर के घर में रहता है और कलाकार अपनी कला के ज़रिये उस मंदिर में घूम कर आता है। शेखर सेन के बारे में सिर्फ़ इतना ही कहूँगा कि वह उन कलाकारों में से हैं जिन्हें ईश्वरीय या दैवी अनुसन्धान बार-बार मिलता है या फिर ये कहूँ कि ईश्वर तक जाने का उनके पास लाइसेंस है। जिन्होंने भी उन्हें कबीर या तुलसी का पात्र रंगमंच पर अभिनीत करते देखा है वे बेशक मेरी बात से सहमत होंगे कि उन दो ढाई घंटों में वे कलाकार न रहकर उस ईश्वरीय सत्ता के क़रीब होते हैं।

उनसे मेरी पहली मुलाकात कुछ बीस साल पहले हुई थी, तब उनमें छुपे इस उम्दा कलाकार को मैं पहचान नहीं पाया था, एक संगीत निर्देशक के रूप में परिचय कराया गया था। बाद में जब सुना कि वे तुलसीदास का एकपात्रीय संगीत नाटक कर रहे हैं तो मैंने सोचा कि तुलसीदास के भजनों को संगीतबद्ध करके गाने को ही पेश किया गया होगा। लेकिन जब मैंने नाटक देखा तो मुझे अपने मंतव्य बदलना पड़ा। वह एक नाटक ही था, दिल के तारों को झिंझोड़ने वाला नाटक। उस दिन मैं बेक स्टेज पर जाकर मैं उनसे गले मिला। बाद में कबीर, विवेकानंद में भी शेखर सेन की कला और उभर कर आयी। मराठी रंगमंच के साथ मेरे ताल्लुक़ात रहे हैं इसलिए मैं जानता हूँ कि मराठी में नाट्यसंगीत काफ़ी समृद्ध है, पर आज के दौर में मेरे देखे हिंदी रंगमंच पर शेखर सेन एकमात्र और अनूठे कलाकार हैं जिन्होंने हिंदी रंगमंच के दर्शकों के सामने संगीत नाटक रखा, वो भी एकपात्री और उसे लोकप्रिय भी बनाया। तुलसी नाटक के उस शो के बाद आज तक हमारी दोस्ती अटूट रही है तो उसका श्रेय मुझसे ज़्यादा शेखर दा को जाता है।

एक दिन सुबह-सुबह मैंने फ़ोन किया : शेखरजी मेरे नाटक चाणक्य के 100 शो पूरे होने के मौक़े पर मैंने कल प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया है पर उसका कम्पीअरर नहीं आ रहा है आप कम्पीअरिंग करेंगे? दूसरे दिन शेखर सेन कम्पीअरर के रूप में हाज़िर थे।

एक इंसान अच्छा कलाकार हो सकता है पर एक कलाकार अच्छा इंसान हो ये ज़रूरी नहीं। पर शेखर सेन जैसे लोगों से मिलकर तसल्ली होती है कि कला जगत में अभी भी ऐसे लोग जीवित हैं।

ऐसे अद्‌भुत और बेहतरीन मित्र को 50वीं सालगिरह के निमित्त बहुत-बहुत बधाई। शेखरदा आप 'वन प्रवेश' कर रहे हैं ! ईश्वर आपको दीर्घायु दे और 'वन प्रवेश' करते ही शेखरदा आप संगीत नाटकों का एक सुन्दर 'उपवन' निर्माण करें यह ईश्वर से प्रार्थना।

ऐसे रंग रत्न नटेश्वर को मेरा सादर प्रणाम।

शतं जीवेम शरदः.....

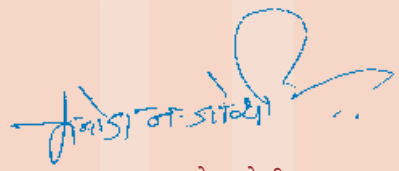

मनोज जोशी
विख्यात रंगकर्मी और अभिनेता

मनोज जोशी, आशित देसाई व शेखर सेन

Salim Arif

रोज़ सुबह जहाँ अख़बार, दूध और ब्रेड आती है, वहीं शेखर सेन के संदेशों की बौछार भी होती है। यह उनका अपने दोस्तों को भोग लगाने का तरीक़ा है। इस बहाने हम सब दोस्त सुबह-सुबह मुस्कुरा भी लेते हैं और शेखर जी हमारे दिन की शुरूआत में जुड़ भी जाते हैं।

शेखरजी से यह रोज़ का संबंध का ही नहीं है, बल्कि वो हमारे दुःख के, सुख के साथी भी हैं, मुंबई की इस ज़िंदगी में जहाँ ग़म ए दौराँ और ग़म ए जानां की जद्दोजहद है, शेखर सेन जैसे व्यक्ति उसको अपने दोस्तों के लिए बहुत मज़ेदार और सहज बना देते हैं और उनके दोस्तों में कुछ गिने चुने लोग हों ऐसा भी नहीं है। पूरी चौपाल और उससे जुड़े लोगों का परिवार उनकी परिधि में आते हैं। अब यह चौपाल भी अगर पिछले कई वर्षों से बिना किसी रुकावट चल रही है तो शेखरजी का उसमें बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है।

शेखरजी ने अपनी रंगमंचीय प्रस्तुतियों के विषय और संयोजन से ही परिपाटी से अलग नई राह खोजने की परंपरा बना ली है। यह मात्र एकल प्रदर्शन नहीं हैं, न ही ये लम्बे मोनोलॉग है। यह विभिन्न विभूतियों को समग्रता में देखने और प्रस्तुत करने का एकल दृष्टिकोण है। उनका पूरा रंगकर्म व्यक्ति का व्यक्ति को देखने का प्रसंग बन जाता है। जहाँ वो उन विभूतियों के भिन्न-भिन्न पक्षों को उजागर करता है, वहीं वो उनकी विचारधारा को विस्तार भी देता है।

शेखर सेन की गायकी इस परंपरा की नींव है, यहाँ वो एक कथागायक भी है, एक दास्तानगो भी हैं और उस चरित्र का माध्यम भी। भारतीय रंग परंपरा के पारंपरिक रूप की गुणवत्ता उनकी प्रस्तुतियों में अनायास ही प्रज्ज्वलित होती है। वो कथकली के अभिनेता की तरह पहले विषय की व्याख्या करते हैं, उसे हमें दिखाते हैं और अंततः वही विषय बन भी जाते हैं। कबीर हो या विवेकानंद, तुलसी हो या फिर साहब, सारे विषय इस तरह प्रस्तुत हुए हैं कि वो हम सबको एक नाटक की बुनियादी शर्तों को पूरा करते हुए भी अलग अनुभव देते हैं।

यह बहुत हर्ष का विषय है कि शेखर सेन की पचासवीं जन्मतिथि को एक रचनात्मक पड़ाव के तौर पर देखा जा रहा है। यह इसलिए भी ज़रूरी हो जाता है कि शेखरजी के व्यक्तित्व और काम का अवलोकन आज के सरोकार को सामने रखते हुए करने का यह अच्छा बहाना भी है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के एकला चलो रे की वाणी को मुखरित करते शेखरजी आगे भी रचनाकर्म में संलग्न रहें, ईश्वर उनको स्वस्थ और ऊर्जावान रखे, यही हमारी शुभकामना है।

सलीम आरिफ़
जानेमाने रंग निर्देशक

एक दुर्लभ चित्र : एच.एम.वी. द्वारा पाँच वर्ष के लिए ग़ज़ल गायक के रूप में शेखर सेन अनुबंधित किये गये (1985)
ग़ज़ल एलबम कभी न निकल सका किंतु सन् 1986 में आयोजित ज़श्ने ए ग़ज़ल में अनुबंधित कलाकारों के साथ ।
चित्र में बाएँ से : शबीह अब्बास, संजीव कोहली (संगीतकार मदनमोहन के सुपुत्र और आजकल यशराज फ़िल्मस् के प्रमुख कार्यकारी), विनोद सहगल, भूपेन्द्रसिंह, जगजीतसिंह मितालीसिंह, छाया गांगुली, तलत अज़ीज, शेखर सेन, विजयकिशोर दुबे, अहमद हुसैन–मोहम्मद हुसैन

Javed Siddiqui

शोला सा....

पूरे साढ़े सैंतालीस बरस पुरानी बात है कि एक बच्चा जिसकी उमर ढाई साल थी और क़द भी ढाई फ़िट से ऊँचा नहीं था, स्टेज पर अपना पहला परफ़ारमेंस दे रहा था। राग मुश्किल था मगर बच्चे ने ऐसा गाया कि अच्छे अच्छे जानकारों की गरदनें हिल गईं। ऐसा लगता था जैसे सरस्वती ने अपना हाथ शेखर सेन के सर पे रख दिया हो। सुनने वालों ने तालियाँ बजाईं, बाप ने प्यार किया, माँ ने नज़र का टीका लगाया और उस्तादों ने कहा 'पूत के पाँव पालने में नज़र आते हैं, यह बच्चा अपने ज़माने का बड़ा गायक होगा'। और हुआ भी यही, वो मक़ाम जो लोग बुढ़ापे में हासिल करते हैं शेखर सेन ने जवानी ही में पा लिया। संगीत की समझ थी, रियाज़ अच्छा था और ऐसे माता-पिता का आशीर्वाद साथ था जो ख़ुद बेमिसाल गायक थे। नतीजा यह हुआ कि जहाँ जाते थे आवाज़ का ऐसा जादू जगाते थे कि सुनने वाले मन्त्र-मुग्ध हो जाते थे। इसीलिये 23 साल की उमर में एच.एम.वी. ने ग़ज़लों का एक अलबम बनाने के लिये साइन किया। वह अलबम तो आज तक नहीं बना मगर एच.एम.वी. ने शेखर सेन को 'भजन किंग' ज़रूर बना दिया। लेकिन मुझे यक़ीन है कि उनकी गाई हुई ग़ज़लों के अलबम जब भी मार्केट में आयेंगे ग़ज़ल के जाँनिसार शेखर पे जाँ निसार करने के लिए तैयार हो जाएँगे। मैंने उनसे ग़ज़लें सुनी हैं और मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों मुल्क़ों के ग़ज़ल गाने वालों में एक अलग पहचान बना सकते हैं। ग़ज़ल पढ़ना जितना आसान होता है उसे गाना उतना ही मुश्किल होता है क्योंकि ग़ज़ल बड़ी नाज़ुक मिज़ाज होती है। वह हर एक राग के साथ नाता जोड़ने के लिये तैयार नहीं होती। ग़ज़ल गाने वाले के लिये ज़रूरी है कि वह हल्के-फुल्के किसी राग में ग़ज़ल की धुन बिठाए और उससे ज़्यादा ज़रूरी यह है कि वह लफ़्ज़ों का जानकार हो। क्यूँकि बे समझे बूझे लफ़्ज़ों को संगीत में बाँध देना ग़ज़ल की गायकी नहीं कहलाता। बहुत कम ऐसे गाने वाले हैं जो लफ़्ज़ों की रूह को अपने होंठों पर ला सकते हैं। मेरा ख़याल है यह कमाल मलिका पुखराज, बेग़म अख़्तर, मेहँदी हसन और किसी हद तक जगजीत सिंह में है और वक़्त आया तो शेखर का शुमार भी उन्हीं लोगों में होगा।

शेखर की ग़ज़ल गायकी पर इतना कुछ कहने से यह नहीं समझना चाहिये कि वह बाक़ी जो कुछ गाते हैं वह कम दर्ज़े का होता है। मैंने उनकी क्लॉसिकल बन्दिशें भी सुनी हैं, लोक गीत भी सुने हैं और ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती जैसा हल्का-फुल्का संगीत भी सुना है। अब इसे ख़ुदा की क़ुदरत ही कहना चाहिये कि वह जिस शमा को हाथ लगाते हैं वह रोशन हो जाती है।

शेखर का कमाल देखना हो तो उनके चार नाटक देखना चाहिये। तुलसी, कबीर, विवेकानंद और साहब,यह चार ऐसे नाटक हैं जिसमें शेखर के बहुत सारे रूप एक साथ दिखाई देते हैं और यह भी मालूम हो जाता है कि संगीत के कभी न दिखाई देने वाले तारों पर उनकी पकड़ कितनी मज़बूत है।

शेखर की आवाज़ को तो सब पहचानते हैं मगर उनमें आवाज़ के सिवा भी बहुत कुछ है। वह बहुत अच्छे दोस्त हैं। दोस्तों को चुटकुले सुनाना और हँसाना उनकी हॉबी है। हम लोगों का एक छोटा सा ग्रुप है जिसे चौपाल कहा जाता है। हर महीने इस चौपाल का जलसा होता है जिसकी आत्मा होते हैं शेखर सेन। और सारे चौपालियों को इस बात का इंतिज़ार रहता है कि इस बार की चौपाल में शेखर जी क्या गुल खिलाने वाले हैं।

हम सब जानते हैं कि वह एक अच्छे गायक हैं, अच्छे म्युज़िक डायरेक्टर हैं और एक्टर भी हैं। मैं भी इस बात को मानता हूँ मगर पता नहीं क्यूँ मैं जब भी उनको याद करता हूँ तो ना उनकी चमकती हुई आँखे याद आती हैं, न उनकी मासूम मुस्कुराहट याद आती है, न उनका लंबा कुर्ता याद आत है, अगर कुछ याद आता है तो वह है उनकी आवाज़, एक ऐसी आवाज़ जो कानों में उतर कर दिल तक पहुँचती है तो ऐसा मालूम होता है जैसे अन्धेरे जंगल में एक एक करके जुगनू जाग रहे हों। क्या पता हकीम मोमिन ख़ाँ मोमिन ने शेखर ही के लिये कहा हो :

'शोला सा लपक जाये है आवाज़ तो देखो'

शेखर जी! आपके 50वे जन्मदिन पर बहुत सी दुआओं के बाद एक प्रार्थना भी है कि कभी अपनी आवाज़ के शोले को मद्धम मत होने देना...सालगिरह मुबारक हो....!

जावेद सिद्दीक़ी
जानेमाने पटकथा लेखक

Kamal Kelkar

चि. शेखर को मैंने अपनी आँखों से बाल्यकाल से बढ़ते हुए देखा है। बचपन से ही वह चंचल, शरारती और कुशाग्र बुद्धि का है। चि. शेखर को सेन्ट्रल गवर्नमेंट की तरफ़ से संगीत की स्कॉलरशिप (शिष्यवृत्ति) प्राप्त हुई थी।

इसी सिलसिले में वो मेरे पास घर में गायन सीखने के लिये आता था। उसी समय उसकी कुशाग्र बुद्धि देखकर मुझे उसको अच्छी अच्छी बंदिशें सिखाने की इच्छा होती थी। ऐसा सुयोग्य शिष्य पाकर मैं आनंदित थी। फिर मैंने उसको अलग-अलग रागों की बंदिशें सिखाई। इन बंदिशों को वह अच्छी तरह और पूरी कुशलता से गाता था।

किसी दिन उसे किशोर सुलभ बोरियत भी महसूस होती थी। तब वो अपने विनोदी स्वभाव से कहता बहनजी आज संगीत के बजाय गपशप की क्लास चलने दीजिये और फिर वो गपशप करता।

फिर आगे चलकर उसे मुम्बई जाना पड़ा। लेकिन आज जब भी वह रायपुर आता है, मुझसे मिलने घर ज़रूर आता है। उसकी गुरुनिष्ठा देखकर आश्चर्य होता है।

चि. शेखर में संगीत के संस्कार जन्मजात हैं। यह उसकी माता-पिता की विरासत है। वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी है। उसने अपने नवीनतम 'साहब' नाम के नाटक में रोज़मर्रा के जीवन में आने वाले अनुभवों को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। उसका ये नाटक बड़ा प्रभावशाली लगा।

चि. शेखर अत्यंत हँसमुख और विनम्रता से पेश आने वाला विद्यार्थी है। स्वभाव से विनोदप्रिय होने के कारण उसके घर में आने से हमारे घर में विनोदी वातावरण बन जाता है। दूसरों की सहायता में वो हमेशा तत्पर रहता है। उसमें अपने पिता आदरणीय स्व. सेन साहब की कर्मठता के साथ-साथ एक कलाकार की संवेदनशीलता भी है।

एकपात्रीय नाटक के मंचन में जो-जो आवश्यक तत्व होते हैं जैसे संवाद, गीत, संगीत एवं रचना उन सभी का उसे न केवल अच्छा ज्ञान है बल्कि वह अकेला ही इन सबका निर्वाह करता है। उसे और भी अधिक कीर्ति और सुयश मिले ऐसी मेरी शुभेच्छा है। उसके गुणवान् और प्रभावशाली व्यक्तित्व के बारे में जितना कहूँ उतना कम है।

चि. शेखर ने अपने जीवन का अर्धशतक (पचास वर्ष) पूर्ण किया है। उसका हार्दिक अभिनंदन करती हूँ। इन पचास वर्षों में उसने जो उपलब्धियाँ प्राप्त की; संगीत एवं नाटक को उसका जो योगदान रहा वह सराहनीय है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वह और भी उच्च शिखरों तक पहुँचे। यही मेरी अभिलाषा है।

कमल केलकर
पं. विनायकराव पटवर्धन की सुकन्या
शेखर की संगीत गुरु

चित्र में बाएँ से : श्वेता सेन, कमल केलकरजी, मनोहर केलकरजी व शोभा खण्डेलवाल

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Dr. Satish Vyas

कुछ वर्ष पूर्व एक मित्र के घर संगीतकार शेखर सेन से मुलाक़ात हुई। संगीत ने तो मुझे मंत्रमुग्ध किया ही पर उनके व्यक्तित्व की सहजता ने मुझे हमेशा के लिये उनका क़ायल बना दिया। एक वाक़िया मुझे ख़ास तौर पर याद है। मेरे घर पर शेखरजी अपने मित्र एवं तबला नवाज़ के साथ भोजन के लिये आये थे। भोजन के पश्चात् उन दोनों में जो वाद विवाद हुआ, वह शेखरजी की अव्यवसायिक बुद्धि एवं उच्च आदर्शों का परिचायक था। इसके बाद जब इस बहुआयामी कलाकार द्वारा रचित एवं मंचित कबीर, विवेकानंद एवं तुलसी जैसे एक पात्रीय नाटक देखे तो मैं नत-मस्तक और निःशब्द रह गया। धन्य हो गये हम, कि हमें शेखर भाई को इतने क़रीब से देखने का अवसर मिला। धन्य है यह धरा, जहाँ इस विलक्षण प्रतिभा ने जन्म लिया। जीवन के पाँच दशक पूर्ण करने के लिए अवसर पर शेखरजी को शत शत बधाइयाँ।

डॉ. सतीश व्यास
डेट्रॉयट (यूएसए)
मालवीमना चित्रकार, मूर्तिकार, अभिनेता एवं प्लास्टिक सर्जन

Ashok Bindal

शेखर सेन - विलक्षण व्यक्तित्व

शेखर सेन, शेखर भाई, शेखर भैया, शेखर दा या फिर शेख रसेन जितने नाम उतनी ही अलग-अलग प्रतिभायें। गायक, संगीतकार लेखक, नाटककार, कवि, अभिनेता, दिग्दर्शक और चित्रकार और न जाने इस पोथी का कौन सा अध्याय खुलना बाक़ी है।

लेकिन, इतने सारे आयामों के साथ-साथ भीतर एक संवदेनशील इंसान जो इस युग में भी अपने माता-पिता के संस्कारों की थैली सर पर रखे सहज ही उनके सुर में सुर मिलाता, पर अपनी स्वरलहरी जगाता अविरल एक अनंत यात्रा पर है। 'दुष्यंत की ग़ज़लों' को अगेय कहने वालों को चुनौती देता, 'मध्ययुगीन काव्य' के शब्दों को अपने स्वर देता, फिर 'मेरी वाणी गैरिक वसना' को धुन देता और अब तुलसी, कबीर, विवेकानंद और साहब के माध्यम से समाज को नयी चेतना देता यह योगी चरैवती-चरैवती चलता ही जा रहा है।

शेखर भैया को मैंने ढूँढा था। आश्यर्च हो सकता कि खोये कहाँ थे ? लेकिन जब 'धर्मयुग' में पढ़ा कि 'शेखर-कल्याण' ने दुष्यंत की ग़ज़लें गाकर धूम मचा दी, तब सुखद आश्चर्य हुआ कि दुष्यंत की ग़ज़लों को गाने वाला धुनी कौन है ? इससे मिला जाये। अब आप इसे महानगर की विडम्बना ही कह सकते हैं कि आदमी ख़ुद में इतना समाया रहता है कि उसे अगल-बगल का होश नहीं रहता। क्योंकि खोजने पर शेखर भैया जहाँ मिले, उसी बिल्डिंग में मेरे बड़े भाई साहब भी रहते थे।

ख़ैर ! इस मुलाक़ात के बाद तो हम निरंतर मिलते ही रहते हैं। शेखर भैया, मुझसे उम्र में छोटे हैं और सिर्फ़ उम्र में ही हैं वरना वे दूरदर्शिता व अनुभव में कहीं आगे हैं। मैं गर्व से कहता हूँ कि समय-असमय उनकी सलाह मेरे बड़े काम काम आई है। उनके अनुभव उनकी धरोहर है। हर पल, वे हर बीतते पल से कुछ न कुछ ग्रहण करना खूब जानते हैं और उसे समाहित कर आचरण में अंगीकार कर लेते हैं। इसी पूँजी के सहारे वे इस मुक़ाम पर हैं। मैंने शेखर भैया को कभी गुस्साते नहीं देखा, न ही गंभीर से गंभीर परिस्थिति में विचलित होते देखा। इसका सबसे बड़ा उदाहरण सबने तब अनुभव किया, जब पिताजी, फिर माताजी गंभीर रूप से अस्वस्थ थे। एक अद्‌भुत सहजता तथा सहनशक्ति इनका नैसर्गिक गुण है।

अपने कार्य के प्रति उनकी तन्मयता अद्वितीय है। समय की पाबंदी अनोखी है। इनके ज्ञानचक्षु इतने सक्रिय हैं कि हर वस्तु की छोटी सी छोटी जानकारी भी इनसे छूट नहीं सकती। दोस्तो के दोस्त, परिवार के प्रति समर्पण, सब सीखने योग्य है, जो इन्हें और विशेष बनाता है। शेखर भैया के पचासवें जीवन पर्व पर इन्हें अनगिनत,असीम, अविरल शुभकामनाएँ और बधाई। प्रभु इन्हें स्वस्थ जीवन दे और यह अपनी सारी उपलब्धियों से जीवन भर लबरेज़ रहें।

आमीन्।

अशोक बिंदल
कवि मित्र, कलाप्रेमी व व्यवसायी

Girish Pankaj

शेखर सेन.... इस नाम में ही जादू है। पुराने दिनों को याद करना बेहद सुखद लगता है और शेखर जैसे अंतरंग मित्र के लिये कुछ लिखना तो सचमुच बहुत अच्छा लग रहा है। शेखर से मेरा परिचय अब लगभग पैंतीस साल पुराना हो रहा है। सन् 1976 का जब पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में प्रख्यात नाट्यकर्मी हबीब तनवीर ने दस दिवसीय रंगशिविर आयोजित किया था, तब मैंने भी उस में हिस्सा लिया था। शिविर में शेखर सेन, कल्याण सेन, अशोक मिश्र, जयंत देशमुख (अब मुम्बईकर), राजकमल नायक, परवीन ख़ान और (स्वर्गीय) आनंद चौबे जैसे अनेक साथियों ने तनवीर साहब के सान्निध्य में रंगकर्म की अनेक बारीकियाँ सीखी थीं, तब मैं छत्तीसगढ़ के सुदूर क़स्बे मनेन्द्रगढ़ के महाविद्यालय में अध्ययनरत था और वहाँ से चलकर पहली बार रायपुर आया था। लेकिन सच कहूँ, जब मेरी मुलाकात शेखर (उस वक़्त अनुराग नाम था) से हुई तो लगा मुझे एक सच्चा मित्र मिल गया है। शिविर से बचने वाले समय में हम लोगों के अनेक अंतरंग चर्चाएँ हुआ करती थीं। घर-परिवार की, मित्रों की, सिनेमा की, मौसम की, भविष्य की, तरह-तरह की बातें। हबीब साहब के तैयार नाटकों में हम सब ने भूमिकायें की। शिविर इतिहास बन गया। वो दस दिन हमारे जीवन के तीन दशक में कब रूपांतरित हो गए, पता ही न चला। हम लोगों ने जीवन की आधी सदी को छू लिया है।

मुझे अच्छे से याद है, शिविर के समापन के बाद शेखर और हमारे बीच निरंतर संवाद बना रहा। मैं शेखर को पत्र लिखता और शेखर भी मुझे उत्तर दिया करता था। वह अपने टाइपराइटर में पत्र लिखकर भेजता और पत्र के अंत में 'कविवर को प्रणाम' भी लिखता था। शिविर में मैंने अपनी एक कविता सुनाई थी, जिसे हबीब तनवीर ने और उनकी धर्मपत्नी मोनिका जी ने भी पसंद किया था। बाक़ी साथियों को भी पसंद आई थी। इसीलिए शेखर मुझे कविवर लिखता था। (ये पत्र आज भी मेरी धरोहर हैं) उस वक़्त रायपुर में दूरदर्शन केन्द्र शुरू होने वाला था। तब शेखर ने मेरा उत्साह बढ़ाते हुए लिखा था कि आपको भी इससे जुड़ना है... जब दूरदर्शन केन्द्र शुरू हुआ तो उद्घाटन के अवसर पर शेखर का गायन हुआ था। उसने मुझे इस बात की सूचना दी। ख़बर अख़बारों में छपी थी तब मैंने अपने मित्रों को वह समाचार दिखाकर गर्व से कहा था कि ये मेरा मित्र है। पिता श्री अरुणकुमार सेन और माताश्री अनिता सेन के साथ शेखर-कल्याण के

आयोजनों की जानकारी मुझे पत्रों के माध्यम से मिलती रही। मुझे ख़ुशी होती थी, कि मैं एक ऐसे व्यक्ति का मित्र हूँ जिसका पूरा परिवार संगीत को समर्पित है।

तीन साल पहले मैंने पचास साल पूरे किये थे, अब शेखर पहुँच रहा है। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो अजीब-सा रोमांच होता है कि उम्र के इस पड़ाव पर आकर हम 'साठ सालोन्मुखी' हो गएहैं। आज पचास के हुए हैं। कल साठ के भी हो जाएँगे। जीवन किसी के लिये रुकता नहीं है। नदी की तरह बहता चलता है। मगर हम अपने कर्मों से, अपनी कला से इस निर्मम समय से मुकाबला करते हैं और अपने निशान वक़्त की छाती पर कुरेद कर चल देते हैं। यही मनुष्य जीवन की सफलता है, शेखर ने यही किया। उसने अपनी उपलब्धियों के जो शिलालेख लिखे हैं, वे अमिट है। किसी को बताने की ज़रूरत नहीं है, कि शेखर आज क्या हैं और वह कहाँ खड़ा है। वह क्या कर रहा है। उसकी अपनी मौलिक कल्पनाओं ने कला को नया रंग दिया। हबीब तनवीर के रंग शिविर और माता-पिता की प्रतिभा का पाथेय लेकर शेखर ने कला की दुनिया में जो अभूतपूर्व प्रस्तुतियाँ दी है, वह पिता अरुणकुमार सेन जी की सांगीतिक प्रस्तुतियों का ही सार्थक एवं गुणात्मक विस्तार है। पिता गीत-रामायण, गीत-नानक जैसे दिलकश प्रस्तुतियाँ देते थे। पूरा परिवार एक साथ प्रस्तुतियाँ देता था। यही काल था जब शेखर ने अपने आपको तैयार करना, मांजना शुरू किया और आज जब माता-पिता दोनों इस दुनिया में नहीं हैं, शेखर 'कबीर', 'तुलसीदास', 'विवेकानंद' और 'साहब' जैसी प्रस्तुतियों के माध्यम से जैसे अपने माता-पिता को ही श्रद्धांजलि दे रहा है। अपनी एकल संगीत-नाट्य प्रस्तुतियों के पहले शेखर ने मध्ययुगीन कवियों की कविताओं को गाने का सिलसिला शुरू किया। यही से शेखर की पहचान बनना शुरू हुई और आज देश-विदेश में उसकी धूम है, उसका नाम है, लोग उसे आग्रह करके बुलाते हैं उसकी प्रस्तुतियों के लिए। एक अकेला कलाकार तीन घंटे तक मंच पर रहता है। विभिन्न रागों में गायन करता है, संवाद बोलता है और दर्शकों को भावुक कर देता है।

शेखर इसी तरह शिखर पर बना रहे, यही शुभकामना है। स्वस्थ रहे, सक्रिय रहे, नए-नए सृजन करता रहे। कीर्तिमान रचे, बस, यही चाहता हूँ।

गिरीश पंकज
संपादक 'सद्भावना दर्पण'

Rajesh Ganodwale

- उदाहरण होने से बचकर स्वयं को उदाहरण साबित करना इस दौर में आसान नहीं। वह भी तब, जब कोई मुंबई में रहते मनोरंजन जगत में काम करता हो। छत्तीसगढ़िया शेखर सेन इस मायनों में बेजोड़ साबित हो चुके हैं।

- मैंने उन्हें पहली दफ़ा पाकिस्तान का हिन्दी काव्य, मध्यकालीन संत कवियों की रचनाएँ सहित दुष्यंत ने कहा था; जैसे सर्जनात्मक सांगीतिक प्रयोग करते देखा-पाया था। वे उन दिनों भी सराहे जा रहे थे। हालाँकि लोकप्रियता के प्रचलित ढंग से देखा जाए तो वे अज्ञात थे। बीते एक दशक में रंगमंच में एकपात्रीय दस्तक की बदौलत उन्होंने जो मिसाल दर्ज की वह किसी भी सिद्धहस्त को हैरत में डाल रही है। आखिर मनोरंजन की ऐसी कौन सी कुंजी उनके हाथ लगी ? कोई जिज्ञासावश यह सवाल कर सकता है। संभवतः इसका एक ही जवाब हो श्री सेन ने कभी अपनी जड़े नहीं छोड़ीं और ना ही मिट्टी की पहचान को बिसराया। इसी कुंजी की बदौलत आज वे शास्त्रीय सुगम संगीत के कलाकारों, यानी सिताराई हैसियत के कलाकारों के भी चहेते हैं। दरअसल अपने पिता का प्रशासनिक कौशल और माँ की सृजनात्मक संवेदना का साझा अंश उनमें है जिसने उन्हें उस मुंबई में टिका दिया जहाँ वे अपने डेढ़ दशक, मुक्तिबोध के शब्दों का सहारा ले कर कहा जाए तो 'अंधेरे में रहने' की तरह थे।

- बोलते-बोलते गाना और गाते-गाते बोलना इस परिकल्पना में वैसे तो नया कुछ नहीं है, किंतु शेखर ने अपनी शैली, विन्यास और गठाव से नवाचार बना कर खड़ा कर दिया। आज एकपात्रीय की उपलब्ध परंपरा में श्री सेन के चारो प्रयोग 'तुलसी' 'कबीर' 'विवेकानंद' और ताज़ा-तरीन 'साहब' दुर्लभ उदाहरण की तरह सामने हैं। ढाई सप्तक की अपनी मोहक रेंज, उस पर प्रभावशील अभिनय को दी गई तकनीकी छौंक... विषय के साथ उनका एकाकार होना, अनुभव होता है मानो वे इसीलिए बने हैं या इसी 'सम' की उन्हें तलाश थी। इधर जब इन सभी प्रयोगों को मिलाकर छह सौ का आँकड़ा वे छू आए हैं उतने ही सहज-सरल। अपनी जन्मभूमि छत्तीसगढ़ के लिए और अधिक करने की उनकी तड़प बढ़ रही है। न मालूम कितनी दफ़ा मुझी से कहा होगा 'बताओ किस कलाकार को बुलवाएँ'।

- यह तथ्य कम लोग जानते हैं कि जितना अच्छा गाते, बंदिशे तैयार करते हैं उतना ही सुंदर लिखते-बोलते भी हैं। लतीफ़ों की तो गठरी उठाए घूमते हैं। इन दिनों वे दुबले हो रहे हैं। अच्छा लगा, विस्तार लेती अपनी काया की चिन्ता की। उनसे मिलना, बतियाना, शानदार रचनात्मक अनुभव से गुज़रने सरीखा है।

- इस आश्चर्यजनक शख़्सियत को चंद लाइनों में समझाना-लिखना कठिन है। संघर्ष के दो दशक उपरांत उन्हें ठण्डी छाँह, हरी ज़मीन मिली है। सफलता की यह फ़सल इस रचनात्मक किसान को मुबारक हो।

राजेश गनोदवाले
नवभारत एवं इंडिया टुडे के स्तंभ लेखक एवं कला समीक्षक

शेखर–कल्याण संघर्षकाल का एक चित्र

Pt. Nayan Ghosh

A composer, lyricist, singer, playwright, an actor, thinker, a scholar, a social worker, humorist–combined into one incredible energy – is how one could describe this unique personality, Shekhar Sen.

I am fortunate to have known Shekharbhai since our very young days. He has been like a younger brother to me and I share a deep bond with him. I closely knew his great parents, Dr Arunkumar Sen, a committed musicologist, composer and educationist and mother Dr Anita Sen, a thumri exponent par excellence, an erudite composer and guru. Both were deep admirers of my late father Padmabhushan Pandit Nikhil Ghosh, his musical genius and his vision and interacted with him frequently, when Dr. A.K. Sen was Vice Chancellor of the famed Khairagarh Music University in Madhya Pradesh. Meanwhile, as years passed by, I saw Shekharbhai gradually emerging as a unique stage personality. I have witnessed his shows on Kabeer, Vivekananda, Tulsidas and Sahab, and was wonderfully surprised and moved by the total impact of each play. In every play he has conveyed strong messages, all of which could be instrumental in building a great and modern India, with its powerful content encompassing our heritage, culture and 'Sanskaars'. This in addition to his acting skills, his singing prowess, the live synchronizing of songs with the music, the direction, the stage sets, the dialogues, the lyrics of the songs and the composing of every tune is really a superhuman effort by one individual. Despite all these talents, what makes him special is his genuine modesty, simplicity and generosity.

I congratulate him, and as his older brother, offer him heartfelt blessings, for completing 50 years in his long life ahead of him to do immense service to our motherland.

Nayan Ghosh
Sitar & Tabla Maestro

माता-पिता के साथ पहली विदेश यात्रा : 1974-लंदन

Subhash Kabra

'रे मन सुर में गा !'

शेखर सेन 50 के हो गए। तो ?
तो, बधाई श्रीमती शेखर सेन को !
जिन्होंने इन्हें 50 का होने दिया।
इनसे 'कबीर' का फक्कड़पन,
'विवेकानंद' की सोच,
'तुलसी' का अनुरागी और बैरागी भाव नहीं छीना।
भले ही घर में खूब लताड़ती रही,
पर सबके सामने हमेशा 'साहब' ही कहा।
भारतीय नारियाँ पूरे विश्व में ऐसे ही थोड़ी पूजी जाती है।
बात करते हो !

सुभाष काबरा
प्रसिद्ध हास्य कवि

शेखर–श्वेता, कबीर जन्म स्थान, लहरतारा तालाब–बनारस

Shurjo Bhattacharya

MY SHEKHAR DA - MY INSPIRATION

The day when I stepped in Mumbai,the Very First Lesson I received from the Eminent Flag-holders of our Mumbai Music-Industry was that Without a proper FILMY-TOUCH in career, it's just a poorman's daydream for a Performer to make a due domain in any form of Sugam-Sangeet in Mumbai.

Though I did playback for GREAT COMPOSERS like R.D. BURMAN,SALIL CHOWDHURY,A.R.RAHMAN, have learnt music from GREAT GURUS like PADMABHUSHAN MANNA DEY & PANDIT AJOY CHAKRABORTTY, but was missing someone here CLOSE TO MY HEART,within today's contemporary (plus minus 10 years older or younger than me)performers,who is simultaneously MAKING A RESPECTED MARK towards every would be Artistes of today's music,with COMMANDING PROFESSIONAL SUCCESS &CARRYING SEVEN VERY IMPORTANT QUALITIES TO JUSTIFY "SAPTASUR".

As per me those SEVEN QUALITIES are-

1) V.OWN & V. INDIVIDUAL THINKING IN CREATIVITY.
2) KILLER-INSTINCT IN PERFECTION WHILE PERFORMING.
3) DEADLIEST DETERMINATION TO COME OUT OF ALL OBSTACLES.
4) SELECTING NON-FILM MUSIC AS THE MOST CHALLENGING AREA, PRESENTING A LEARNED ARTISTE'S ESTEEMED VERSATALITY.
5) POSITIONING WISDOM OVER KNOWLEDGE IN PERFORMANCE.
6) COMBINING WRITING, COMPOSING, SINGING, ACTING, PRODUCING, DIRECTING, STAGE DESIGNING, PAINTING UNDER THE SOULFUL SHADE OF HUMBLENESS, DIGNITY & MEANINGFUL WITS.

7) CONSTANTLY POURING MORAL MESSEGES MEANT FOR SOCIAL-WELFARE, DIRECTLY OR INDIRECTLY, BY GIVING LYRICAL-STINT TO PEOPLE'S DEGENERATING LEVEL OF CONSCIENCE, IN EVERY PERFORMANCE, WITH A BRAVE HEART, COMBINING A DIE-HARD LIVE ATTEMPT.

FINALLY I FOUND SHEKHAR-DA, OUR RESPECTED SHRI SHEKHAR SEN, Creating full image for all my dream milestones, showing me path like a GURU under any confusion, under any circumstances.

YES, MY SUGAM-SANGEET ARTISTE FRIENDS, Now I must say, NEVER GET DISAPPOINTED, NEVER MIND that Filmy-success is the last word of achievement, WE HAVE GOT OUR BELOVED SHEKHAR-DA in front of us, THE PATHFINDER OF IDEOLOGICAL-SUCCESS, A DEVOTEE LIKE "GOSWAMI TULSIDAS" AN OCEAN OF WISDOM LIKE "SANT KABIR", THE POWER OF SOUL LIKE "SWAMI VIVEKANANDA" & AS SIMPLE AS THE V.OWN COMMON-MAN LIKE IN "SAAHAB" TOWARDS THE JOURNEY TO THE CENTRE OF ART - THE WAY I HAVE SEEN SHRI SHEKHAR SEN..... - MY INSPIRATION !

Shurjo Bhattacharya
Playback Singer

Shurjo Bhattacharya, Shekhar Sen & Tushar Bhatia

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Prof. R.C. Mehta

Shekhar Sen should be re – named as Shikher Sen, - ever trying to reach higher realms of music and acting. He is the most worthy son of India, of the renowned Sen family of Raipur, Madhya Pradesh.

I have known him since Shekhar's childhood. His father Dr. Arun Kumar Sen was Vice – Chancellor of IKSV Khairagarh. He had invited me as a Visiting Professor in October 1978, when Shekhar was very young and had started learning music. He, at the University made a systemative study of Hindustani Classical Music. During my term of 3 months, several luminaries of Indian Music & Dance were invited as Visiting Professors, - Prof. B.R. Deodhar, Dance Damayanti Joshi, Ustad Halim Jaffer Khan, Ustad Yunus Husain Khan, etc; they taught senior teachers, including Dr. Anita Sen, mother of Shekhar Sen.

Dr. Sen & Mrs. Anita Sen used to come to Mumbai, taught a number of students. In the meanwhile Shekhar was flowering in his own way, picking up whatever was suited to his voice, personality, - from classical and light music around him.

There was, and is, no comparable singer, for mono / solo acting, in India. His Kabeer : his trade-mark : Shekhar gives the spiritual experience of Kabeer, the Saint, - belonging both to the Hindu and the Muslim community. His Vivekanand also speaks of the spirit of Ramkrishna Paramahansa.

Really, he is now fifty – plus ? At 92 +, I am looking forward to my century. My blessings to him, he has to project the message of other Saints of India; in India and abroad, and look forward to his uncle R.C. Mehta, pacing towards a century.

I present my deep appreciation to him by bestowing "Sangeet Shiromani Shree Shekhar Sen"

Prof. R.C. Mehta
Padmabhushan and Eminent Musicologist

इक था... बचपन

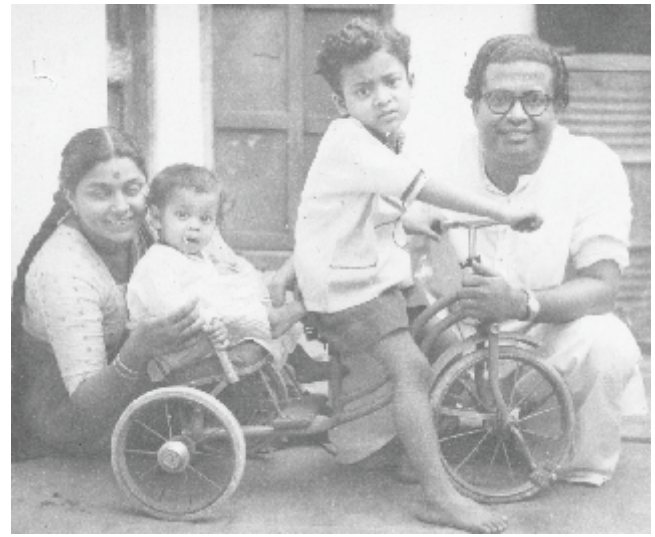
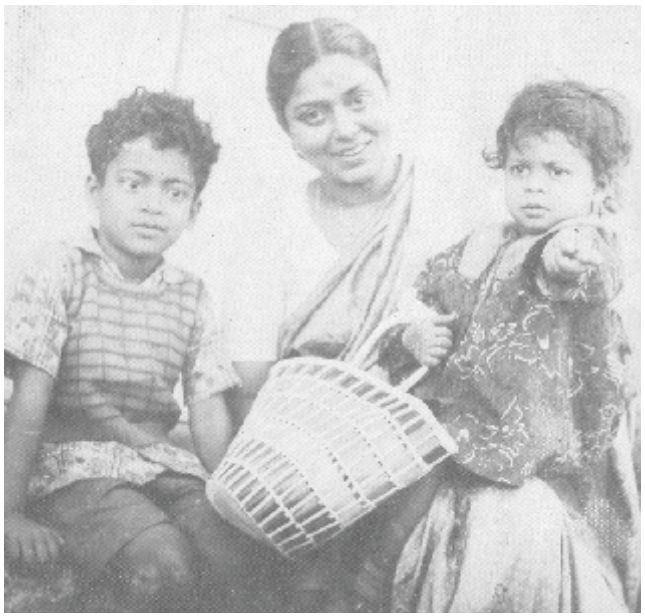

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Dhanashri Pandit

"In life's great journey through art and music and drama I've seen much greatness and talented women and men but extraordinary genius wrapped in striking modesty no one can head that list but Shekhar Sen"

Shekharji, the special place you have earned in everyone's heart is through your radiance as a "complete artiste" taking singing and acting and writing to unimaginable heights...and your constant efforts to encourage and promote the art of your fellow musicians - that kind of generosity of spirit borders on divinity.. My heartfelt wishes to you on this glorious occasion and so proud and honoured to be on your friend list.

Dhanashri Pandit
Thumri Singer

धाय माँ राधाबाई की गोद में

3 वर्ष की आयु में पहली मंच प्रस्तुति

जम के खेली होली... दीदी, आशीष, बाबा, भैया, बुआ और माँ की गोद में शेखर

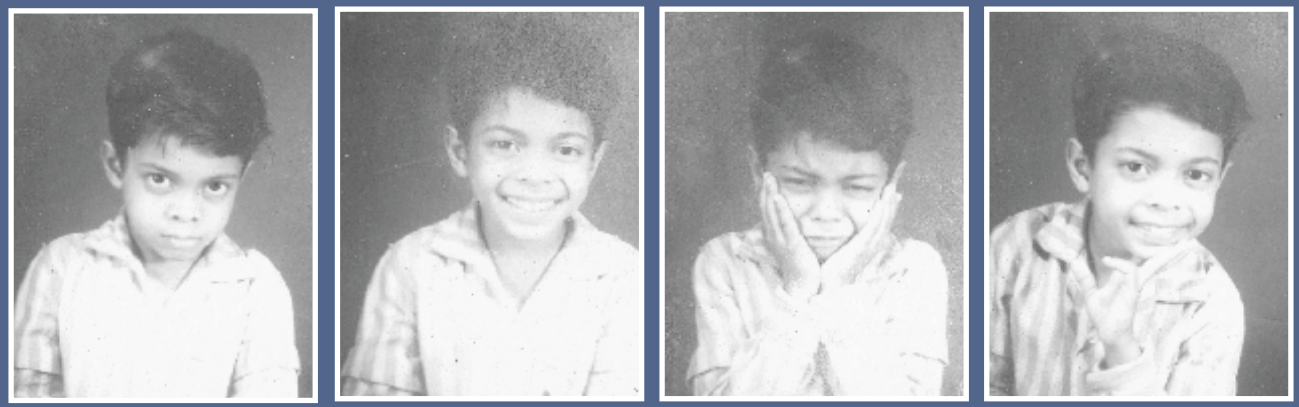

5 रुपये में चार फोटो

Pt. Abhijit Banerjee

Shekhar Sen; a name which has been depicted in the pages of world music with golden letters. It is a privilege to know this personality for long Twenty years. During this span I am fortunate enough to experience the richness of his on stage performance, his musical versatility and his generous attitude to the people with whom he words either on stage or in the studio. his innovations and creativity in composing music is really praiseworthy. I feel honored to share some of my golden moments of my association with such an artist during his Bhajan album and in some occasions his authenticity in using the "Chhattisgarhi folk music" was highly applauded. To recollect a small incident in one of his numerious tours to the United States once he was longing to have homemade Bengali food, which he cherishes the most. After immediate completion of the concert at LA. I arranged for the same and along with all the team mates went just to have Bengali food which was prepared by me. I know it was not as delicious as made by some professionals yet everyone was surprised at but enjoyed to the brim. His such tenderness and politeness towards all his associative co-workers renders the best out of everybody in producing wonderful creations and achieving grand success.

To share more of his global performances, he has been holding the fame of trend-setter as a mono act player. Through his fabulous acting in representing legends, Kabeer, Tulsi and Vivekananda he has justifiably earned the fame of being a new trend-setter in India. His immense command over languages, rich musical sense and vast historical knowledge has made him the most unique in mono acting.

While briefing about him I must not forget to mention about his parents' endless and priceless contribution to the world of Music. He has rightly, firmly and proudly kept his head high preserving the rich musical heritage of his family.

Abhijit Banerjee
Tabla Maestro

Neena-Rajendra Mehta

Many thanks for your letter, regarding celebrating Bhai Shekhar Sen's entering second half of the century of Shekhar Bhai's life and publishing a memoir of collection of reaction of his friends and well wishers.

We have known Shekhar Bhai for almost 25 years and used to know about his activities through one of his musicians Shri Nandy.

He was attached with one Record Company and used to record his compositions of light music by co's artistes apart from performing all over.

Mumbai is a very hectic Metro City, and everybody is running around meeting his/her dead-line. We also became part of the rat-race and travelling in the country and abroad doing our Ghazal Concerts, and lost touch with Shekhar Bhai.

One fine morning we came across an advertisement about one-man performance on the life of Saint KABEER by Shekhar Bhai.

He was gracious enough to invite us for the Concert. The performance was revelation of another side of Bhai Shekhar's life.

He must have realized the limitation of rate-race and choose a whole new Concept. You can imagine the research and hardwork, Which he had gone through for Kabeer's act. I do not remember of any body else hasdone some thing like this. Doing 300 shows all over the globe of Kabeer and many shows of Tulsi and Vivekanand, is a daunting task. Congrats to Bhai Shekhar.

Achieving such heights and still keeping his feet on the ground is the result of his upbringing. He is the same, simple, humble and loving Shekhar Sen, whom we have known for the Last Quarter Century. May God give him the strength to go on this innovative work and he with him. Special congratulations to Shwetaji for looking after the family in the absence of Shekhar Bhai, when he is on tours, all over the world.

जहाँ रहेगा वहीं रौशनी लुटायेगा,
किसी चराग़ का कोई मकां नहीं होता।

Neena-Rajendra
Noted Ghazal Singers

शिशु नाट्य संघ (बांगला नाटक करने के लिए बच्चों का दल)

प्रथम नृत्य प्रस्तुति 'मछुआरा नृत्य'

माँ दुर्गा के रूप में, एक बांग्ला नाटक का दृश्य

लच्छू महाराज जी के साथ

म्यूजिक क्लास, रायपुर

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Ashit Desai

Shekhar Sen has been a colleague who goes back many years. It is my privilege that our association has remained so strong and wonderful for all these years and may it continue to do so. To describe Shekharji and his qualities in a few words would require a great deal of articulation. He is a *gunijan*, a *gharanedaar* musician, someone who is completely non-political and can be considered an authority on music and stage performances. He has enthralled us all with his wonderful acts and I wish him continued success on stage. For someone who has so effortlessly blended music and acting, for someone who has received rich reviews and accolades, he has remained amazingly humble and unassuming.

He has beautifully imbibed the true qualities that an artist should have as a human being apart from the talent and craft.

All I wish for him is great health and continued wisdom to rise above mediocrity and crass commercialisation to give us many wonderful presentations in years to come.

Ashit Desai
Singer & Music Director

ये चित्र बहुत महत्वपूर्ण, मध्यप्रदेश स्तर की ग़ज़ल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मिला और उसी दिन आकाशवाणी ने ऑडिशन में फेल घोषित किया

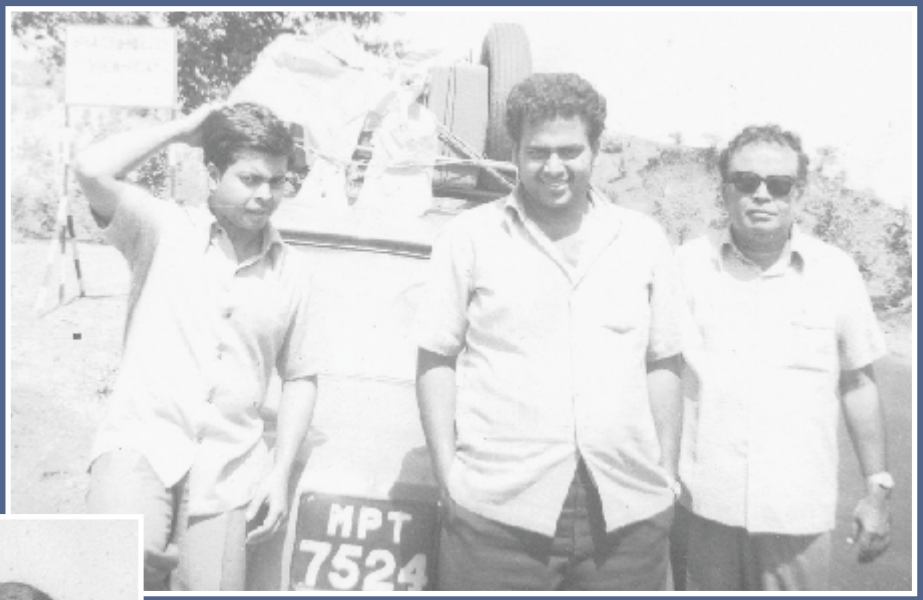

1979 – रायपुर से मुंबई हम कार में गए थे (संघर्ष का दौर शुरू)

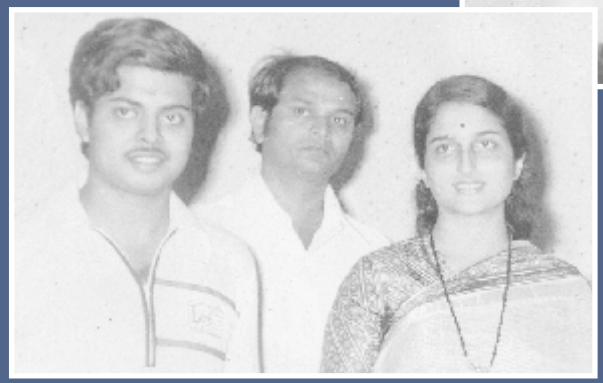

पहली फिल्म का पहला गीत अनुराधा जी स्वर में रिकॉर्ड हुआ

1985 मेरा गाया पहला भजन एल्बम 'समर्पण' रिलीज़

पहला कार्यक्रम 'दुष्यंत ने कहा था', संचालन कमलेश्वर जी – 1 सितम्बर 1984

शेखर 50
शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Ashok Banthia

शेखर सेन - सहज कलाकार कैसा होता है शेखर दा को देखकर ही जाना जा सकता है, गायकी सहज, अभिनय सहज और व्यक्तित्व, वो भी सहज। गायकी का इतना ख़ूबसूरत इस्तेमाल अभिनय में कम ही कलाकारों को करते देखा है वो भी इतनी सहजता से।

शेखर दा को मैं बीस से भी अधिक वर्षों से जानता हूँ.. कला के प्रति पूर्णतः समर्पित। जो भी ठान लेते हैं, पूरा अवश्य करते हैं।

शेखर दा की कर्मठता का एक वाकया मुझे याद आ रहा है। शायद दो वर्ष पहले की बात है - हाँ ! शेखर दा लेप्टो स्पाइरोसिस की वजह से आरोग्य निधि अस्पताल में भर्ती थे, मैं जब उन्हें देखने गया तो डॉक्टरों ने दो चार अलग-अलग नलियाँ डाल रखी थीं और सख़्त आराम की हिदायत दी थी।

वहाँ से लौटते समय मैंने कहा, आप जल्दी ठीक हो जाओगे, YOU ARE A FIGHTER.

अगले दिन भाभी का फ़ोन आया कि ये आपसे बात करना चाहते हैं। फ़ोन पर उनसे बात की तो मैं स्तब्ध रह गया।

''अशोक भैया कल दो बजे आप मुझे लेकर NCPA (TATA THEATRE) चलिए, वहाँ मेरी प्रस्तुति है, मैंने आयोजक को वादा किया है कि मैं ज़रूर आऊँगा। डॉक्टर ने इसी शर्त पर परमिट किया है कि यदि कुछ हुआ तो आपकी ज़िम्मेदारी।''

शेखरदा IV के साथ NCPA गए, वहाँ प्रस्तुति दी और वापस लौटकर अस्पताल के बिस्तर पर लेट गए।

मेरे मुँह से सिर्फ़ इतना ही निकला 'वाह, शेखर दा।'

नट - ढून्ढन मैं चला, नट - मिला ना कोय
नट जो देखा शेखर सा, शेखर सा नट ना कोय।

अशोक बाँठिया
प्रसिद्ध अभिनेता

अशोक बाँठिया, शेखर सेन, सौरभ एवं श्वेता सेन – उदयपुर

Padmakar Mishra

सन् 1980 में जब शेखरजी से मिला तब सोचा न था कि अवशिष्ट जीवनमात्र ही जिन गिने चुने परम आत्मीयों की व्यक्त अव्यक्त सतत उपस्थिति से अनुप्राणित होगा, शेखरजी उनमें अमिट उत्कीर्ण। बचपन से जिनकी खोज, जैसे वे मिल गये।

-सम्प्रति बृहज्जलाशय के इस पार लन्दन में मैं। प्रत्यक्ष तो न्यून ही पर सतत स्मृतियों में नित्य अपनों से मिलना होता। मुझ परदेसी की अनंत स्मृतियाँ।

-विले पार्ले में कार्यक्रम के बाद पैदल ही लौटते हुए शेखरजी को कष्टकर पगबाधा, हम दोनों नाले के बाँध पर ही बैठ गए। 'शेखर जी राग दैसी ?' 'हाँ-हाँ - खुले स्वर से गाना आरम्भ, 'साँची कहत हौं'.... वहीं राग का समाँ...।

-चौपाटी पर 'हिन्दी गीत रामायण'। अतिथियों में श्री सुधीर फ़ड़के भी। प्रथम ही मैं भी सितार लेकर मंडली में। काँटों का पथ बिरले ही अपनाएँ जहाँ **'येनकेनप्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्'** की होड़, जहाँ षड्जश्रुतिसे मध्यमका मननकर पंचमपर पग धर धैवतको धार निषादनिमग्न निदिध्यासन न होकर पंचमपतित, धैवत धराशायी, निषादकी निरीहतामें (मीडियोक्रिटीयुक्त) **'अहोरूपमहोध्वनिः'** का चतुर्दिक् परिवेश, जहाँ कटाक्षनयनवनमें राह भूलकर समस्त कलाका शृंगारमें ही व्यय और शृंगार भी अश्लीलताके आंगनमें आत्मघाती उछालको उद्यत..... ''वहीं कोई शेखर अनलकी शिखापर अमर बीज बोये चला जा रहा है।''

-समष्टि संस्कार की स्वादिष्ट औषधि रूप 'मध्ययुगीन काव्य गायन', 'मीरा से महादेवी तक' आदि स्थायी भाव अभी जनमन में बने ही थे कि

-अभिनय का अंतरा लेकर 'तुलसी', 'कबीर', 'विवेकानंद' का मंचन करते विश्वसंचारी शेखरजी जब कलाक्षितिज पर महिमामंडित... मेरे मनमें असंख्य स्मृति संवेदनाएं पहले मैं, पहले मैं, करती हुई।

-अपनी बॉबी बाइक् पर कभी उदितनारायणजी, कभी वीरेश्वर गौतमजी, तो कभी राजेश जौहरी जी (तुकबंदी की विनोदपूर्ण स्पर्धा करते हुए) के साथ नूतन प्रियदर्शिनी (शेखरजी का तत्कालीन निवास) की संगीत बैठकों से देर रात निज निज नीड़ों को। वही बाइक् जिसे मुझ अचालक ने खरीदा, पर दुकान से शेखरजी चला लाये थे।

-हिंदी प्रेमी शेखरजी प्रणीत 'हिंदी भाषी मित्र मंडल' फिर 'संकल्प' संस्था।

'आरंभिक दिनों में कितनी सारी अविस्मरणीय संगीत यात्राएँ... शेखरजी के साथ, असम, मणिपुर, नागालैंड, उत्तरप्रदेश।

-अमेरिका की कनेक्टिंग उड़ान छूटने पर गॅट्विक् विमानतल के निकट क्रॉली ग्राम का वह समस्त अतिथि सेवा सन्नद्ध परिवार, शेखरजी, माँ पिताजी और दुर्गा जी की सतत अधिकारवाणी, वह सर्वथा अपेक्षित अद्भुत अतिथि-यजमान मिलन, रात्रि में संगीत गोष्ठी और माताजी द्वारा भारतीय संगीत की सारगर्भित आंग्ल प्रस्तुति।

यजमान का सपत्नि रात्रि में माताजी-पिताजी के पैर दबाना। प्रातः अमेरिका को विदाई.... सब कुछ स्वप्नवत्।

... स्मृतिग्रंथ ही लिखना होगा। अनेक सक्रिय संगी अभिन्न बिछुड़े भी हैं इस आनंदावसर पर हृत्पीड़ा पहुँचाने को।

... हे वागीश्वरि ! द्वादशशतपूर्णिमाओं के पारतक 'सगुणसकलयत्नसफल' युत शेखरजी आनंद सौरभ बिखेरते क्षितिज पर छायें।

पद्माकर मिश्र, लंदन
सितार वादक एवं संस्कृत भाषा के विद्वान

जीजाजी श्री नवगोपाल रॉय की गोद में शेखर

शेखर सेन, पदमाकर मिश्र – लंदन

पिताजी की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में श्री संजीव अभ्यंकर का परिचय देते हुए

Ankit Trivedi

शेखर सेन....

ये गाते हैं तो उनके स्वरों से आती सुगंध मुझे सुनाई देती है
भारतीय संगीत की आध्यात्मिकता इनके कंठ में पालथी मार कर बैठी है
ये किसी को सुनाते नहीं ये अपने संगीत में मस्त हैं
ख़ामोशी के कैनवास पर चित्र आंकते ये साहब
अपनी चेतनाओं को जानते हैं, पहचानते हैं
गाकर बखानते हैं
संगीत में क्या कोई बाधा है ?
भाषा भी माध्यम बन कर खड़ी है
इस बाबू मोशाई को ये सबकुछ आता है
संस्कारों की यही विरासत
संगीत की मेज़बानी बन गया है
मैंने कबीर का संबंध, तुलसी का ऋणानुबंध
और विवेकानंद के सूक्ष्म संवेदन को अनुभव किया है
और मैं
शेखर सेन को जानता हूँ...
शुभ हो... जन्मदिवस....
मौज मज़े से उत्सव मनाते, बीते बरसों बरस...

अंकित त्रिवेदी
गुजराती ग़ज़ल व कविता के सशक्त हस्ताक्षर

शेखर 50
शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Yagya Sharma

शेखर सेन-एक खिलंदड़ा व्यक्तित्व

शेखर सेन पचास साल के हो गये। यह लिखते समय नहीं हुए हैं, लेकिन इसके छपते-छपते हो जाएंगे। मैं बड़ी दुविधा में हूं कि उनके बारे में क्या लिखूँ। क्योंकि शेखर सेन एकल नाट्य प्रस्तुतियां तो करते हैं, लेकिन शेखर सेन किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं है। वे गायक हैं, अभिनेता हैं, नाटककार हैं, संगीतकार हैं, नर्तक हैं, लेखक हैं, और सबसे बड़ी बात बड़े हंसमुख हैं। अगर, आप उनके पास बैठें और पांच मिनट के अंदर न हंसें, तो ज़रूर आपके अंदर कुछ गड़बड़ है।

तो, मेरी दुविधा यह है कि मैं शेखर सेन के बारे में क्या लिखूं। मुझे उनकी किसी कला की तकनीकी जानकारी नहीं है - अभिनय का 'अ' नहीं मालूम, संगीत का 'स' नहीं मालूम, गायन का 'गा' नहीं मालूम और नाटक का 'ना' तो बिलकुल ही नहीं मालूम।

लेकिन, एक श्रोता या दर्शक की तरह मुझे उनकी हर प्रस्तुति में रस मिलता है। इसलिए, मैं शेखर सेन के बारे में जो कुछ कहूंगा, केवल श्रोता की दृष्टि से कहूंगा। और, सबसे पहले यह मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि शेखर सेन की गंभीर से गंभीर प्रस्तुति में भी उनका खिलंदड़ापन कहीं न कहीं झलक ही आता है।

चुलबुला गायक शेखर सेन के गायन में अद्‌भुत विविधता है। मुझे उनकी गायी दो कविताएं सबसे अलग लगती हैं। एक है - 'सीता को देखे सारा गांव' और दूसरी 'नैना नंदलाल के'। ये दो प्रस्तुतियां उनके गायन के दो ध्रुवों को दरसाती हैं। सीता वाली प्रस्तुति एकदम गंभीर तथा भावनात्मक होती है और 'नैना नंदलाल के' बेहद चुलबुली। अगर आपको कभी शेखर सेन से 'नैना नंदलाल के' सुनने को मिले तो सिर्फ़ सुनिये मत, आप एकटक शेखर सेन की आंखों को देखिये, लगातार। आपका रस दोगुना न हो जाए तो कहियेगा।

शेखर सेन ग़ज़ल भी गाते हैं। मुझे आम ग़ज़ल गायकी ज़्यादा प्रभावित नहीं करती। क्योंकि ग़ज़ल चाहे ग़म की हो या खुशी की, ज़्यादातर गाने वाले उसे बहुत गाढ़ी चाशनी में लपेट कर गाते हैं। बहुत साल पहले मैंने एक प्रतिष्ठित गायक को दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल गाते सुना था। अपने सुरों की चाशनी में लपेट कर, उन्होंने दुष्यंत कुमार की बालूशाही बना दी थी। और, उस वक़्त मुझे लगा था कि दुष्यंत कुमार को गाया नहीं जा सकता। लेकिन, फिर मैंने शेखर सेन को दुष्यंत की ग़ज़लें गाते सुना। शेखर के सुरों में वही तेवर था जो दुष्यंत की भाषा में है। मैं यह बात दावे के साथ तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरे खयाल से दुष्यंत की ग़ज़लें गा कर शेखर सेन ने ग़ज़लों को वीर रस नहीं तो, एक जुझारु स्वर ज़रूर दिया है।

नटखट नाटककार शेखर सेन की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे अपने नाटक अकेले प्रस्तुत करते हैं। कबीर भी ख़ुद, तुलसी भी ख़ुद और विवेकानंद भी ख़ुद। वेदों में कहा है 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदंति'। (अगर आपको यहाँ इस उद्धरण का औचित्य समझ न आ रहा हो तो चिंता न करें, शेखर सेन समझ लेंगे)।

मुझे उनके नाटकों में कबीर सबसे ज़्यादा पसंद है। और कबीर में भी वह एक दृष्य, जहां कबीर गंगा के किनारे बैठे हैं। वे एक कंकड़ उठा कर गंगा में फेंकते हैं और साउंड ट्रैक पर आवाज़ आती है - गुड़ुप। शेखर सेन के तुलसी वाले नाटक की प्रस्तुति भी उत्कृष्ट है। लेकिन, मैं जानता हूं गंगा में कंकड़ फेंकने का काम शेखर सेन के तुलसी नहीं कर सकते। कबीर तीख़े होने के साथ-साथ नटखट भी थे। और, शेखर सेन जैसा एक नटखट नाटककार ही कबीर के चरित्र के उस पक्ष को समझ सकता था।

तो श्रीमान शेखर सेन, आपको आपके पचासवें जन्मदिन पर पचास बधाइयाँ। पचास क्यों ? क्योंकि आपके पिचहत्तरवें जन्मदिन पर मैं पिचहत्तर दूंगा और सौवें पर सौ। बस, आप उनके हिसाब से मिठाई तैयार रखियेगा।

यज्ञ शर्मा
विख्यात व्यंग्यकार

Suryabala

'जो इतनी खुशबु बिखेरता है उसके लिये कुछ फूल'

शेखर पचास के ?
अरे चुप . . . . .
पचास के लोग देखे हैं ?
भागा दौड़ी, अफरा तफरी उठा पटक, घमासान
शान, बान और तामझाम
फिर भी बेचैन फिर भी परेशान कि इतना तो पाया पर बाकी कितना? और कैसे?
कि पूरा हो टारगेट

नहीं भाई नहीं
शेखर कैसे होंगे पचास के?
नहीं भाई नहीं, शेखर सच में हो गये पचास के .

और ऐसे हुए कि जैसे . . . ओस धुली सुबह, नरम किरन बान
मुदित, मगन, शांत, शुचित
अपने तईं खिले फूलों की तरह
फूलों से ज़्यादा खुशबु कि तरह
कि सब हो सुवासित, सब हो आल्हादित

ईश्वर करे कि सब हों पचास के
शेखर की तरह
पचास, पिचहत्तर, सौ जो भी हों शेखर की तरह हों हम सब

'सूर्यबाला'
प्रख्यात लेखिका

Sameer Mandol

ঠিক কিভাবে একজন ৫০ বছরের মানুষকে অন্য মানুষের কাছে তুলে ধরা যায় তার সঠিক কোনো ভাষা নেই আমার। শেখর সেন সহৃদয় মানুষ। শিল্পী মানুষ। একেবারে ষোলো আনা শিল্পী সে ব্যাপারে আমার এখন আর কোনো সন্দেহ নেই। আমার সঙ্গে শেখর বাবুর সম্পর্ক কী তা ভাবলে আমার মনে হয় উনি আমাকে বন্ধু হিসাবে গ্রহণ করেছেন। আমি মুগ্ধ। মানুষটির কর্মকান্ড নিয়ে আলোচনার ক্ষেত্র বোধ হয় এটা নয়। তবে একলাইনে বলতে বললে আমার কাছে শেখর বাবু - সমকালীন কথক ঠাকুর। শিল্পচর্চার এবং পরিবেশনার ব্যাপারে ওঁর স্নায়ুর চাপ সহ্য করার ক্ষমতাকে আমি বিশেষভাবে শিক্ষনীয় মনে করি। শেখর বাবুর শিল্পের প্রতি আমার শ্রদ্ধা এবং ওঁর জন্য দীর্ঘায়ু কামনা রইল।

সমীর মন্ডল
মুম্বাই ২০১১

ठीक किस तरह एक पचास वर्षीय व्यक्तित्व को दूसरों के सामने परिभाषित किया जाता है वो भाषा नहीं है मेरे पास !
शेखर सेन एक सहृदय इंसान हैं, कलाकार हैं ! एकदम सोलह आने शिल्पी, इस विषय में अब मुझे रंच मात्र भी संदेह नहीं है।
मेरे साथ शेखर बाबू का रिश्ता क्या है ? तो कहूँगा कि उन्होंने मुझे एक आत्मीय मित्र के रूप में ग्रहण किया है, मुग्ध हूँ में -
व्यक्ति के कर्मकांड का लेखाजोखा करने का शायद ये प्रसंग नहीं है पर एक वाक्य में कहूँ तो मेरे लिए शेखर बाबू, समकालीन वाकशिल्पी हैं।
...कथोकथन के जादूगर !
अपनी विशिष्ट साधना व प्रस्तुति में वो किस तरह सहज भाव से अपनी कलाओं का समागम करते हैं, सचमुच सीखने योग्य है।
शेखर बाबू की सृजनशीलता के प्रति मेरी श्रद्धा व उनके लिए दीर्घायु कामना !

समीर मंडल
विख्यात चित्रकार

विदूषी गिरिजा देवी जी के साथ

साथी कलाकारों के साथ

लिंडा हेस व प्रहलाद तिपानिया जी के साथ

पहली कबीर लन्दन यात्रा में, पंकज, शशि व पथिकृत

शेखर 50
शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Madhusudan Agrawal

शेखर भैया को हमने जैसा देखा, समझा व महसूस किया है, वह संक्षिप्त में आपके साथ बाँटना चाहते हैं। शेखर भैया बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं, उच्च कोटि के गायक होने के साथ-साथ आपने अभिनय, निर्देशन व लेखन के क्षेत्र में भी माहिरता हासिल की है।

आपने अपनी मेहनत, लगन एवं सूक्ष्म अध्ययन के बल पर महापुरुषों की जीवनी को सशक्त नाटक का रूप दे मंच पर उतारा व सर्व साधारण को इनके जीवन को समझने को मौक़ा दिया। तुलसीदास, कबीर, विवेकानंद, साहब आदि नाटकों में आपने एकल अभिनय किया। तरह तरह की आवाज़े, उतार चढ़ाव, भजन, छंद आदि डालकर सभी नाटकों की सुन्दर प्रस्तुति की। आपके जीवंत अभिनय से महसूस होता है तुलसीदास, कबीर, विवेकानंद स्वयं मंच पर आ गए। आप अभिनय में इतने आत्मसात हो जाते हैं कि शेखर भैया नहीं रह जाते।

50 वर्षों के संघर्ष से आपने कला की बुलंदियों को छू लिया है। आपके देश-विदेश में कई प्रयोग होते रहते हैं। अभी अभी हाल में आपके नाटकों की 600वीं सफल प्रस्तुति हुई। आपने जिस लगन मेहनत सच्चाई से इस मुकाम को हासिल किया उसके लिए आप प्रशंसा व बधाई के पात्र हो।

ये सही है -
जिनके दिलों में है आग, उन्हीं को मिलते है रास्ते,
ये दुनिया नहीं है यारो बुज़दिलों के वास्ते।

आपकी सफलता में श्वेता भाभी का बहुत हाथ है। जीवन के हर उतार चढ़ाव में उन्होंने आपका साथ दिया, आपको प्रेरणा दी, आपका हौसला बढ़ाया और इस कहावत को चरितार्थ किया BEHIND EVERY SUCCESSFUL PERSON, THERE IS A WOMEN.

मैं भूल नहीं सकता शेखर भैया, जिस तरह आपने मेरे घर आ आकर, रात में देर तक मुझे रियाज़ करवा कर, मेरे भजनों की सीडी 'संस्कार' बनवाई थी, उसमें आप का ही संगीत था। आपका 'लजीले सकुचीले... नैना नंदलाल के' भजन हमारा अति प्रिय भजन है। सारी उपमाये प्रभु की आँखों की, गाते समय मानो आपकी आँखों में उतर आती हैं। शेखर भैया अभी अमेरिका आये थे। आपके नए-नए पहलु हमें मालूम हुए। आप सिर्फ़ गायक ही नहीं जादूगर भी हैं। कई ताश के पत्तों के जादू दिखाए। आपको चुटकुले भी बहुत आते हैं रात में घर पर 2-3 बजे तक सबको बहुत हँसाया। शेखर भैया तो हमारे परिवार के एक सदस्य हैं, मेरे भाई हैं।

ममता कहती है शेखर भैया न केवल गीत, संगीत, छंद में रंग भरते हैं, भैया तो बड़े स्वादिष्ट अचार भी बनाते हैं। आपसे हम हरदम जुड़े रहें यही प्रार्थना है। ईश्वर से दुआ माँगते हैं आपका सान्निध्य एवं साथ हमें और कला जगत को आने वाले कई वर्षों तक मिलता रहे।

आपका स्नेही....

मधुसूदन अग्रवाल
आत्मीय मित्र व उद्योगपति

Kashiprasad Kheria

भाई शेखर सेन से मेरा परिचय भारतीय संस्कृति संसद, कलकत्ता में क़रीब 40-42 वर्ष पहले हुआ। तब वो और उनके बड़े भाई कल्याण, अपने गुणी माता पिता डॉ. अनीता सेन व डॉ. अरुण कुमार सेन के साथ गीत रामायण की प्रस्तुति दे रहे थे। एक सशक्त रचना गायी जा रही थी, और ये छोटे-छोटे दो भाई लव-कुश की तरह पीछे बैठ कर अपने माता पिता के साथ स्वर मिला रहे थे। तबसे शेखर को बाल, किशोर, युवा और अब पचास वर्ष का देख रहा हूँ। तब से आज तक बड़ा ही अभिन्न व आत्मीय संबंध बना हुआ है। मुझे स्मरण है 1993 के वे दिन भी जब शेखर भाई अपनी धर्मपत्नी श्वेता के साथ वृन्दावन पधारे व हमारे साथ छह दिनों तक रहे।

एक दिन यमुना जी का दर्शन करके हम लोग वापस आ रहे थे तो रास्ते के एक मंदिर के एक पुजारी ने शेखर भाई को पहचान लिया और अनुग्रह करके मंदिर के प्रांगण में ले गए और भजन गाने का निवेदन किया। बस वहीं पर सहज भाव से बृजभूमि पर बैठकर शेखर भाई ने भजन गाना शुरू कर दिया। यह है शेखर की महानता, सहृदयता और सरलता भी।

मुझे इस बात की बेहद ख़ुशी भी है कि मेरे वृन्दावन निवास के प्रवास में शेखर भाई ने कुछ भजनों की रचना की, जो बाद में 'सत्यम श्याममम सुन्दरम्' भजन अल्बम के रूप में प्रसारित भी हुआ। शेखर भाई ने बहुत कठिन दिन देखे हैं, पर प्रभु की असीम अनुकम्पा से इनके एकाकी प्रस्तुतियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली है। और हाँ आप भजन गायकी में सिद्धहस्त तो हैं ही पर आपकी प्रस्तुति में आपके माता-पिता का प्रतिबिम्ब साफ़ दिखाई पड़ता है।

वृन्दावन में बैठकर बाँकेबिहारी जी से प्रार्थना करता हूँ कि आप नए शिखर, नए कीर्तिमान स्थापित करें, स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों।

काशीप्रसाद खेरिया
कवि व उद्योगपति

Indira Walter

बचपन शेखर का...

शेखर से मुझे उसके बाल्यावस्था से ही बहुत लगाव था। मैं डॉ. सेन द्वारा स्थापित लक्ष्मीनारायण कन्या शाला में शिक्षिका के पद पर नियुक्त थी। सेन परिवार का निवास स्थान शाला परिसर में ही होने के कारण रोज़ मिलता था। छोटा सा, प्यारा सा, बड़ी-बड़ी आँखो वाला, हमेशा मुस्कुराने वाला, मेरे गोद का मासूम बेटा शेखर सबके आकर्षण का केन्द्र था। कुछ बड़ा हुआ तो बस्ता लटकाकर प्राइमरी स्कूल में जाने लगा और फिर शहर के प्रसिद्ध शाला सैंट पॉल्स हाईस्कूल में प्रवेश लिया। वह विज्ञान का विद्यार्थी था। अध्ययन में कमज़ोरी दिखने पर हम शिक्षिकाएँ (मैं, श्रीमती भावरा आदि) उसे स्नेहवश पढ़ा देतीं। वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का था। शिक्षकों से विषयानुसार अनेक प्रश्न करता और सही उत्तर मिलने पर ही उसे संतुष्टि मिलती।

खेलकूद में भी शेखर को बहुत रुचि थी, ख़ासतौर पर क्रिकेट में। साथ ही स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों में भी अत्यंत दिलचस्पी थी। उसके जन्मदिन पर मेरे द्वारा बनाया हुआ केक उसे बेहद पसंद था। वह बहुत शौक से खाता और मुझे आत्मसंतुष्टि मिलती।

संगीत तो उसके खून में था, परन्तु किशोरोवस्था में उसने ज़्यादा रूचि नहीं दिखाई पर जब वह रेडियो के स्वर परीक्षण में असफल हुआ तो इस घटना ने उसके अंतर्मन को बहुत चोट पहुँचाई और उस असफलता ने ही आज सफलता की चोटी तक पहुँचाया।

आज मुझे याद आता है कि सेन साहब के घर पर एक वृद्ध परिचारिका थी... राधाबाई। परिवार के सभी सदस्य उसे अपना ही समझते थे। पर शेखर के प्रति उसके मन में विशेष अनुराग था। बचपन में वह शेखर को 'शेखर बाबा' कहकर सम्बोधित करती थी। शेखर अक्सर उसे सताता, उसके साथ खेलता, राधाबाई भी उसकी शैतानियों का मज़ा लेतीं, इसके बराबर का होकर खेलती, हँसती, दुलारतीं थी। बचपन में घर में धमाचौकड़ी मचाने वाला, उन्नत ललाट और आकाश को छूने, कुछ पाने, कुछ नया करने के लिए आतुर वे आँखें, बाल्यावस्था से अपनी दिशा को खोजती...अब शांत, गंभीर व नए विचारोंवाला युवक आज भी चरणस्पर्श कर आशीर्वाद पाने की ज़िद करता है।

ऐसे परिश्रमी, सहनशील व बुद्धिमान बेटे शेखर को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं स्नेहाशीर्वाद।

इंदिरा वॉल्टर
व्यवस्थापिका
लक्ष्मी नारायण कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला, रायपुर

शेखर सेन, श्रीमती वाल्टर व भावरा मैडम

Sangeeta Shankar

शेखर सेन - इस फ़ेमस नाम को कई बार अख़बारों में पढ़ा था, उन्हें दूर से नाटकों में देखा था, इनकी लिखी कविता का रसपान भी किया था और भजनों का आनन्द भी लिया था। कभी-कभार सम्मेलनों में सलाम-नमस्कार भी हुआ था।

लेकिन जिस दिन शेखर सेन, इस व्यक्ति को जाना, पता चला कि ऊपर वाले ने कितनी फ़ुर्सत से इस व्यक्तित्व को बनाया है। विचारों की उच्चता, उच्चारित वाक्यों की शुद्धता, वाणी में मृदुता, हृदय में कोमलता, जनहित की मानसिकता - इन सबके साथ-साथ सदैव प्रसन्न रहने और दूसरों को प्रसन्न रखने की क्षमता। इन सभी गुणों ने शेखरजी को सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया है।

भगवान शंकर से प्रार्थना है कि इनकी 50वीं वर्षगाँठ पर इन पर अपने आशीर्वाद का रस बरसायें।

मंगलाकांक्षी।

संगीता शंकर
प्रख्यात वॉयलिन वादिका

BIRD
PARK

Jaswant Singh

सन् 1986 में मेरा पहला परिचय हुआ उनकी शादी से पहले, पर सन् 1990 तक वो मेरे प्रगाढ़ मित्र बन गए। पारिवारिक रिश्ते बने। 1994 से वो मेरे गुरु भी बन गए। बहुत कुछ सीखा मैंने उनसे। आज भी वो मेरे बड़े भाई समान हैं, मेरे बच्चों के ताऊजी को हम सभी पूरा सम्मान व आदर आज तक देते हैं। समय-समय पर सलाह भी लेते हैं। पेश है उनके 10 गुण उनके 50वें जन्मदिवस की शुभकामनाओं के साथ :

पहला : थोड़ा पुरानापन, थोड़ी आधुनिकता का एक अच्छा मिश्रण मैं शेखरजी के व्यक्तित्व में महसूस करता हूँ।

दूसरा: अपने काम के प्रति अगाध श्रद्धा और कर्मठता सबसे बड़ा गुण है, उनके सफल जीवन का।

तीसरा: अपने व्यक्तित्व को सामने वाले के व्यक्तित्व में ढालकर, उससे व्यवहार करना, एक अनूठा गुण पाता हूँ उनमें।

चौथा : बिना किसी बाहरी दिखावे के, अपने माता-पिता को सच्चाई से याद करना व उनको समर्पित होना, ये उनका बड़ा ही ऊर्जा प्रदायक गुण है। (बेहद कड़वाहट के बावजूद वो अपने भाई कल्याणजी को बेहद प्यार करते हैं)।

पाँचवाँ: आज के घोर कलियुग में सबसे बड़ा भगवान पैसा, उसके लेन-देन में बेहद साफ़-सुथरापन मैने हमेशा प्रत्यक्ष देखा है, और अपने दोस्तों, रिश्तेदारों पर बिना किसी माथे की शिकन के वो खर्च करते हैं एवं दोस्तों रिश्तेदारों का स्वागत... एक महानता की ओर ले जाने वाले गुण से मैं प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता। इस बारे में उनसे सीखा है मैंने।

छठवाँ: लेखन क्रिया, चाहे वह गीत हो भजन हो या नाटक हो हमेशा एक नयापन, एक अनूठापन का जिसका कोई सानी नहीं मिलता मैं बेहद प्रशंसक हूँ। उनके लिखे कुछ अनूठे गीत :

'कुछ सीधे-साधे प्रश्न हैं जवाब दीजिये'
'जैसे नैनों में ज्योति और सीप में मोती'
'बिना दवा के मर जाते हैं यहाँ पे जच्चा-बच्चा' इत्यादि।

सातवाँ: एक बेहद प्रशंसा योग्य गुण - अपने ग़ुस्से को पीने एवं कभी ज़ाहिर न करने का अनोखा गुण, समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाने में मददगार रहा है।

आठवाँ : कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य न खोना, सच्चाई पर अडिग रहना, यह अद्‌भुत क्षमता मैंने अपने निकटतम लोगों में सबसे ज़्यादा, आप में देखी है अन्य किसी में नहीं।

नवाँ: किसी को भाँपने व अन्दर की गहराई मापने और तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता बेहद प्रभावशाली है।

दसवाँ: मैं कभी-कभी अपने मन में उन्हें 'बालि' की उपाधि देता हूँ। क्योंकि दूसरों की क्षमताओं को अपने लिए कैसे और कितना उपयोगी बनाना है, ये कला उनसे बेहतर मैंने किसी में नहीं देखी।

जसवंतसिंह
ग़ज़ल गायक एवं मित्र

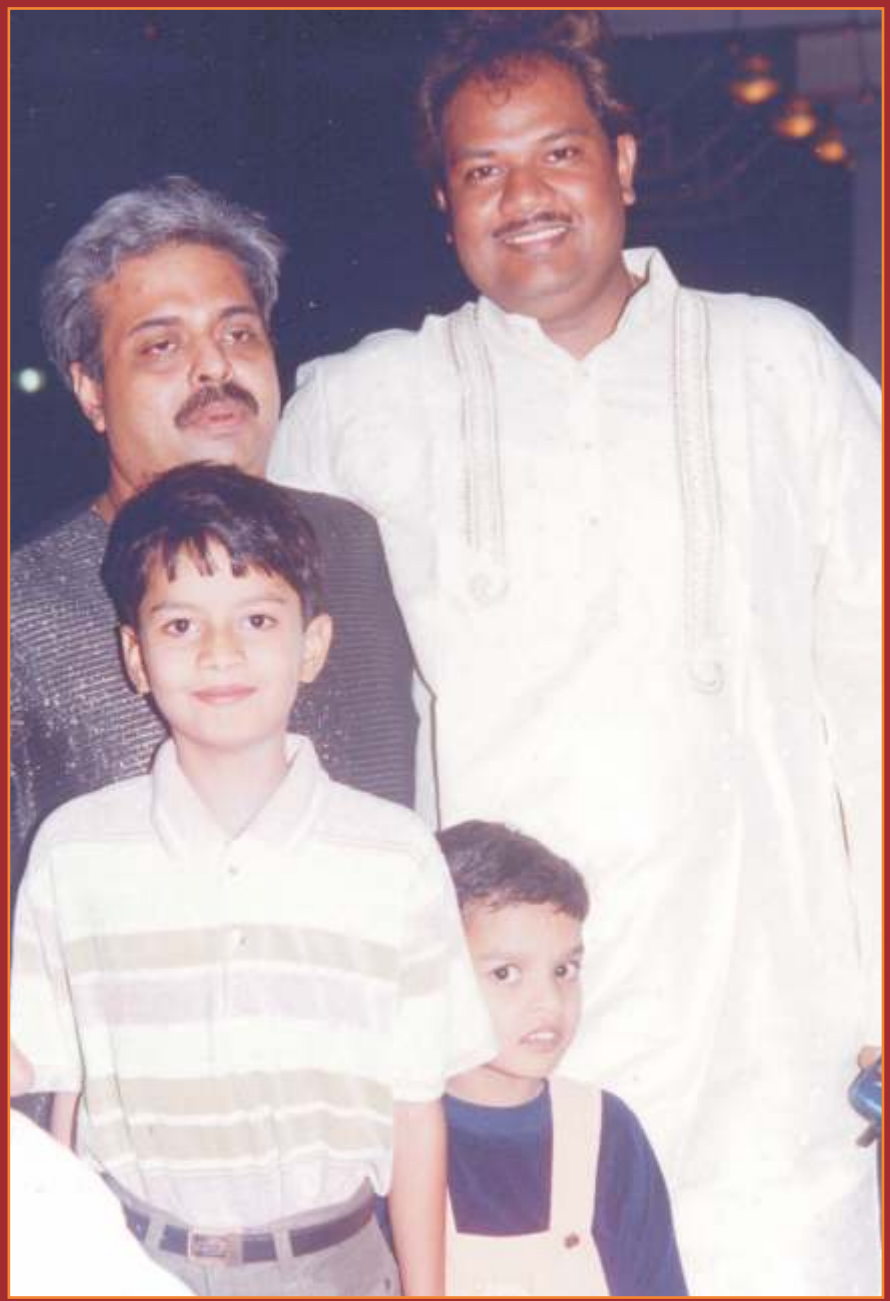

शेखर और जसवंतसिंह का परिवार

श्रीमती पुष्पा भारती के साथ शेखर

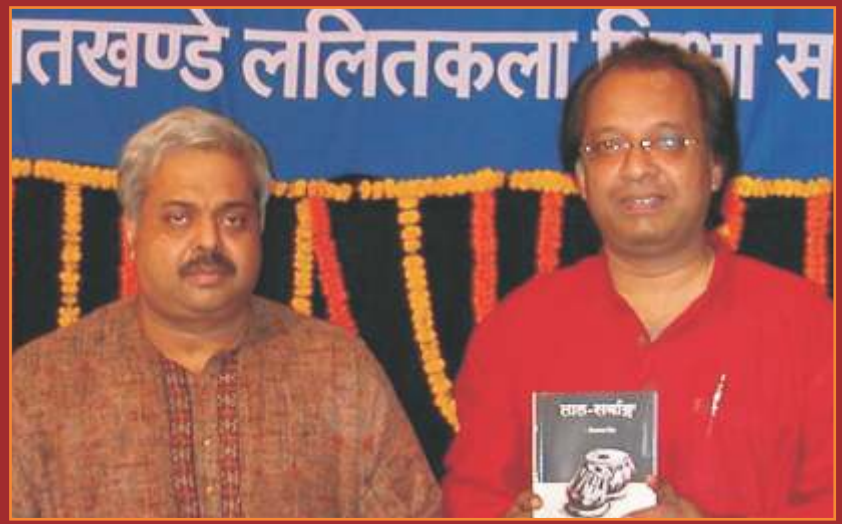

पं. नयन घोष के साथ शेखर

Supriya Jhunjhunwala

Shekhar bhaiya...

Happy fiftieth birthday

I've known you since I was three I think...

You've known me longer though, many of my childhood antics have been narrated to me by you, specially how you became our brother. Your parents and my parents were great friends so much so that your dad bought an apartment in the building we lived in and my parents became your local guardians.

You've always been my favourite brother I remember keeping aside the largest, most glittering (and in retrospect gaudiest) rakhees with sponges and tinsel on them for you; playing and cheating at carom and monopoly and most importantly, your role as my first music guru where you had to bribe us with jokes just to get us through a class. Thirty years later the jokes haven't changed some of them (unfortunately) have even found their way into your new play saahab but the boy we knew has turned into an extraordinary, yet humble artist, reflective philosopher and exceptional human being who had the courage to follow his convictions.

A story you narrated to me has had a profound impact on governing my life choices. While struggling to keep your first play 'Tulsi' afloat you and Shewta Bhabhi had to sell everything and almost ended up selling your only home in Mumbai. Fortunately or unfortunately the buyer had seen 'Tulsi' and refused to be responsible for the "ghor mahapaap" of taking away the roof over your head.

When asked by someone "why take such a huge risk" you said that "people are not going to remember me because of where I live but because of what I did". And what a legacy you have already created. Four of the most stirring, soulful and introspective plays of our era.

But personally I think the greatest contribution you make is by just being the person you are and I feel blessed for having you and Shweta Bhabhi in my life.

Here's to the next fifty...

With warmest regards
Gullu
(Supriya Geetanjali Radheshyam Jhunjhunwala)

▸ *Ps. Please stop singing "meri behanaa hoti re" in 'saahab'. Are main hoon na!!!*

Chhaya Ganguli

HAPPY BIRTHDAY, SHEKHAR!

In this fond tribute CHHAYA GANGULI, Asst Station Director Mktg, Doordarshan, Mumbai, or "Didi" as Shekhar calls her, highlights what makes her brother truly special

Way back in the '80s when I first heard Shekhar Sen singing compositions seeped in “bhakti ras” at the HMV studio, I was enchanted by his moving rendition and very impressed by his simple, effortless and effective oratory.

My second opportunity to discover yet another facet of this multi-dimensional genius came , when I was invited to sing for the HMV recording of the' Sampoorna Sundarkand', for which Shekhar was the composer. The ease with which he recreated a Raag Kirwani composition almost overnight to suit my scale and pitch told me very clearly that Shekhar was gifted with extraordinary talent.

This was the fortunate beginning of a tremendously fulfilling and heartwarming bond that has only grown over these two decades. I remember how gently and eloquently Shekhar interviewed the brilliant but shy saxophone wizard the late Shri Manohorida, in chaste Hindi over 15 episodes of the' Sangeet Sarita' programme broadcast over the Vividh Bharati Service. I remember Shekhar coming to my rescue whenever I needed a composition, a top notch performer, or even guidance about any musical production. What I remember most of all is that Shekhar neither said “No”, nor did he ever fail to deliver exactly what I wanted.

For my production “Raag Roop Rang Bhakti Ras Ke Sang”staged at the N.C.P.A., he even walked out of a hospital bed to do his 15-minute act, leaving me very grateful and totally amazed by his dedication and staunch commitment to the belief that the show must go on. To date, there have been innumerable variations of Shekhar's role in my workaday world at the Vividh Bharati Service, Doordarshan, or elsewhere as script writer, composer, singer, presenter et al.

I have always been a passionate student in life's varied classrooms. By the grace of God, I have also met and had long associations with some of the greatest performing artistes and Gurus.Today, I count Shekhar as one of my most valued associates and teachers whose

home has the magical ambience of music, literature, painting,great food, cooked by him or wife Shweta and spiced with Shekhar's incredible sense of humour.

In a Bollywood- smitten metro like Mumbai, Shekhar Sen with his stupendous achievements , global presence and yet, total humility is like an indispensible bridge between lasting values and the lay person who can only understand home-truths dressed in attractive and aesthetic' edutainment' packages.

What is truly remarkable is that Shekhar's mental canvas is unbound and abundant. He listens to all forms of world music, loves entertaining, makes time to call or visit a friend in need and yet finds time to plan for the next Choupaal, paint, teach, compose, or write yet another super-successful play in which he will emote, sing and leave an everlasting impression on your psyche by the impact of his multiple skills.

Therefore, I know for sure that anyone (and this includes me) who meets, or views a production of this colossal and yet so co-operative artiste can never, ever forget Shekhar Sen.

(As told to Shailaja Ganguly)

Chhaya Ganguli
Playback Singer

सुन्दर काण्ड प्लेटिनम डिस्क : 1987

सुन्दर काण्ड की गायिकाओं के साथ शेखर सेन : 1987

कबीर का 300वाँ मंचन : 2011

Om Katare

श्री शेखर सेनजी,

50वीं सालगिरह पर आपको हार्दिक बधाई।

शेखर सेनजी, एक निपुण गायक है, एक कुशल कलाकार, एक अच्छे लेखक निर्देशक है। जिन पात्रों (कबीर, तुलसी, विवेकानंद) को वो अपनी गायकी और अभिनय के माध्यम मे मंच पर जीवन्त करने की कोशिश करते है, वो मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा लगता है। लेकिन शेखरजी बड़ी सहजता से उन पात्रों की जीते है वो एक गायक कलाकार है और रंगकर्मी हैं । ऐसा कॉम्बीनेशन थियेटर में बहुत कम देखने को मिलता है। उन्हें गाते हुए, मंच पर देखना बहुत अच्छा लगता है और ईर्ष्या भी होती है। मैं उनके अच्छे भविष्य की कामना करता हूँ। उनके साथ कभी काम करने का मौक़ा मिले, ये मेरा सौभाग्य होगा।

ओम कटारे
निर्देशक, यात्री थियेटर एसोसिएशन, मुंबई

Alok Pathak

Whenever, I meet this naughty childhood friend, memory goes back to the day when I first met him. Thin, short but indomitable. Innocent looks were damn deceptive. Anurag was his name. A good singer, definitely the best in St Paul's School at Raipur.

I was however, more impressed by his acting. When caught by Principal, he could instantly bring tears and a story that would often get him to class without a warning. Entire history class he would narrate me Ranu's latest novel, looking straight at the teacher. His jokes, very original, always brought instant smile, yet when teacher asked for explanation, innocent face oozing sincerity could save him but not me!

We were good at bunking class. He always had some original ideas to do so. Then I paddled him around on bicycle while he used to mimic all teachers, and our most favourite, the principal Mrs Chaudhari. I do not recall him ever sad or emotional except when he was acting.

We remained good friends. I saw him growing to a great singer, actor, writer, director and now painter. The goodness in him remained the same, full of joy , life and friendship.

And, yes, I have never found him pessimist during our 44 years of friendship. His journey from Anurag to Shekhar Sen had many challenges that some times scared me, but for someone as crazy as Anurag, nothing could stop him from fulfilling his dreams.....

Very few are as lucky as I am, 44 years of golden moments, full of fun. Deep down in my heart I am consciously aware that, his oft repeated sentence "Naukari mein no curry - Jobs are without curry" may have influenced my own course of life. I don't know how many more lives he may have changed/influenced but I am certain that through Kabeer, Tulsi, Vivekanand and Saahab - he changed course of theatre, artists and reminded many of us how to lead a simple and good life!

Alok Pathak
class fellow & a very dear friend

Seema Pathak

अनुराग भाई आपकी पचासवीं वर्षगाँठ पर आपको बहुत-बहुत बधाई।

आपका परिचय मेरे साथ इस नाम के द्वारा ही हुआ। जब आपके मित्र आलोक पाठक ने कहा कि आज मैं तुम्हें बचपन के मित्र अनुराग के बारे में बताना चाहता हूँ... फिर ये बोलते रहे ओर मैं सुनती रही... तब समझ में आया कि अनुराग और आलोक की दोस्ती कितनी गहरी है (जलन सी होने लगी)।

बात उन दिनों की है जब आई.आई.टी., मुंबई में आपके गायन का प्रोग्राम था और मुझे शादी करके आये कुछ ही माह हुए थे। आलोक ने कहा कि आज शाम आपका प्रोग्राम देखना है और मैं आपसे मिलने को आतुर थी। क्यों न होती क्योंकि आपके मित्र से आपके बारे में बहुत कुछ सुना जो था तो आतुरता तो थी ही...

फिर वहाँ आपके द्वारा ये कहना कि आज की शाम मैं अपनी 'भौजी' को समर्पित करता हूँ, मैं आत्मविभोर हो गयी थी, सच कहती हूँ आँखों से आँसू छलक आए, इतना बड़ा सम्मान जो दिया था आपने। फिर श्वेता का आपके जीवन में आना और ये मित्रता गहरी होती गई। मैं शिल्पी, शेफ़ाली और आपके यहाँ सौरभ, इन सदस्यों के आगमन के साथ हम माता-पिता से काका और काकी भी बन गए।

अब जब मैं आपके साथ शिल्पकार से भी जुड़ी तो ऐसा लगा कि सेन व पाठक परिवार और ज़्यादा एक हो गए हैं।

बस अब भगवान से यही प्रार्थना है कि वो आपको हमेशा स्वस्थ रखे व आप सपरिवार प्रसन्न रहें व ऊँचाइयों की ओर बढ़ते रहे।

सीमा पाठक
मित्र आलोक पाठक की सहचरी एवं शिल्पकार की निदेशक

Mradula Bansal

जन्मदिन मुबारक हो !

शेखरजी से मेरा परिचय 'कबीर' नाटक के माध्यम से हुआ। शिकागो में मेरे एक मित्र ने इस नाटक का कैसेट टेप मुझे सुनने के लिए दिया। काम पर जाते समय मैंने इसे सुनना शुरू किया। दफ़्तर पहुँचने पर भी नाटक पूरा नहीं हुआ था, इसलिए उसे बीच में बंद करने के बजाय मैं पार्किंग में लौटकर चक्कर काट रही थी और उसे पूरा सुनने के बाद ही अपने दफ़्तर में घुसी। मैं चमत्कृत थी... कथावाचन, गायन और दोहों का चयन... कुल मिलाकर मैं पूरी तरह सम्मोहित थी।

मैंने पता ढूंढकर शेखर जी को एक ई-मेल भेजा। मुझे उत्तर की आशा कतई नहीं थी, लेकिन उत्तर पाकर मैं आश्चर्यचकित रह गई। इतने बड़े कलाकार ने मुझ जैसे साधारण व्यक्ति के लिए समय निकाला ?

वर्ष 2009 में जब शेखरजी सपरिवार छुट्टी बिताने अमेरिका आए और मैंने आपको एक गाने के जलसे के लिए शिकागो मेरे घर आमंत्रित करने का दुस्साहस किया, तब भी आपने समय निकाला।

हमारे देश के महान संतों की वाणी आप हम सब तक पहुँचा रहे हैं। आपकी मित्रता मेरे लिए बहुमूल्य है। फ़ेसबुक पर आपके साथ जो भी आदान-प्रदान होता है वह मुझे हमेशा तरो-ताज़ा करता है। आपकी कविताओं और क्षणिकाओं का तो जवाब नहीं। मेरी यही प्रार्थना है कि आपकी यह ज़िंदादिली बनी रहे और आपकी कला के ज़रिये आप अनगिनत लोगों की ज़िंदगी में इसी तरह आनंद का संचार करते रहे।

शुभकामनाओं सहित।

मृदुला बंसल
आत्मीय शुभचिंतक

पं. उल्हास कशालकर एवं पं. सुधीर नायक के साथ

पिताजी की स्मृति में माँ डॉ. अनिता सेन का अंतिम कार्यक्रम, रायपुर

शुभा मुद्गलजी एवं अनीश प्रधानजी के साथ

कलाकार मित्र मंडली, रायपुर

Shobha Deepak Singh

YOUR HUMOROUS SELF

Shekhar Sen-

It was at the end of April 1998 or early May 1999 that I happened to see a production by Samagam titled Kabeer. I was bowled over by the show- the technique, the solo show interpreting all the characters; not to mention the nature of the content that had a message for all religions. I bought the soundtrack of the show and listened to it all the time. My mind was made up that the Kendra should sponsor the show.

But since Shekharjee was going to be in Delhi for another day I requested him to meet me in my office the following day. He was agreeable and we found the available dates in Kamani and locked in the dates available were which were 4th and 5th May 1999. The Kendra staged Kabir and Tulsi to an audience who had never seen anything like this.

Shekharji and us have shared a wonderful relationship. His sense of humour is exemplary and he has a bagful of jokes for every occasion. In fact no conversation with him complete without humorous interjections. And as Oscar Wilde said "It is a curious fact that people are never so trivial as when they take themselves seriously."

But importantly, Shekharji is a wonderful human being, generous to the core and his company has always been seriously intellectual on the one hand and rib-splittingly humorous on the other.

We have had the good fortune of staging his shows at many events. The quality of the offerings are so profound that I derive newer meanings in them.

Over the years, I have seen many successful artists. But I have yet to meet a person who has achieved the success as Shekharji and yet remained totally humble at his moment of glory.

On this very auspicious occasion, Deepak and I wish him happiness and prosperity; and more importantly; may his wings of creativity soar to yet loftier heights.

Shobha Deepak Singh
Bharteey Kala Kendra, Delhi

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Devendra Mantri

My dear Shri Shekharji,

We always cherish our relationship as an intimate friend and it is a treat to see your performances as a unique artist.

Tanuja joins me in wishing you, in advance, on the landmark day of your 50th birthday on 16th February 2011.

May God continue to bless you with innovative ideas and inspiration to spread his message of spiritual development and upliftment of the values in mankind.

Devendra Mantri
Sangit Kala Mandir, Kolkata

Harish Nayak

A JOURNEY OF FRIENDSHIP.

One morning way back in 1993, I received a call from my brother Ramesh that he would be bringing some guests from India for dinner. I told my wife to start cooking as Ramesh was coming home for dinner. Those days we used to look forward to share some good times with anyone who came to USA from India. That evening when my brother Ramesh came with his guest Shekhar Sen, little did we know that this visit was going to be a long memorable journey of friendship and relationship. A few days later, my brother Ramesh had to go on a conference out of Washington, so he said that he would drop Shekhar at our house for the next few days.

His wit and sense of humour really kept us in stitches, but most of all he got along so well with all of us. Our 9 month old daughter took an instant liking for him as he would show her card tricks and while he taught me Bengali cooking, later our daughter named him 'cooking singer'. Then in 1995 again we had the good fortune of spending more time with him while he traveled in and out of Washington to perform in different states of USA.

We would often go to watch his performances in New Jersey and the neighboring states and all his performances were received with standing ovation.

And on our return late at nights Shekhar would keep us awake with his songs, witty extempore jokes, and by his acting talents to make sure that no one falls asleep while I was driving.

Then in 1997 he brought his parents (who were extraordinarily delightful souls) to the US and combined this leisure trip with “Geet Ramayan” performances. When the 3 maestro's got together, their versatile singing transported us to the actual Ramayana era. His unexceptional and unparalleled dedication to his parents is a phenomenon worth mentioning. Shekhar cut down on his shows for the next couple of years to take care of his ailing parents.

In this age and era it is hard to find such multifaceted talents combined in any one person. God has been extra gratifying to Shekhar in finding a truly devoted wife in Shweta. In 2007 when Shekhar came on a vacation to USA with Shweta and Saurabh, we

spent some great good times with them and last year in 2010 Shekhar, Shweta and Saurabh visited my hometown Udupi and we spent some quality time together.

Shekhar's melodious singing touches not only your hearts, but remains in your soul forever. Whenever we watched his shows, whether in the US or in India, at the end of every show we have left the theater with a feeling of wanting to watch it again. His tremendous art of writing is worth admiring. Not only singing has become so much a part of our life, but he and his family have become part of our family now.

I consider Shekhar as my younger brother, and take this opportunity along with my wife Jyoti and daughter Meghna to wish him a VERY HAPPY 50TH BIRTHDAY. May GOD bless him with lots of good health, wealth and prosperity.

Harish & Jyoti Nayak
(Washington D.C. U.S.A.)
Close Friend

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Dr. Kinnari Bakshi

What can I say about Shekhar Sen, is the question. From the first time I met him, I saw him as the most down to earth person. My encounter was as a coordinator cultural program in 1993. All the other participants were well known singers, dancers. But we had not heard of Shekhar Sen. He was with Anuradha Podwal. Unlike the rest of them Shekhar had both his feet on the ground. He stayed away from all the lime light.

As I got know him more I saw a humble man that wanted to do justice to his talent & wanted to make it available to all the people in India who did not have the access to the city amenities. His unique sense of humor has brought him closer to everyone he meets. When you meet him one would think he is a stand up comedian. And yes that's the talent he has taken to the highest level by creating his one man acts. To me he has been man of principles. Not to be blinded by Bollywood. Even though he could easily be part of it. Behave like an ordinary human being and yet take music & acting to another level. To take care of parents like Shravan Kumar. To honor parents dream & make every effort to carry it forward. Not to have the ego with which all the artists walk with. To take life as a matter of fact. To keep family time every chance he gets. Every time we have been to Mumbai Shekhar has made sure that we are comfortable. His car @ our disposal, his cell phone for our use and food ready whenever we wanted. Shekhar is a talented man is to say the least but he is a warm hearted friend to all, loving husband, caring father, obedient son & much more than what my words can describe, but a man that anyone would like to be around at any given time. Happy 50th to you and may you be around for a long time to do what you do best – put a smile on every face that comes near you.

Dr. Kinnari Bakshi
(Phildelphia, USA)
Family Friend & Art Lover

Dr. Kalind Bakshi

Fame is like stars, bright & shiny but it is the moon that sheds a cool, peaceful light –Shekharji Similarly is unassuming, innocent-giving peace and joy to every life he touches. A true artist, humanitarian & an unwavering love for the motherland & the Hindu culture. He thinks, studies, researches, churns, extracts the essence – but then, he composes & creates -- & he delivers the highest form of art by solo efforts --& the message comes through ! He carries & embodies the great saints with their messages – when the make up is on, one Indeed bows down -- & then ,in the dressing room, Shekharji becomes indeed a loving, smiling ,and a cuddly human who walked his walk, but with the message & lighting many lamps on the way !

When we hosted his parents--- my parents have fond memories of the trio-with Geet Ramayan performance.He even fulfilled my mother's wishes to sing to her his Krishna bhajan ! He is like a brother & a friend who has kept us connected to our motherland Bharat and the ancient culture.

Shekharji, 50 is just the beginning ! We will continue to cheer you for another 50 !

Ek Chand ki tamanna thi,
ki woh sitara bun jaye---
par lakhon chamakaron main
Roshni kahaan ?
Aur sitaron main to doori hoti hai,
chand ka apanapan kahan ?
Un sitaron main kalaa bhi kahaan –
jo chhip jaye usha ke pahale kiran par !
Magar chand wahi
jo Shekhar ki tarah,
abhivandit kare, suraj ke saath,
suprabhat nav-nirmaan ko !

Dr. Kalind Bakshi
(Phildelphia, USA)
Dear Friend & Art Lover

Ketki Parikh

LIFE WORTH CELEBRATING

Although six years of acquaintance is not a long period to make a life long impression on someone, for a person like Shekharji, six days also is more than enough. Knowing Shekharji is an honor and privilege for Tushar and me.

I met Shekharji in 2003. I remember the first time I heard his CD “Kabeer”, I couldn't believe my ears. I was overjoyed as if I had found a jewel. I was very eager to see the performance in my next trip to India. When I saw “Kabeer”, I made up my mind to share the pleasure of this performance with audiences in the USA. Shekharji is a great actor, composer, writer, director, singer, but above all, he is a great person. I feel very fortunate that he has trusted me to promote his plays in the USA. We have done two tours in the past five years, both of which have been incredible, rewarding experiences.

With his simplicity, incredible spirit and great sense of humor, he is able to intrigue all who come in contact with him. His eternal optimism and selfless nature touches everyone's heart around him. Ultimately, I admire the purity of his heart, love for life and concerns for humanity.

I remember one day in Boston when a friend of mine, Chandu Shah, was driving us around in the MIT and Harvard area. All three hours of the drive consisted of jokes from Chandu and Shekharji in their own unique style. The ability to tell jokes and stories were among the many talents of Shekharji. On the occasion of mine and Tushar's 25th anniversary, both Shekharji and Shwetaji recorded a song with a lovely message and sent it to us as a DVD gift, which we will cherish for the rest of our lives. We share some very fond memories with Shekharji and Shwetaji. Every visit from them is a special one.

On the occasion of Shekharji's 5oth birthday, Tushar and I wish him many happy and healthy years ahead.

Ketki Parikh, Chicago
Well-wisher & art promoter

Shweta Sen, Tushar Parikh & Ketki Parikh

शब्द-स्वर सरस-पूरे पचास बरस

Reva Sethi
Bobby Sethi

Shekharda, we are truly fortunate to have been a small part of your 50 Glorious Years!

You came into our lives with your radiance and warmth and now share a special bond which we will always treasure.

Your achievements in these 50 years is for all to see, but it has been quite a revelation as to how you have done so much and our salutations for every stepping stone in your life.

Your multi faceted talents particularly intrigue us, that whatever you do is perfect, like your culinary talent--- the pickles you make, are finger licking! Your paintings and the thought that goes behind each painting has such substance.

On the funnier side we also saw you shrink from humpty dumpty to sleek!

We would like to mention that your visits are always a pleasure, and you leave behind such profound thoughts by narrating interesting anecdotes in your life.

You have significant contribution in our lives and many lives. You have been a giver not only materially but through your humility, loyalty, commitment and support. Having been closely associated with the classical music world and the legends for almost 40 years, we have not come across anyone who would come at almost the middle of the night, hold our hands and say "I AM WITH YOU" and support the Festival with a generous contribution, which you personally made for the success of our efforts, this unforgettable gesture will always be deeply embedded in our thoughts and will remain with us forever.

Your soul stirring performances and your singing which touches the heart is spellbinding. We recall having taken a friend from across the border to see Kabir and he wept, and said this Classic and remarkable show he has never seen before. He carried the music back with him and treasures it with pride.

One finds gems like you only once in a lifetime. God bless you and may the "Saint" in you take you to greater heights.

We will always cherish our relationship with you and Shweta Bhabhi as you are God's gift to us.

'Tu shaheen hai, parvaz hai kam tera,
tere samne aasmaan aur bhi hein"

Deep affection and Regards,

Reva Sethi & Bobby Sethi
Kala Sangam, Mumbai

रेवा सेठी–बॉबी सेठी (कला–संगम) **साथ में श्री ब्रह्मानंदजी** (डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म निर्माण के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता)

Navgopal Roy

शेखर - मेरा साला भी, बेटा भी

मेरी स्वर्गीया पत्नी श्रीमती छबि स्व. डॉ.अरुण कुमार सेन की बड़ी बहन स्व. श्रीमती वीणापाणि सेन गुप्ता की बेटी थी। इस नाते वह सेन मास्साब की और उनके पुत्रों की बहन थीं। स्व. छबि से मेरा विवाह मई 1960 में हुआ। मेरा बेटा चि. देवाशीष 1961 में 17 अक्टूबर को हुआ, और 1961 में ही सेन सा. का दूसरा बेटा चि. शेखर 16 फ़रवरी को। इस तरह पारिवारिक संबंध से शेखर मेरा साला हुआ। कल्याण-शेखर दोनों सालों को मैंने अपने बेटे के पहले गोद में खिलाने का सुख पाया।

सेन/सेनगुप्ता परिवार आरंभ से ही समाज में अत्यंत सम्मानित तथा प्रतिष्ठित, सुशिक्षित, विद्वानों का परिवार रहा है। स्व. आचार्य क्षितिमोहन सेन गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के परमप्रिय शिष्य और सहयोगी थे। उनसे लेकर सेन सा. और शेखर तक अनेक सुविख्यातजन इस परिवार में हुए हैं। मेरा परम सौभाग्य है कि सेन साहब ने मुझे दामाद बनाया।

सेन साहब से मेरा संबंध 1956 में बना। उनकी वाणी और व्यवहार में एक चुम्बकत्व था जिसने मुझे बरबस खींच लिया। उनमें मुझे वह सब कुछ दिखा जो एक दिल से महान आदमी में,एक आदर्श, अनुकरणीय आदमी में होना चाहिए। मैंने उन्हें गुरु और पथदर्शक मान लिया। वे भी मुझ पर अखण्ड विश्वास करते थे। इस तरह से संबंध प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होते गये। पारिवारिक संबंध तो खैर स्व. छबि से मेरे विवाह के बाद औपचारिक रूप से बने, लेकिन उन्होंने मुझे बेटा-शिष्य-मित्र तो इसके बहुत पहले बना लिया था। बाद में 1963 से मैं भी कमलादेवी संगीत म.वि. परिसर रंगमंदिर में, जहाँ वे रहते थे, रहने लगा। कहने को तो हमारे दो परिवार थे, लेकिन लगता हमेशा यही था, मानों परिवार एक हैं, कमरे ही तो अलग हैं। 1976 तक हम साथ रहे, इसके बाद मैं अपने मकान, बैरन बाज़ार में रहने लगा।

चि. शेखर गोरा-गोरा, ख़ूबसूरत नाज़ुक सा शिशु था। उसे गोद में लेता, तो लगता गोद में कोई देवपुत्र है। चेहरे पर ऐसा तेज़, मुस्कान और मासूमियत, कि नज़र लग जावे। माँ (स्व. डॉ. श्रीमती अनीता सेन) से चिपका रहता और उन्हें निहारता रहता। उनका खाना पकाना, उनका अचार वगैरह बनाना, उनका अल्पना-पेंटिंग बनाना, उनका घर का रख-रखाव, उनका गाना और बोला-लिखना, शेखर के बाल-संस्कारों में आता गया और पनपता रहा। आज इन सारी, और अन्य भी कई चीज़ों में जो सिर्फ़ माँ से ही मिल सकती है, वह माहिर है।

अक्सर पिता से बच्चे कम फ्री होते हैं। लेकिन सेन साहब बेहद कठोर अनुशासनप्रिय और अत्यंत व्यस्त रहने के बावजूद दोनों बच्चों को भरपूर प्यार देने का ख़ासा समय निकाल लेते थे। जब गाना सिखाते, तब ज़रा सी ग़लती पर पिटाई कर देते। झूठ उन्हें असह्य था। सच बोल देने पर नाराज़ हो जाने के बाद, तुरन्त ख़ुश भी हो जाते। शेखर नटखट-शरारती तो बचपन में था लेकिन पिता ने ताड़ना में भरा जो उपदेश और प्यार दिया उसने उस उदात्त जीवन पथ को पढ़ा, जिस पर चलकर आज उसने स्वयं को स्थापित किया है।

बचपन में शेखर का मन पढ़ाई में नहीं दिखता था। लेकिन किसी क्लास में फेल नहीं हुआ। माँ-बाबा के पास की पुस्तकें, साहित्यिक पुस्तकें, पढ़ने का चाव था उसे। बचपन से ही वह बहुत अच्छा गायक और अभिनेता लगता था। महज 4 साल की उम्र में उसने 'शिशु नाट्य संघ' के द्वारा प्रस्तुत नाटकां एवं 'माटीर घर' नाटक (निर्देशक स्व. धीरेन्द्र नाथ दत्त और पं. सत्यविश्वास, लेखक-विधायक भट्टाचार्य) में ऐसा भव्य अभिनय किया कि लोग चकित रह गये थे। एक बार वह दुर्गा बना था। कई नाटक खेले थे उसने। जादू के एक शो में भी उसने भाग लिया था। इधर, माँ से लगातार, पिता

से कभी-कभार, और कमलादेवी संगीत महाविद्यालय में, संगीत शिक्षा का क्रम चल रहा था। किशोरावस्था में ही उसने खुद को अच्छा गायक साबित कर दिया।

धुन चढ़ी कि कुछ नया किया जाए, कोई धंधा किया जावे। पड़ौस के दर्ज़ी को देखकर तय किया, कि बम्बई से कपड़ा खरीद कर लायें, और रेडीमेड गारमेन्ट्स बनाकर बेचें। 14 बरस की उम्र में बम्बई भागा, लेकिन उधर बम्बई से निकले खोजी दल के हाथों पकड़ा गया। सेन साहब समझ गये कि बच्चा ज़बरदस्त महत्वाकांक्षी है, उसे बाँधकर रखना मुश्किल होगा। उन्होंने प्यार से समझाया कि बस ग्रेजुएट हो जाओ, फिर जो मन हो करना।

फिर शेखर का मन संगीत में ही रमता गया। ख़ूब गाना, नियमित रियाज़, ख़ूब संगीत-रचना करना। उसका कलाकार-रचनाकार परिपक्व होता गया। अन्ततः - ये दोनों भाई संगीत निर्देशन के क्षेत्र में कार्य करने मुम्बई प्रस्थित हुए। कल्याण सेन (शेखर के बड़े भाई) का 1982 में विवाह हुआ। सेन साहब कहते थे कि तुम (शेखर) कलाकार हो, लड़की पसंद करके शादी कर लो - पर आखिर में श्रीमती सेन ने भोपाल में लड़की देखी और 21 जुलाई 1987 को विवाह सम्पन्न हुआ। 5 जनवरी 1995 को सौरभ का जन्म हुआ।

मुम्बई में दोनों ने संगीत का काम किया और फिर अलग-अलग अपना काम शुरु किया, उस पर मैं यहाँ विस्तार भय से नहीं कहना चाहता। वहाँ जो तारीफ़ और सफलता मिलती, तुरन्त फ़ोन पर मुझे बताते थे, और मैं आनन्द से खिल उठता। उनके कुछेक कार्यक्रम मैंने मुम्बई जाकर भी सुने-देखे हैं। मैंने देखा है कि लोग शेखर को कितना चाहते हैं।

शेखर ने अपनी जन्मजात संगीत और नाट्य प्रतिभा से जो चार एकपात्रीय संगीत नाटक रचे हैं, वे देश ही नहीं, देशान्तरों में भी प्रसिद्ध हुए हैं। इन्हें लिखा भी उसने ही है। ये नाटक उसकी उच्च साहित्यिक प्रतिभा तथा गहन अध्ययन के प्रमाण है।

डॉ. श्रीमती अनीता सेन के निधन के पश्चात् 2003 में भातखण्डे ललित कला शिक्षा समिति के सदस्यों ने एकमतेन शेखर से आग्रह किया, कि वे अध्यक्ष पद स्वीकार करें। इस आग्रह को आदेश मानकर उन्होंने अपनी तमाम कलाकारीय व्यवस्तताओं के बावजूद स्वीकार किया। उम्र में हम सारे सदस्यों से

छोटा होते हुए भी अपनी सूझबूझ और पिता द्वारा स्थापित संस्थाओं के संरक्षण और विकास की दृढ़ भावना से, वह जैसा दायित्व निर्वहन कर रहा है, वह हमें चमत्कृत ही करता है। आसन्न विपत्तियों और समस्याओं के दौरान भी उसका धैर्य और स्थैर्य सभी उलझनों में से रास्ता निकाल लेता है। सांगीतिक गतिविधियों की स्तरीयता तथा तादाद उसके कार्यकाल में बहुत बढ़ी है। शैक्षणिक पार्श्व और भवनों के विकास में भी उसने गहरी रूचि दिखायी है। उनकी कार्यशैली और क्षमता विलक्षण है।

वह बहुत उदारमना और सेवाभावी है। हर कलाकार और ज़रूरतमंद की भरपूर मदद करता है। दिल से भावुक और सच्चा शेखर अपने आलोचकों - विरोधियों से भी न कटु बोलता है, न उत्तेजित होता है। मित्रों और हितैषियों का बहुत बड़ा दायरा है उसका। बुज़ुर्गों के प्रति वह अगाध सम्मान रखता है। छोटा सा परिवार है शेखर का - पत्नी सौ. श्वेता और बेटा चि. सौरभ। श्वेता जैसी समर्पित पत्नी शेखर जैसे बड़भागी को ही मिलती है।

शेखर 51वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। मेरा अनन्त आशीर्वाद उसे। शेखर बेटा ! तुम्हारा हर पल, हर दिन ख़ुशियों, सफलताओं, तरक्कियों भरा हो। जुग-जुग जीयो !! माँ-पिता-परिवार-स्वजनों के गौरवपात्र बनो !!

नवगोपाल रॉय
शेखर के जीजाजी और रायपुर संस्थाओं के सचिव

Dr. V. Balarama Murty

Dear Shekhar:

It gives me a great pleasure to realize the great impact you made in the cultural scene of India and Indians all over in a short time and endeared yourself to one and all. I still remember your first visit to our Temple and how the audience fell in love with your songs on Kabir and Krishna. Some of them remind me even today at the Temple.

We both wish you many many happy returns for the 50th birth day and pray God for his blessings to give you long life, good health and happiness to carry on your mission for a long long time. All the very best...

Dr. V. Balarama Murty (Mama)
Lakshmi Vempaty (Mami)
Detroit USA

सुरेश वाडकर जी के साथ

इब्राहीम अश्क और साधना सरगम

अन्नू कपूर जी के साथ

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा वी. शांताराम ललित कला सम्मान

Dr. D.K. Ghosh

SEKHAR AS I HAVE SEEN THROUGH THE YEARS

In my life, three persons still occupy with all possible influence of love, affection and extra-ordinary individual qualities, albeit each one in different areas of professional expertise, of being remembered long after they have left for their heavenly abode. One of them is Dr. Arun Sen whom I first met in 1967, in Raipur, soon after I had joined Khairagarh University. I was a bachelor that time and availed of the first week-end to visit Raipur where I had two of my old friends one of whom was Mr. KK Shrivastava, a widely known personality, who is also no more with us. That time he was in the Raipur University now Ravishankar University. KK (as he was popularly known), in the course of general discussion, mentioned that since I am in Khairagarh, I should take the earliest opportunity of meeting Dr. Arun Sen. Apparently, both had good relationship and therefore, I was given a prior brief about Dr. Sen which was of course good. So, I left to see Dr. Arun Sen

That was a late afternoon when I knocked at the door of Dr. Sen, Principal, Kamala Devi Sangit Mahavidyalaya, at his official residence in the College Campus at Gandhi Chowk. Charmed with his usual open smile and natural warmth of heart, I felt being at home in no time. And then, how could one miss meeting the charming Dr. Mrs Anita Sen, a versatile individual with lots of qualities of art, music and management. I recall that when I met her, she was busy learning Piano from an Australian visitor. Over the years, they became more personal realities of an elder brother – Senda and Boudi-(Bhabi) than official relations. My wife and my children always considered them as parts of our family.

As I started talking to Dr. Sen, came in a naughty -look like little boy whom Dr. Sen introduced as his younger of the two sons. And that was Sekhar. He had just returned from school with a bag at his back looking at me and trying to perhaps dissect my personality ie what sort of man I could be. Incidentally, that was also the month of February of 1967, which means he was that time only Seven years old. So, I have known Sekhar for 43 years.

Rather sooner than normal, Sen family became part of my family for thereafter whenever I visited Raipur till I left Khairagarh University in 1985, to join IIT Bombay, I always stayed with them enjoying a full family environment, away from my family of mother, sister and brothers in Jabalpur where I was in the University before joining Khairagarh. For obvious reasons, I had opportunities of seeing, observing and interacting with Sekhar from time to time ever since he was seven. And I have watched him growing.

True to the old adage that morning shows the day, any one who had observed Sekhar in his very early years had at least felt that the boy

would some day steer through the obstacles of life and would reach some place of prominence. That indeed he has by now through his one after creations which have won admiration of all alike-from a large population. Conceiving, writing, composing, singing and acting all by one single individual is certainly rare. Rarer still is the quality of duty that he and his wife Sweta happily performed in looking after his ailing parents keeping and making them comfortable with all possible comforts till they breathed their last.

Another quality that every individual need to have in the context of harsh realities of life is the endurance of facing and meeting challenges of odds of life particularly when both parents needed support. In contrast, I cannot but to remember stories like one seen in the 'Bagwan' movie.

Turning to the professional talents of Sekhar combining lots of creative qualities which perhaps for the first time any one has done, sustained and succeeded nationally and internationally. Besides,such efforts required lots of courage to go public.

Coming back to some incidents during his boyhood, I recall two incidents. One was when he was in standard sixth. One day,entering home after his school, Sekhar asked his mother: What are the requisite attributes that one should have to be a good Chief Minister? Not knowing what and how to answer to such a vexed and totally unexpected question, his mother was a little taken aback asking him why he was asking such a question to which he said, in the Gandhi Maidan which was right in front of the College building, there was a public meeting and one politician was casting aspersions on the then CM saying that the incumbent was not the right man for he did not possess the right attributes. What apparently prompted Sekhar to ask such a question was the said politician never mentioned the attributes that the current CM should have possessed.

The other incident was of a different kind. Observing his general intelligence and dynamism, I had suggested that since Sekhar had the potential of becoming a good IAS officer, he should target that and get mentally ready right from now. Both the parents wanted me to talk to him about that. When I talked to him, his immediate answer was that he was not destined to serve. He would himself like to be a Master employing people. I still remember the strength of his language that he had used to say these words, and I appreciated that. And therefore, it was interesting for me to watch Sekhar growing in life struggling to reach a good height in life in a very distinctive line.

Now that he is Fifty, I am sure with more experience and knowledge, he will contribute yet many more creations for the society and that would be good to watch and admire.

All the Best to Sekhar, Sweta and their only child-sweet Saurav.

Dr. D.K. Ghosh
Senior Educationist & Uncle

K uldeep Singh

उसे अल्लाह ने एक ख़ास ख़ूबी से नवाज़ा है
जिसे छूता है, उन लफ़्ज़ों से ख़ूशबू आने लगती है

शेखर सेन हमारी विरासत के कल्चरल एम्बेसेडर हो सकते हैं। मेरी बात में अतिरेक लग सकता है लेकिन जब आप एक शख़्स को प्रबंध कौशल, अभिनय, कविता, शायरी, संगीत जैसी बहुतेरी विधाओं में पूरी हुनरमंदी से संलग्न पाते हैं तो अपने आप ऐसी बात कहने को जी चाहता है।

जहाँ तक मौसिक़ी का ताल्लुक है शेखर भाई को यह प्रतिभा घुट्टी में मिली है। वे अपने मरहूम माता-पिता की ऐसी करिश्माई संतान हैं जिसने अपनी कला से पूरी दुनिया में धूम मचा रखी है। जैसे कि मैंने शेखर भाई की शान में ऊपर एक शेर कहा; यह सच है कि वे जिस क़िरदार या जिस धुन को छू लेते हैं वह सोने सी खरी हो जाती है।

शेखर सेन का सक्रिय होना इस बात का पता देता है कि हमारी तहज़ीब कितनी महान है। उनकी पचासवीं सालगिरह पर में अपनी दिली दुआएँ देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि शब्द, स्वर और लय का यह चितेरा जुग-जुग जीये और उसके कंठ में मौजूद सरस्वती की दमक हमेशा बनी रहे।

कुलदीप सिंह
वरिष्ठ संगीतकार

Ravindra Jain

शेखर अर्थात चन्द्र, शिवजी के ललाट पर स्थान पाने के कारण वन्दनीय ही वह अपने नामानुरूप ज्योत्सना और शीतलता प्रदान करने वाला है शेखर मुझे अत्यंत प्रिय है, ये मेरे परमप्रिय अरुण कुमार सेनजी व अनीता भाभी की गुणवान संतान है, मुझे इसकी प्रतिभा पर गर्व है जैसा आयु पूर्वार्ध व्यतीत कर यश अर्जित किया, उत्तरार्ध उससे कहीं सुखद, फलप्रद, मंगलमय हो, यही मेरी आतंरिक शुभकानाएं हैं

रवीन्द्र जैन (काकू)
प्रख्यात संगीत निर्देशक

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री आई.के. गुजराल के साथ शेखर सेन

शेखर सेन, जैकी श्रॉफ एवं पद्मविभूषण पं. बिरजू महाराज (छाया : रेणु शर्मा)

Dr. K. Janaswami

मेरा भांजा शेखर

पहली झलक--- गुड़मुडे राम सिमटे से बैठे थे अपनी माँ की गोद में। अरे .. ये तो मास्साब (जीजाजी) की झलक लिए है।

बस जल्दी ही बन गए उछल कूद के साथी और मेरे बेस्ट सहयोगी... क्रिकेट में फील्डिंग करने के लिए।

क्लिनिक से थक कर लगभग रोज़ इनके घर एक या दो बार आता था दोनों भाइयों के साथ खेलने। मै भी फ्रेश हो जाता था और शेखर लोगो को भी मस्ती का मौक़ा मिल जाता।

चुलबुल शेखर एक बार छत पर बैठ एक कुली के साथ बीड़ी पी रहे थे। मैं चिल्लाया जोर से 'अबे उतर' पकड़कर स्नेहा अक्का (डॉ. अनीता सेन) के पास लाया। वे दु:खी हुईं पर ज्यादा कुछ कहा नहीं। पर उनकी दृष्टि ही काफी थी शेखर को सम्हलने के लिए।

पढ़ाई में कम और धींगामस्ती में ध्यान ज़्यादा। हमेशा धूल से लदे दर्शन होते, इनके पैरों को अपनी छाया का पता नहीं था। ग्यारहवीं में शायद परीक्षा के ठीक पहले एक दोस्त के साथ मुंबई भागे। बग़ैर किसी को बताये। इनके माँ-बाबा उस समय मुंबई में गीत रामायण के कार्यक्रम के लिए गए थे।

क्लिनिक बंद करके ढूंढता रहा। यहाँ से थोड़ा, वहां से थोड़ा सूत्र जमा करते काफी रात हो गई। फ़ोन से मास्साब और स्नेहा अक्का को ख़बर की। तब कल्याण स्टेशन पर पकड़े गए।

एक बार यह नोटिस किया गया कि इसका फ्लैटफुट है तो बूट पे बूट, पैड लगा लगा कर परेशान, पर इसे सूट नहीं किया। मस्त मौला थे।

कॉलेज में मेहमानों की तरह ही जाते थे। पढ़ाई-लिखाई की चर्चा इसकी लच्छेदार बातों में कहीं गुम हो जाती थी। लगभग औसत विद्यार्थी था पर परिपक्व, कुशाग्र।

ये आज भी चुलबुल हैं इसीलिए सर्वप्रिय हैं परिवार में।

अब छोटे मियां बड़े मियां हो गए, शादी हुई, ज़िम्मेदार बने।

मुंबई इनके पैर की लकीरों में लिखा था तो यहीं के हो गए। अब ये पचास के हो गए हैं -मेरी आत्मीय शुभकामनाएं।

मैं आज भी देखता हूँ उसे जब, उसके सुखद भविष्य की ही कल्पना करता हूँ 'यशस्वी भव:'।

डॉ. कृष्णमूर्ति जनस्वामी
शेखर के मामाजी

शेखर सेन - परिचय

▷ पिता : डॉ. अरुण कुमार सेन

▷ माँ : डॉ. श्रीमती अनीता सेन

▷ बड़े भाई : कल्याण सेन

▷ जन्म : 16 फ़रवरी 1961

▷ विवाह : 21 जुलाई 1987 श्वेता बसु से, भोपाल में

▷ पुत्र : 5 जनवरी 1995 सौरभ सेन

▷ प्रथम मंच प्रस्तुति : 3 वर्ष की आयु में

▷ संगीत शिक्षा : 3 वर्ष की आयु से ही

▷ गायन : श्रीमती कमल केलकर, श्रीमती छबि रॉय और घर में माता–पिता से

▷ सितार : श्याम द्विवेदी (चार वर्ष)

▷ कथक : पं. कार्तिकराम जी (रायगढ़) आशिर्वादमजी व बालकृष्ण सर (4 वर्ष)

▷ वायलिन : तुलसीराम देवांगन, दादाजी देशपांडे (5 वर्ष)

▷ प्राथमिक शिक्षा : छोटापारा प्राइमरी स्कूल
छठवीं से ग्यारहवीं सेंट पॉल हायर सेकंडरी स्कूल
बी कॉम : दुर्गा महाविद्यालय
संगीतविद : कमला देवी संगीत महाविद्यालय
बी म्युज़ : कमला देवी संगीत महाविद्यालय

▷ 1979 मुंबई आगमन : शेखर कल्याण के नाम से संगीत निर्देशन की शुरूआत (बड़े भाई कल्याण के साथ)

▷ 1984, 1 सितंबर : गायन का प्रथम कार्यक्रम 'दुष्यंत ने कहा था' दुष्यंत की ग़ज़लें गाईं (भाईदास सभागृह, मुंबई) संचालन कमलेश्वरजी ने किया था।

▷ संकल्प संस्था का गठन
(अध्यक्ष : पं. नरेन्द्र शर्मा, उपाध्यक्ष : श्री विनोद तिवारी (माधुरी)
सचिव : शेखर सेन । हिंदी के शोधपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन।

▷ 1985 हिंदी दिवस 'मध्ययुगीन काव्य' (संचालन : पं. विनोद शर्मा)

▷ 1985 में एच.एम.वी. ने ग़ज़ल गाने के लिए पाँच वर्षों के लिए अनुबंधित किया, पर पहला एल्बम भजनों का रिलीज़ हुआ।

▷ 1986 हिंदी दिवस 'पाकिस्तान का हिंदी काव्य' (संचालन : पुष्पा भारती)

▷ 1987 हिंदी दिवस 'मीरा से महादेवी तक'

▷ 1988 हिंदी दिवस 'कहत कबीर सुनो भाई साधो'

▷ 1989 हिंदी दिवस 'मेरी वाणी गैरिक वसना' डॉ. धर्मवीर भारती की रचनाओं का गायन

▷ 'समर्पण', उसके बाद गायन और संगीतबद्ध अब तक क़रीब ग़ैर फ़िल्मी 200 सी.डी. व कैसेट्स

▷ 1997 एक पात्रीय संगीतमय नाटक गोस्वामी तुलसीदास का लेखन

▷ 1999 में 'तुलसी' प्रथम मंचन भाईदास सभागृह मुंबई में

▷ 1998 में कबीर की पहली प्रस्तुति रंग शारदा सभागृह मुंबई

▷ 2004 में विवेकानंद की पहली प्रस्तुति मुंबई

▷ मई 2005 – लोक सभा में कबीर मंचन

▷ 2010 में साहब की प्रथम प्रस्तुति – मुंबई

▷ 2 दिसंबर 2010 को 600वीं नाट्य प्रस्तुति

▷ 22 जनवरी 2011 को कबीर की 300वीं प्रस्तुति

आत्मीयता के वासंती रंग – शेखर 50 प्रसंग

कहते हैं मुम्बई में किसी को फ़ुरसत नही। सब अपने में मसरूफ़ हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि आपने इस शहर को जो दिया हो वह लौटाता ज़रूर है। 16 फ़रवरी 2011 की शाम एक ऐसे ही शख़्स की आत्मीय कमाई की पावती दे रही थी। बसंत की बेला में इस्कॉन सभागार में शाम सात बजे ही कलाकारों, लिखने-पढ़ने वालों, संगीतकारों, पत्रकारों, फ़िल्मी हस्तियों और कलानुरागियों का जमावड़ा शुरु हो गया था।

मौक़ा भी था और दस्तूर भी। सबके प्रिय शेखर सेन आज पूरे पचास के हो रहे हैं। इस्कॉन सभागार उस परिसर में स्थित है जहाँ कलाओं के आराध्य भगवान श्रीकृष्ण विराजित हैं। परिसर की पवित्रता मानो शेखर की कला-साधना का अभिषेक करने को बेसब्र थी। सभागार के प्रवेश द्वार पर मथुरा के पेड़े की प्रसादी और शेखर-श्वेता सेन की सुमधुर मेज़बानी का भाव भी एक अप्रतिम मिठास घोल रहा था... वे सभी का अभिवादन कर आशीष ले रहे थे।

साढ़े सात बजे के आसपास शेखर-सखा और रंगकर्मी अतुल तिवारी ने माइक्रोफ़ोन संभाला और आयोजन की संक्षिप्त भाव-भूमि रखकर बुलाया संजय पटेल को। संजय ने शेखर के जीवन पर एकाग्र उस भाव संचयन के पन्नों की सैर एक स्लाइड-शो के रूप में करवाई। इसके बाद आग्रह किया नृत्याचार्य पद्मविभूषण पं. बिरजू महाराज से कि वे 'शेखर-50' की प्रथम प्रति को अपने अनमोल आशीष से नवाज़ें। करतल ध्वनि और साक्षात नटराज का स्पर्श कर यह प्रकाशन अनमोल हो गया।

इसके पूर्व रायपुर समिति के पं गुणवंत व्यास एवं नवगोपाल रॉय ने शेखर सेन का बहुमान कर एक अभिनंदन पत्र और शॉल-श्रीफ़ल भेंट किया। इसी दौरान शेखर सेन ने बहुत रोचक अंदाज़ में अपने बचपन से लेकर वें जन्मदिन तक की जीवन यात्रा की छवियों का प्रस्तुतिकरण किया।

सभी नेगचार और शगुन के उपरांत कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण थी पं. बिरजू महाराज जी की कथक प्रस्तुति। आपके साथ आपकी सुशिष्या सुश्री शाश्वती सेन भी दिल्ली से पधारीं थी। शास्त्र की मर्यादा, रंजकता, भावाभिव्यक्ति और सुरीलेपन से सुरभित महाराजजी और शाश्वस्तीजी की इस प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया। दो घंटे से भी अधिक समय तक नृत्यप्रेमी सभागार में डटे रहे जिनमें अभिनेत्री माधुरी दीक्षित और अभिनेता जैकी श्रॉफ़ भी सम्मिलित थे। नृत्य प्रस्तुति के उपरांत शिल्पकार की टीम ने शेखर भाई को सभी आगांतुकों के हस्ताक्षरों का कोलाज भेंट किया।

कार्यक्रम में नामचीन कलावंतों की बड़ी संख्या ने इस शाम को अविस्मरणीय बना दिया। कुछ एक नाम यहाँ उल्लेख करना प्रासंगिक होगा; संगीत क्षेत्र से अश्विनी भिड़े देशपांडे, देवकी पंडित, कुलदीप सिंह, जसविंदर सिंह, सीमा सहगल, पं ध्रुबो घोष, पं नयन घोष, पॉल ग्रांट, पं अजय पोहनकर, अंजलि पोहनकर, पं अरविन्द पारीख, पं. रोनू मुजुमदार, रूपकुमार-सुनाली राठौड़, राजेंद्र मेहता, अभिजीत घोषाल, जसवंत सिंह, और साईंराम अय्यर। अभिनय जगत से दिनेश ठाकुर, फ़िरोज़ ख़ान, राजेंद्र गुप्ता, अशोक बाँठिया, गूफी पेंटल, पवन मल्होत्रा। साहित्य की दुनिया से पुष्पा भारती, विश्वनाथ सचदेव, नेहा शरद, मंजीत सिंह कोहली, यज्ञ शर्मा, अतुल तिवारी, कैलाश सेंगर, आसकरण अटल, माया गोविन्द, बॉबी सेठी। चित्रकार समीर मंडल, आत्मानंद गोलत्कर, अमेरिका से डॉ. सतीश व्यास दम्पत्ति, तुषार पारीख और अभिन्न मित्र अशोक बिंदल, सुधीर सेलट, आलोक पाठक, वीरेन्द्र जैन।

भाग रही मुम्बई की यह शाम एक प्रेमल सखा, कलाकर्मी और मृदुल मनुष्य के प्रति भावभीनी स्नेहांजली थी जो इस बात की भी तसदीक कर रही थी कि यदि जज़्बे, इरादे, परिश्रम और आत्मबल का आसरा लेकर कोई ईमानदार करे कोशिश तो रायपुर जैसे शहर से महानगर मुम्बई में आकर अपनी क़ामयाबी का आसमान तलाश सकता है।

शेखर 50

16 फरवरी 2011 - मुंबई

शेखर 50 को कथक के महामहोदय पं. बिरजू महाराज का शुभाशीष

भातखाण्डे ललित कला शिक्षा समिति, रायपुर द्वारा सम्मान